इस्लाम क्या है?

लेखक :
मुहम्मद मंज़ूर नोमानी

इस्लाम क्या है ?

लेखक :

मुहम्मद मंज़ूर नोमानी

अनुवादक :

सय्यद अब्दुर्रब सूफ़ी, एम० ए०

प्रकाशक :

मजलिस तहक़ीक़ात व नशरियाते इस्लाम
लखनऊ

(Academy of Islamic Research & Publications
Nadwatul Ulama, Lucknow)

 मूल्य

द्वितीय संस्करण २५००
अगस्त १९६४ ई०

रबी उस्सानी १३८४ हिजरी

इस पुस्तक

इस्लाम क्या है ?

का

संक्षिप्त परिचय

लेखक :—मुहम्मद मंजूर नोमानी

इस्लाम का वास्तविक परिचय और उसकी शिक्षा का ज्ञान मुसलमानों को कराने और उनमें विश्वास का बल और धार्मिक जीवन उत्पन्न करने के लिये यह पुस्तक विशेष धुन एवं ध्यान से लिखी गई है। इसमें बीस पाठ हैं। जिनमें से प्रत्येक पाठ में किसी महत्वपूर्ण अंग का विस्तार और व्याख्या क़ुर्आन और हदीस से की गई है। प्रत्येक पाठ अपने विषय पर एक सुन्दर लेख और प्रभाव-पूर्ण भाषण है।

आशा है कि इनशाअल्लाह (ख़ुदा ने चाहा तो) आँखों वाले अनुभव करेंगे कि इस समय पर इस पुस्तक का संग्रह और प्रकाशन समय की एक महत्त्वपूर्ण मांग की पूर्ति है।

अनुवादक

सय्यद अब्दुर्रब सूफ़ी, एम. ए.

विषय सूची

हिन्दी संस्करण की भूमिका

भाषान्तरकार की ओर से

"इस्लाम क्या है ?" जिसका यह हिन्दी प्रकाशन आपके हाथ में है; हिन्दुस्तान के नामी विद्वान् और प्रसिद्ध इस्लामी मासिक पत्रिका "अल फ़ुर्क़ान" लखनऊ के सम्पादक हज़रत मौलाना मुहम्मद मन्ज़ूर नोमानी की रचना है। जिसको अब से आठ वर्ष पूर्व सन् १९४९ ई० में उन्होंने उर्दू भाषा में लिखा था। अल्लाह तआला ने अपनी दया से उसको विशेष सत्कारपूर्वक स्वीकृति प्रदान की और मुसलमानों के धार्मिक चेतना रखने वाले क्षेत्र ने इसको बहुत लाभदायक पुस्तक समझकर इसका ऐसा स्वागत किया जो हमारे इस युग में धार्मिक पुस्तकों को बहुत कम प्राप्त होता है। पिछले आठ वर्षों में इसके लगभग बीस प्रकाशन निकल चुके हैं।

देश की अन्य भाषाओं में से सर्वप्रथम इसका भाषान्तर गुजराती भाषा में हुआ। खुदा की दया से वह भी बहुत ज़ियादा स्वीकार किया गया और उसके भी अनेक संस्करण निकल चुके हैं।

अंग्रेजी और बंगाली अनुवाद के लिये भी लेखक से आज्ञा मांगी गई है और लेखक ने आज्ञा प्रदान कर दी है। खुदा करे अंग्रेजी और बंगाली प्रकाशन भी शीघ्र ही तैयार हो जाय।

सबसे अधिक आवश्यकता इसके हिन्दी प्रकाशन की थी क्योंकि राष्ट्र भाषा हिन्दी के मान्य हो जाने के कारण हमारे देश

में सबसे अधिक बड़ा क्षेत्र इसी का होगा और कुछ समय बीत जाने पर शिक्षित मुसलमानों में भी बहुत बड़ी संख्या ऐसों ही की होगी जो उर्दू से अधिक हिन्दी के जानने वाले होंगे। इसके अतिरिक्त कुछ उदार हृदय रखने वाले और खुदा के प्रेमी हिन्दुओं ने भी इस पुस्तक को देखकर इसके हिन्दी प्रकाशन की केवल इच्छा ही नहीं प्रकट की वरन् इसके लिये आग्रह भी किया। लेखक महोदय जो कि मेरे आदरणीय मित्र है इसके हिन्दी अनुवाद के लिये मुझसे भी कहा। मैं हिन्दी का कोई लेखक नहीं हूं और न मैंने इससे पहले किसी पुस्तक का हिन्दी अनुवाद ही किया है परन्तु इसको एक आवश्यक और पुण्य का कार्य समझ कर और लेखनी से इस्लाम की सेवा करने वाले भाग्यवान भक्तों में सम्मिलित होने के यश की लालसा में मैंने अल्लाह का शुभ नाम लेकर इसका बेड़ा उठा लिया और अल्लाह ही ने यह कार्य मुझसे ले भी लिया। इस कार्य में जो गुण और सौन्दर्य दिखाई पड़े वह केवल अल्लाह तआला की दया है और जो त्रुटियां और अशुद्धियां हैं वह निःसन्देह मेरे ही दोष हैं। पढ़ने वाले महापुरुष और देवियाँ मुझे क्षमा करें।

मैंने इस पुस्तक में इस सिद्धान्त का पालन किया है कि जहाँ जहाँ पवित्र क़ुरआन की कोई आयत (वाक्य) अथवा कोई मंत्र लिखा गया है तो उसको पहिले अरबी लिखावट में लिखा है फिर उसी को हिन्दी लिपि में भी इतने ध्यान के साथ लिखा है कि जो कुछ लिखा है यदि उसको ध्यानपूर्वक ठीक ठीक पढ़ा जाय तो हिन्दी लिपि में पढ़ने वाला भी अरबी भाषा की आयत अथवा मंत्र को ठीक ठीक पढ़ लेगा। इतना अन्तर अवश्य रहेगा कि अरबी में जो अक्षर समान स्वर वाले हैं जैसे सीन, स्वाद, मे और

ज़ाल, ज़े, ज़ो ज़्वाद और ते, तो और अलिफ़, हमज़ह, ऐन और छोटी हे, बड़ी हे आदि के उच्चारण में जो पारस्परिक अन्तर है वह प्रकट न हो सकेगा क्योंकि हिन्दी लिपि में इस अन्तर को प्रकट करने की सम्भावना नहीं है।

इस अनुवाद के कार्य में मेरे सामने "इस्लाम क्या है?" का वह नवीनतम संस्करण रहा है जो अनेक परिवर्तन और परिवर्धन के पश्चात् इसी वर्ष फ़रवरी में प्रकाशित हुआ है। अल्लाह तआला मेरी इस तुच्छ सेवा को अपनी दया से स्वीकार करें और मूल पुस्तक के समान इस हिन्दी अनुवाद को भी अपने बन्दों के पथ प्रदर्शन और सुधार का साधन बनायें। आमीन

इतना निवेदन पाठकों की सेवा में और भी है कि इस पुस्तक के छपते समय इसका प्रूफ़ मेरे द्वारा शुद्ध कराते रहने का प्रबन्ध नहीं किया जा सका अतः इसका भय अवश्य है कि छपाई की त्रुटियां जहाँ तहाँ रह गई हों। जिसके लिये अन्त में एक ऐसी सूची भी बढ़ा दी जायगी जिससे यह पता लग सके कि छपाई की कौन सी त्रुटि किस पृष्ठ पर रह गई है और उसका शुद्ध रूप क्या है। आदरणीय पाठक महोदय उस सूची की सहायता से शुद्ध पाठ सरलतापूर्वक कर सकेंगे।

विनीत अनुवादक

सय्यद अब्दुर्रब सूफ़ी, एम० ए०
सहायक अध्यापक राजकीय शिक्षा विद्यालय
उन्नाव यू० पी०
१६। अक्तूबर १६५७

प्राक्कथन

अल्लाह और रसूल के भक्तों और धर्म के प्रेमियों से लेखक का विनीत निवेदन

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम ।
आरम्भ अल्लाह के नाम से जो बड़ा दयामय, दयालु और अत्यन्त कृपाशील है ।

मान लिया जाय कि यदि अल्लाह तआला थोड़ी देर के लिये हमारे इस संसार में रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फिर से भेज दें और आप मुसलमान कहलाने वाली वर्तमान उम्मत[1] का जीवन और उसके आचार व्यवहार को देखें तो आपके हृदय पर क्या बीतेगी ? और अल्लाह के जिन बन्दों को अब भी आप के लाए हुए धर्म से कुछ लगाव है और जिनके हृदय धर्म की चिन्ता और उसके दुःख दर्द से खाली नहीं हो गए हैं उनको आपका संदेश और आदेश क्या होगा ? इस तुच्छ सेवक को इसमें तनिक भी संदेह नहीं है कि मुसलमान कहलाने वाली उम्मत की अधिकांश संख्या के वर्तमान इस्लाम विरुद्ध

१ अनुयायी समुदाय

जीवन और असीम लापरवाही और पाप ग्रस्त जीवन को देखकर आपको उससे भी अधिक आत्मिक तथा हार्दिक दुःख होगा जितना ताइफ़[1] के दुष्ट और उपद्रवी काफ़िरों के पत्थरों और उहद के अत्याचारी आर क्रूर मुशरिकों के रक्तपूर्ण आक्रमणों से हुआ था। धर्म के साथ निष्कपटता, निःस्वार्थता, निस्वृहता और शुद्धता का सम्बन्ध और उसकी चिन्ता और उसका दुःख रखने वाले मुसलमानों को आपका संदेश यहा होगा कि मेरी बिगड़ी हुई उम्मत के धार्मिक सुधार के लिये और इसमें विश्वास का बल तथा इसलामी जीवन उत्पन्न करने के लिये जो कुछ तुम इस समय कर सकते हो उसमें कमी न करो।

इस तुच्छ सेवक की इस बात को यदि आप का हृदय स्वीकार करता है तो इसी समय निर्णय कर लिजिये और अपने हृदय में प्रतिज्ञा कर लीजिये कि अबसे आप इस कार्य को अपने जीवन का अंग बना लेंगे।

यह निर्बल प्राणी अपने हृदय के पूर्ण विश्वास के साथ कहता है कि इस समय अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने और रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पवित्र आत्मा को प्रफुल्ल तथा संतुष्ट करने और आपके आशीर्वाद लेने का यह विशेष साधन है।

अल्लाह तआला की सहायता से इस समय भारत में भी और पाकिस्तान में भी (वरन् अब मिश्र, हिजाज़ आदि देशों में भी) मुसलमानों में विश्वास का बल और धार्मिक जीवन उत्पन्न करने

१. मक्के के निकट एक नगर वहा के लोगों ने आपको पत्थर मारे और निकाल दिया

का यह प्रयत्न एक विस्तीर्ण धर्म प्रसारण और आवाहन के रूप में "तबलीग" के नाम से प्रचलित है। आप जहाँ रहते बसते हों वहीं इस काम के करने वाले अल्लाह के दूसरे सच्चे भक्तों के साथ मिल कर इस धार्मिक प्रयत्न तथा प्रयास में अपनी दशा और परिस्थति के अनुसार भाग लें और इसके अतिरिक्त जितना कुछ इस सम्बन्ध में व्यक्तिगत रूप से कर सकते हों उसमें भी कमी न करें।

यह छोटी सी पुस्तक जो इस समय आपके हाथों में है

यह भी इसी धर्म सुधारक प्रयत्न के सम्बन्ध की एक कड़ी है। यह विशेष कर इसलिये लिखी गई है कि थोड़ा लिखे पढ़े पुरुष तथा स्त्रियां भी इसको स्वयं पढ़कर और दूसरों से पढ़वा कर और मस्जिदों और जनसमूहों में इसके लेख मुसलमान जनता को सुना कर अपने में और दूसरों में विश्वास-बल और धार्मिक जीवन उत्पन्न करने का प्रयत्न अपनी योग्यता और परिस्थिति के अनुसार कर सकें और अल्लाह तआला को अत्यन्त प्रसन्न करने वाले और नबी की पवित्र आत्मा को अत्यधिक प्रफुल्ल करने वाले इस कार्य में अपनी सामर्थ्य भर भाग लें। यह पुस्तक यद्यपि अधिक मोटी नहीं है, परन्तु अल्लाह तआला की सहायता से इसमें पूरे धर्म का सार आ गया है और कुर्आन और हदीस की वह समस्त शिक्षाएं बीस पाठों के रूप में एकत्र कर दी गई है जिसका ज्ञान प्राप्त करके और जिसके अनुसार जीवन व्यतीत करके एक साधारण मनुष्य न केवल अच्छा मुसलमान वरन् अल्लाह चाहें, तो पूर्ण मोमिन और अल्लाह का प्रिय भक्त बन सकता है। मुसलमानों के अतिरिक्त यह वास्तविक उद्देश्य की पूर्ति हो सकती है। जैसाकि अभी मैंने संकेत दिया कि भारतवर्ष के इस नवीन युग में मुसलमानों का तथा

भविष्य में उनकी संतान का इस्लाम से सम्बन्धित रहना प्रत्यक्ष रूप से पूर्णतः इसी पर निर्भर है कि धर्म के महत्व को समझने बूझने वाला प्रत्येक भक्त मुसलमानों में धार्मिक विश्वास तथा इस्लामी जीवन उत्पन्न करने का प्रयत्न करने को अपना व्यक्तिगत कर्तव्य समझ ले और इस्लामी शिक्षा तथा धर्म के संदेश को एक–एक मुसलमान तक पहुंचाना अपना नित्य कर्म बना ले। इस समय यह पुस्तक इसी विशेष आवश्यकता के अनुभव के आधीन लिखी गई है। यह मेरी मनोकामना है कि अल्लाह के बन्दे इसके महत्त्व और इसकी विशेष परिस्थिति को समझें।

अल्लाह ही सामर्थ्य देने वाला है और वही सहायता प्रदान करने वाला है।

प्रत्येक मुसलमान के लिये इस्लामी शिक्षा प्राप्त करने की आवश्यकता तथा धर्म सीखने की श्रेष्ठता

भाइयो ! इतनी बात तो आप सभी जानते होंगे कि इस्लाम किसी समुदाय अथवा जाति तथा बिरादरी का नाम नहीं है कि उसमें जन्म लेने वाला प्रत्येक प्राणी आपसे आप मुसलमान हो और मुसलमान बनने के लिये उसको कुछ करना न पड़े जिस प्रकार शेख़ या सैयद वंश में जन्म लेने वाला प्रत्येक बालक आप से आप शेख़ अथवा सैय्यद हो जाता है और उसको शेख़ अथवा सैयद बनने के लिये कुछ करना नहीं पड़ता; वरन् इस्लाम नाम है उस धर्म का और उस ढंग पर जीवन व्यतीत करने का

जो अल्लाह के सच्चे रसूल (उन पर अल्लाह की रहमत तथा सलाम हो) अल्लाह तआला की ओर से लाए थे और जो पवित्र कुर्आन में और रसूल (उन पर अल्लाह की रहमत तथा सलाम हो) की हदीसों में बतलाया गया है। अतएव जो कोई इस धर्म को स्वीकार करे और इस मार्ग पर चले वही वास्तव में मुसलमान है और जो लोग न इस धर्म को जानते हैं और न इस पर चलते हैं वे वास्तव में मुसलमान नहीं हैं अतः ज्ञात हुआ कि वास्तविक मुसलमान बनने के लिये दो बातों की आवश्यकता है।

एक यह कि हम इस्लाम धर्म को जानें और कम से कम इसकी आवश्यक और बुनियादी बातों का हमको ज्ञान हो।

दूसरे यह कि हम इनको मानें और उनके अनुसार चलने का निर्णय करें। इसी का नाम इस्लाम है और मुसलमान होने का यही अर्थ है। अतः इस्लाम का ज्ञान प्राप्त करना अर्थात् धर्म की आवश्यक बातों का जानना मुसलमान होने की सर्वप्रथम शर्त है, इसी कारण पवित्र हदीस में आया है।

त + ल + बुल + इल्मि + फ़रीज़तुन + अला + कुल्लि+ मुस्लिमिन।

अर्थात् धर्म का ज्ञान प्राप्त करने का प्रयत्न करना और उस की चेष्टा करना प्रत्येक मुसलमान के लिये अनिवार्य है।

और यह बात सदैव याद रखने की है कि धर्म में जो वस्तु अनिवार्य है उसका करना इबादत (उपासना) है अतः दीन धर्म सीखना और धार्मिक बातें जानने का प्रयत्न करना भी इबादत है और अल्लाह के यहां इसका बहुत बड़ा प्रतिफल है और रसूलुल्लाह (उन पर अल्लाह की रहमत और सलाम हो) ने इसकी बहुत बड़ाइयां बयान की हैं।

एक हदीस में है कि:—

जो व्यक्ति दीन सीखने के लिये घर से निकले वह जब तक अपने घर लौट कर न आ जाय वह अल्लाह के रास्ते में है। (तिरमिज़ी)

एक और हदीस में है कि:—

जो व्यक्ति दीन की चेष्टा में और धार्मिक बातें सीखने के लिये किसी मार्ग पर चलेगा तो अल्लाह तआला उसके लिये जन्नत का मार्ग सहज कर देगा। (मुस्लिम)

एक और हदीस में है कि:—

धार्मिक विद्या की चेष्टा और उसके प्राप्त करने का प्रयत्न करना किये हुये पापों का नाशक है, अर्थात् इससे आदमी के पिछले अपराध क्षमा हो जाते हैं। (तिरमिज़ी)

सारांश यह कि धर्म का सीखना और इस्लाम की आवश्यक बातों का ज्ञान प्राप्त करने का प्रयत्न मुसलमान के लिये अनिवार्य है। चाहे वह धनवान हो चाहे निर्धन, युवक हो चाहे वृद्ध, पढ़ा लिखा हो अथवा अनपढ़, पुरुष हो अथवा स्त्री, और ऊपर की हदीसों से यह भी ज्ञात हो चुका कि इस कार्य में जो समय लगता है और इसके लिये जो परिश्रम करना पड़ता है अल्लाह तआला के वहां इसका बहुत बड़ा बदला और प्रतिफल मिलने वाला है। अतः हम सबको निर्णय कर लेना चाहिये कि हम दीन सीखने की ओर इस्लाम की आवश्यक बातों का ज्ञान प्राप्त करने का अवश्य प्रयत्न करेंगे।

जो मुसलमान भाई आयु अधिक हो जाने के कारण अथवा काम काज में संलग्न हो जाने के कारण किसी इस्लामी पाठशाला में प्रवेश करके और नियमानुसार उसके विद्यार्थी बनकर धर्म का

ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकते; उसके लिये दीन सीखने और दान की आवश्यक बातें ग्रहण करने का सरल मार्ग यह है कि यदि वह पढ़े लिखे हैं तो दीन की सही पुस्तकें देखा करें और जो पढ़े लिखे नहीं हैं अथवा बहुत कम पढ़े हैं वह अच्छे पढ़े लिखों से ऐसी पुस्तकें पढ़वा कर सुना करें। यदि घरों में बैठकों में, जनसमूहों में और मस्जिदों में ऐसी पुस्तकें पढ़ने और सुनने सुनाने का रिवाज हो जाए तो प्रत्येक श्रेणी के मुसलमानों में दीन का ज्ञान प्रचलित हो सकता है।

यह छोटी सी पुस्तक विशेषकर इसी प्रयोजन और इसी उद्दश्य से लिखी गई है। इसमें धर्म की वह समस्त आवश्यक बातें और रसूलुल्लाह (उन पर रहमत और सलाम) के वह निर्देश जो प्रत्येक मुसलमान को ज्ञात होने चाहिये बहुत सरल भाषा में लिखी गई हैं। आओ इन बातों को स्वयं भी सीखें, दूसरों को भी सिखलाएं और बतलाएं और संसार में इन इसलामी बातों को प्रचलित करने और फैलाने का प्रयत्न करने को अपने जीवन का उद्देश्य बनाएं। पवित्र हदीस में है कि:–

> जो व्यक्ति धर्म को सीखने और जानने का इसलिए प्रयत्न करे कि इसके द्वारा वह इस्लाम को जीवित करे (अर्थात् दूसरों में इसको फैलाए और लोगों को इसके अनुसार चलाए) और इसी बीच में उसकी मृत्यु हो जाय तो आखिरत (परलोक) में उसके और पैग़म्बरों के बीच में केवल एक श्रेणी का अन्तर होगा। (दारमी)

अल्लाह तआला हम सब की सहायता करे कि स्वयं धर्म को सीखें, दूसरों को सिखाएं स्वयं दीन पर चलें और अल्लाह के दूसरे बन्दों को इस पर चलाने का प्रयत्न करें।

पहला पाठ

कलिमए तय्यिबह

(पवित्र वाक्य)

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ

ला+इला+ह+इल्लल्लाहु+मुहम्मदुर्रसूलुल्लाहि । (अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं अर्थात् कोई पूजा के योग्य नहीं और मुहम्मद स० उसके रसूल हैं) भाइयों ! यही कलिमह इस्लाम का प्रवेश मार्ग और धर्म और विश्वास की जड़ बुनियाद है । इसको स्वीकार करके और इसको विश्वासपूर्वक पढ़ के जन्म का काफ़िर (अविश्वासी) और मु (बहुदेववादी) भी मोमिन (इमानवाला) और मुसलमान और नजात (मुक्ति) का अधिकारी हो जाता है मगर शर्त यह है कि इस कलिमे में अल्लाह तआला की तौहीद (एकेश्वरवाद) और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत (दूतता) की जो स्वीकृति है उसको उसने समझ कर माना और स्वीकार किया हो अतः यदि कोई व्यक्ति अल्लाह के एक होने और रसूल की दूतता को तनिक भी न समझा हो और विना अर्थ समझे उसने यह कलिमह (वाक्य) पढ़ लिया

हो तो वह अल्लाह की दृष्टि में मोमिन और मुस्लिम न होगा। अतएव आवश्यक है कि हम इस कलिमे के अर्थ को समझें।

इस कलिमे के दो भाग हैं। प्रथम भाग है ला+इला+ह+ इल्लल्लाहु इसमें अल्लाह तआला की तौहीद (एक होना) का वचन है और इसका अर्थ यह है कि अल्लाह तआला के अतिरिक्त कोई ऐसा नहीं है जो इबादत (उपासना) के योग्य हो। बस अल्लाह तआला ही अकेले ऐसे हैं जो पूज्य हैं और इबादत (पूजा) के योग्य हैं। क्योंकि वही हमारा और सबका पैदा करने वाला और मालिक है। वही पालने वाला और रोज़ी देने वाला है। वही मारने वाला और जिलाने वाला। रोग और स्वास्थ्य, अमीरों तथा गरीबों और हर प्रकार का बनाव बिगाड़ और लाभ हानि केवल उसी के अधिकार में है और उसके अतिरिक्त विश्व में जो जीव हैं चाहे मनुष्य हो अथवा फ़रिश्ते सब उसके बन्दे और उसके पैदा किये हुए हैं। उसके ऐश्वर्य में कोई उसका सहकारी और साझी नहीं है और न उसके आदेशों में उलट-पलट का किसी को अधिकार है और न उसके कामों में विघ्न डालने का किसी में सामर्थ्य है। अतएव बस वही और केवल वही इस योग्य है कि उसकी इबादत की जाय और उसी से लौ लगाई जाय और मुसीबतों तथा कठिनाइयों और अपनी सब आवश्यकताओं में गिड़गिड़ा गिड़गिड़ा कर उसी से प्रार्थना और विनती की जाय क्योंकि वह ही वास्तविक सर्वशक्तिमान् प्रभु और स्वामी और सम्राट है और अधिकारियों से उच्च और बड़ा अधिकारी है। अतः आवश्यक है, कि उसकी प्रत्येक आज्ञा का पालन किया जाय और पूर्ण भक्ति और निष्ठा से उसके आदेशों पर चला जाय और उसकी आज्ञा के विपरीत किसी

दूसरे का कोई आदेश कदापि न माना जाय। चाहे वह कोई हो, चाहे वह अपना बाप ही हो, राज्याधिकारी शासक हो या बिरादरी का चौधरी हो या कोई प्रिय मित्र हो या स्वयं अपने हृदय की कामना या अपने मन की चाहत हो, सारांश यह कि जब हमने जान लिया और मान लिया कि केवल एक अल्लाह ही इबादत (उपासना) के योग्य है और हम केवल उसी के बन्दे हैं तो चाहिये कि हमारा कर्म भी इसी के अनुसार हो, और संसार के लोग हमें देखकर समझ लिया करें कि यह केवल अल्लाह के बन्दे हैं जो अल्लाह की आज्ञाओं का पालन करते हैं और अल्लाह ही के लिये जीते और मरते हैं सारांश यह कि ला + इला + ह + इल्लल्लाहु हमारा प्रण और हमारा एलान हो। ला + इला+ह+इल्लल्लाहु हमारा विश्वास और हमारा ईमान हो। ला + इला+ह + इल्लल्लाहु हमारा अमल और हमारी शान हो।

भाइयो यह ला+इला+ह+इल्लल्लाहु धर्म की नीव की प्रथम ईंट और सब पैगम्बरों का सबसे अधिक महत्वपूर्ण और प्रथम पाठ है और दीन की सभी बातों में इसका पद सबसे ऊँचा है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की प्रसिद्ध हदीस है। आपने फ़रमाया :—

"ईमान की सत्तर से भी ऊपर शाखाएँ हैं और उनमें सबसे उच्च और श्रेष्ठ ला+इला+ह+इल्लल्लाहु का मानना है। (बुख़ारी व मुस्लिम)

ईसी लिये ज़िकरों (जापों) में भी सबसे श्रेष्ठ ला+इला+ह+ इल्लल्लाहु का ज़िक्र (जाप) है। एक दूसरी हदीस में है। अफ+ ज़लुज़्ज़िक्रि+ला+इला+ह+इल्लल्लाहु सब ज़िक्रों (जापों)

में सबसे श्रेष्ठ और उच्चतर ज़िक्र (जाप) ला + इला+ ह+इल्लल्लाहु है। (इब्नमाजह व नसई)।

और एक हदीस में आया है कि अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा (उनपर सलाम हो) के एक प्रश्न के उत्तर में फरमाया कि:–

"ऐ मूसा ! यदि सातों आसमान और सातों जमीनें और जो कुछ इनमें है एक पलड़े में रख दिये जायें और ला+इला+ह+ इल्लल्लाहु दूसरे पलड़े में, तो ला+इला+ह+इल्लल्लाहु का पलड़ा ही भारी रहेगा (शरहुस्सुन्नह)

भाइयों ला+इला+ह+इल्लल्लाहु में यह श्रेष्ठता और यह भारीपन इसी कारण है कि इसमें अल्लाह तआला के एक होने की प्रतिज्ञा और उसका प्रण है। अर्थात् केवल उसी की पूजा एवं उपासना करने और उसी की आज्ञाओं पर चलने और उसी को अपना प्रयोजन और अपनी अभिलाषा बनाने और उसी से लौ लगाने का निर्णय और वचन है और यही तो ईमान की आत्मा और इस्लाम का सार है। इसी कारण रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आदेश मुसलमानों को यह है कि वह इस कलिमे को बारम्बार पढ़कर अपना ईमान नया किया करें। बहुत प्रसिद्ध हदीस है कि एक दिन हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि :–

"लोगों अपने ईमान को ताज़ा करते रहा करो" कुछ सहाबा ने निवेदन किया।

"ऐ अल्लाह के रसूल ! हम किस प्रकार अपने ईमानों को नया किया करें ? आपने फ़रमाया ला+इला+ह+इल्लल्लाहु अधिकता से पढ़ा करो" (मुस्नद, अहमद+जमउल फ़वाइद)

ला+इला+ह+इल्लल्लाहु के पढ़ने से ईमान के नया होने का कारण यही है कि इसमें अल्लाह तआला की तौहीद अर्थात् केवल उसी की पूजा एवं उपासना और सबसे अधिक उसी पर मर मिटने और उसी से प्रेम करने और उसकी सेवा और उसी के आज्ञापालन का प्रण एवं वचन है। और जैसा कि ऊपर कहा गया, यह ही तो ईमान का सार है। अतएव हम जितना भी समझ के और जितना भी ध्यान के साथ इस कलिमे को पढ़ेंगे निस्सन्देह उतना ही हमारा ईमान नया होगा और हमारा प्रण दृढ़ एवं प्रौढ़ होगा और खुदा ने चाहा तो फिर ला+इला+ह+इल्लल्लाहु हमारा व्यवहार और हमारा स्वभाव हो जायगा। अत: भाइयो निर्णय कर लो कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आदेश और संकेत के अनुसार हम इस कलिमे को ध्यान के साथ और सच्चे दिल से अधिकता के साथ पढ़ा करेंगे ताकि हमारा ईमान ताज़ा होता रहे और हमारा पूर्ण जीवन ला+इला+ह+इल्लल्लाहु के सांचे में ढल जाय।

यहां तक पवित्र कलिमए तय्यिबा के केवल प्रथम भाग का वर्णन हुआ।

हमारे कलिमे का द्वीतिय भाग है

محمد رسول الله

मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह

इसमें हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रसूल

होने की स्वीकृति और उसकी घोषणा है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रसूल होने का अर्थ यह है कि अल्लाह तआला ने आप को संसार के सुधार और पथ प्रदर्शन के लिये भेजा था। और आपने जो कुछ बतलाया और जो संदेश एवं समाचार आपने दिये वह सब सत्य और वास्तविक हैं। उदाहरणार्थ क़ुरआन का ख़ुदा की ओर से होना, फ़रिश्तों का होना, क़ियामत का आना, क़ियामत के पश्चात् मुरदों का फिर से जीवित किया जाना और अपने अपने कर्मों के अनुसार जन्नत या दोज़ख़ में जाना, इत्यादि।

सारांश यह कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रसूल होने का अर्थ यही है कि आपने जो बातें इस प्रकार की संसार को बतलाई हैं वह ख़ुदा की ओर से विशेष और विश्वास योग्य ज्ञान प्राप्त करके बतलाई हैं और वह सब बिल्कुल सत्य एवं शुद्ध हैं जिनमें किसी संदेह आदि का स्थान नहीं है, और इसी प्रकार आपने लोगों को जो निर्देश और आदेश दिये वह सब वास्तव में ख़ुदा के निर्देश और आदेश हैं जो आप पर उतारे गए। इसी से आपने समझ लिया होगा कि किसी रसूल को मानने से स्वयं ही यह अनिवार्य हो जाता है कि उसके प्रत्येक निर्देश तथा आदेश को माना जाय, क्योंकि अल्लाह तआला किसी को अपना रसूल इसी लिये बनाता है कि उसके द्वारा अपने बन्दों को अपने वह आदेश भेजे जिन पर वह बन्दों को चलाना चाहता है।

पवित्र क़ुरआन में फ़रमाया गया है कि—

وَمَآ أَرْسَلْنَا مِن رَّسُولٍ إِلَّا لِيُطَاعَ بِإِذْنِ ٱللَّهِ

व+मा+अरसलना+मिर्रसूलिन+इल्ला+लियुता+अ+

बिइज्‌+निल्लाह्+

और हमने प्रत्येक रसूल को इसलिये भेजा कि हमारे आदेशानुसार उसकी आज्ञा का पालन किया जाय अर्थात् उसके आदेशों को माना जाय।

सारांश यह है कि रसूल पर ईमान लाने और उसको रसूल मानने का अर्थ यही है कि उसकी प्रत्येक बात को बिल्कुल सत्य माना जाय। और उसकी शिक्षा एवं उसके मार्ग प्रदर्शन को खुदा की शिक्षा और खुदा का मार्ग प्रदर्शन समझा जाय और उसकी आज्ञाओं पर चलने का निर्णय कर लिया जाय। अत : यदि कोई कलिमह् तो पढ़ता हो परन्तु अपने बारे में उसने यह निर्णय न किया हो कि मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बतलाई हुई प्रत्येक बात को बिल्कुल सत्य और उसके विपरीत समस्त बातों को अशुद्ध जानूंगा और उनकी शरीअत (धर्मशास्त्र) और उनके आदेशों पर चलूंगा तो वह आदमी वास्तव में मोमिन और मुसलमान ही नहीं है और कदाचित उसने मुसलमान होने का अर्थ ही नहीं समझा है। खुली हुई बात है कि जब हमने कलिमह् पढ़ के हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को खुदा का सच्चा रसूल मान लिया तो हमारे लिये अनिवार्य हो गया कि हम उनके आदेशानुसार चलें और उनकी समस्त बातें मानें और उनके लाए हुए धर्मशास्त्र का पूर्ण रूप से पालन करें।

कलिमह् शरीफ़ वास्तव में एक प्रतिज्ञा और प्रण है।

कलिमए शरीफ़ के दोनों भाग (१) ला+इला+ह+इल्ल-ल्लाहु (२) मुहम्मदुर्रसूलुल्लाहि के अर्थ की जो व्याख्या ऊपर की

गई है उससे आपने समझ लिया होगा कि यह कलिमह वास्तव में एक प्रण और प्रतिज्ञा है, इस बात की कि मैं केवल अल्लाह तआला को सच्चा ख़ुदा और पूज्य और स्वामी मानता हूँ और संसार एवं आखिरत की प्रत्येक वस्तु को केवल उसी के वश और अधिकार में समझता हूँ अतः मैं उसकी और केवल उसी की पूजा और उपासना करूँगा और दास को जिस प्रकार अपने प्रभु एवं नाथ के आदेशों पर चलना चाहिये उसी प्रकार उसके आदेशों पर चलूँगा। और प्रत्येक वस्तु से अधिक मैं उस से स्नेह एवं सम्बन्ध रक्खूंगा और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मैं खुदा का सच्चा रसूल स्वीकार करता हूँ। अब मैं एक उम्मती (अनुयायी) की भांति उनका आज्ञापालन करूँगा और उनके लाए हुए धर्मशास्त्र पर चलता रहूँगा। वास्तव में इसी प्रण और प्रतिज्ञा का नाम ईमान है। और तौहीद व रिसालत की गवाही देने का भी यही अर्थ है।

अतएव कलिमह पढ़ने वाले प्रत्येक मुसलमान को चाहिये कि वह अपने को इस प्रतिज्ञा और गवाही में बंधा हुआ समझे और उसका जीवन इसी सिद्धान्त के अनुसार व्यतीत हो ताकि वह अल्लाह के निकट एक सच्चा मोमिन व मुसलिम हो और मुक्ति तथा जन्नत का अधिकारी बन सके।

ऐसे भाग्यशालियों के लिये बड़ी शुभ सूचनाएँ वर्णन की गई हैं जो पवित्र कलिमे के इन दोनों भागों (तौहीद व रिसालत) को सच्चे दिल से स्वीकार करें और हृदय तथा जिह्वा एवं कर्म द्वारा इसकी गवाही दें। हज़रत अनस का वृत्तान्त है कि रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत मआज़ से

फ़रमायाः—

जो कोई सच्चे दिल से "ला+इला+ह+इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाहि" की गवाही दे तो अल्लाह तआला ने दोज़ख (नर्क) की अग्नि ऐसे व्यक्ति पर हराम (पूर्णतया निषिद्ध) कर दी है। (बुख़ारी व मुस्लिम)

भाइयो ला+इला+ह+इल्लल्लाहु+मुहम्मदुर्रसूलल्लाहि का वास्तविक परिचय और इसके भारीपन को भली भाँति समझ के हृदय एवं जिह्व से इसकी गवाही दो और निर्णय कर लो कि अपना जीवन इस गवाही के अनुसार व्यतीत करेंगे, ताकि हमारी गवाही झूठी न ठहरे, क्योंकि इस गवाही पर ही हमारा ईमान व इस्लाम और हमारी नजात (मुक्ति) निर्भर है। अतः चाहिये कि ला+इला+ह+इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाहि हमारा दृढ़ विश्वास तथा ईमान हो।

ला+इलाह+इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाहि हमारी प्रतिज्ञा और एलान हो ला+इलाह+इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाहि हमारे जीवन का सिद्धान्त और सकल संसार के लिये हमारा संदेश हो। इसी को फैलाने तथा ऊँचा करने के लिये हम जियें और मरें।

दूसरा पाठ

नमाज

नमाज़ का महत्व और उसका प्रभाव:—

अल्लाह और रसूल पर ईमान लाने और तौहीद तथा रिसालत (दूतता) की गवाही देने के पश्चात् सबसे प्रथम तथा उत्तम अनिवार्य कर्म इसलाम में नमाज़ है। नमाज अल्लाह तआला की विशेषि इबादत (उपासना) है जो दिन में पांच बार पढ़ना अनिवार्य है। क़ुरआन शरीफ़ की पचासों आयतों (वाक्यों) में और रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सैकड़ों हदीसों (कथनों) में नमाज़ पर बहुत ज़ोर दिया गया है। और उसको धर्म का स्तम्भ और दीन का आधार कहा गया है।

नमाज़ का यह विशेष प्रभाव है कि यदि वह भलीं भाँति पढ़ी जाये और अल्लाह तआला को सर्वव्यापी तथा सर्वदर्शी समझते हुए पूरे ध्यान से लीनतापूर्वक पढ़ी जाय तो उससे मनुष्य का हृदय पवित्र और स्वच्छ हो जाता है, और उसका जीवन सुधर जाता है और बुराइयां उससे छूट जाती हैं और नेकी एवं सच्चाई का प्रेम तथा खुदा का डर उसके हृदय में उत्पन्न हो जाता है। अतः इस्लाम में अन्य समस्त फ़रज़ों (अनिवार्य कार्यों) से अधिक इसके लिये दृढ़ आदेश है। और इसी कारण रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नियम था कि जब कोई व्यक्ति

आपकी सेवा में उपस्थित होकर इस्लाम धर्म स्वीकार करता तो आप तौहीद की शिक्षा के पश्चात् उससे प्रथम प्रतिज्ञा नमाज़ ही की लिया करते थे। सारांश यह है कि कलिमे के पश्चात् नमाज़ ही इस्लाम की बुनियाद है।

नमाज़ न पढ़ना और नमाज़ न पढ़ने वाले, पवित्र रसूल की दृष्टि में:–

हदीसों से ज्ञात होता है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नमाज़ न पढ़ने को कुफ़्र की बात और काफ़िरों की चाल ढाल ठहराते थे और फ़रमाते थे कि जो व्यक्ति नमाज़ न पढ़े उसका दीन में कोई भाग नहीं।

जैसा कि सही मुस्लिम[1] की एक हदीस में है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:—

बन्दे और कुफ़्र के बीच में केवल नमाज़ छोड़ देने का अन्तर है। (सही मुस्लिम)

अर्थ यह है कि बन्दह यदि नमाज़ छोड़ देगा तो कुफ़्र से मिल जायगा और उसका वह कार्य काफ़िरों जैसा कार्य होगा—एक दूसरी हदीस में आया है कि:—

इस्लाम में उसका कुछ भी भाग नहीं जो नमाज़ न पढ़ता हो (दुर्रे मन्सूर मुस्नदे बज़्ज़ाज़ के संदर्भ से)

नमाज पढ़ना कितनी बहुमूल्य कर्म और सौभाग्यशीलता है और नमाज़ छोड़ना कितनी बड़ी विपत्ति और कैसी दुर्भाग्यशीलता है, इसका अनुमान करने के लिये रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व

१— शुद्ध हदिसो का एक संग्रह

सल्लम की यह एक हदीस और सुनिये। एक दिन रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नमाज़ के लिये हड़ आदेश देते हुए फ़रमाया कि:—

"जो कोई नमाज़ को भली भाति और यथा क्रम पढ़ेगा, तो उसके लिये वह क़ियामत में प्रकाश होगी और उसके लिये ईमान व इस्लाम का प्रमाण होगी और नजात (मुक्ति) का साधन बनेगी और जो कोई इसको ध्यान-पूर्वक और यथाक्रम नहीं पढ़ेगा तो वह उसके लिये न प्रकाश होगी न प्रमाण होगी। और न वह उसको दण्ड से मुक्ति दिलाएगी और वह क़ियामत में क़ारून, फ़िर-औन, हामान और उबय्य बिन ख़लफ़ के साथ होगा। (मुसनद अहमद)

भाइयो हममें से प्रत्येक व्यक्ति को सोचना चाहिये कि यदि हमने भली भांति और यथाक्रम नमाज़ पढ़ने की टेव न उप्पन्न की तो फिर हमारा अंजाम और हमारा अन्त कैसा होने वाला है?

नमाज़ न पढ़ने वालों का क़ियामत के मैदान में अपमान:—

नमाज़ न पढ़ने वालों को क़ियामत के दिन सर्वप्रथम जो अपमान और निरादर उठाना पड़ेगा उसको पवित्र क़ुरआन की एक आयत (वाक्य) में इस प्रकार वर्णन किया गया है।

يَوْمَ يُكْشَفُ عَنْ سَاقٍ وَّيُدْعَوْنَ إِلَى السُّجُوْدِ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ۝ خَاشِعَةً أَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ۚ وَقَدْ كَانُوْا يُدْعَوْنَ إِلَى السُّجُوْدِ وَهُمْ سٰلِمُوْنَ ۝

यौं+म+युक+शफु+अन+ साक़िव +व + युदऔ+ न + इलस्सुजूदि+ फ़ला + यस्ततीऊ+न+खाशिअतन

+अबसारुहुम +तर्हकुहुम + ज़िल्लतूं + वक़द+कानू
+युदऔ+न+इलस्सुजूदि वहुम सालिमून (सूरए क़लम)

इस आयत का अर्थ और सारांश यह है कि क़ियामत के दिन जब कि अत्यन्त कठिन समय होगा और संसार के आदि से अन्त तक के समस्त मनुष्य कियामत के मैदान में एकत्रित होंगे तो अल्लाह तआला का एक विशेष तेज (तजल्ली) प्रकट होगा और उस समय पुकारा जायगा कि सब लोग अल्लाह के समक्ष सजदे में गिर जायं, तो जो भाग्यशाली ईमान रखने वाले संसार में नमज़ें पढ़ते थे, और अल्लाह को सजदे किया करते थे वह तो तुरन्त सजदे में चले जायेंगे परन्तु जो लोग स्वस्थ और हट्टे कट्टे होते हुए भी नमाजें नहीं पढ़ते थे उनकी कमरें उस समय तख़्ते के समान कड़ी कर दी जायंगी और वह काफ़िरों के साथ खड़े रह जायेंगे सजदह न कर सकेंगे और उनपर अत्यन्त अपमान एवं निरादर का दण्ड छा जायगा और उनकी निगाहें नीची होंगी और वह आँख उठाकर कुछ देख न सकेंगे। नरक के दण्ड से पूर्व ही अपमान एवं निरादर का यह दण्ड उनको महशर में समस्त संसार के सम्मुख उठाना होगा अल्लाह तआला हम सबको इस दण्ड से बचाए।

वास्तव में नमाज़ न पढ़ने वाला व्यक्ति एक प्रकार से ख़ुदा का राजद्रोही है और वह जितना भी अपमानित किया जाय और जितना भी उसको दण्ड दिया जाय निःसंदेह वह उसके योग्य है उम्मत के कुछ धर्माचार्यों के कथनानुसार तो नमाज़ छोड़ने वाले लोग धर्म से निकल जाने वाले हैं और धर्म त्यागने वालों के समान बध किये जाने योग्य हैं।

भाइयो हम सबको भली भाँति समझ लेना चाहिये कि बिना नमाज़ के मुसलमान होने का अधिकार जताना प्रमाणरहिता और बेबुनियाद है। नमाज़ पढ़ना ही वह विशेष धार्मिक कर्म है जो अल्लाह तआला से हमारा सम्बन्ध स्थापित करता है और हमको उसकी दया का पात्र ठहराता है।

नमाज़ की बरकतें:—जो बन्दह पाँच पहर अल्लाह तआला के समक्ष उपस्थित होकर कर बद्ध खड़ा होता है उसकी प्रशंसा और विनय करता है, उसके सामने झुकता है और सजदे में गिरता है और उससे प्रार्थनाए करता है तो वह अल्लाह तआला की विशेष दया दृष्टि और उसके प्रेम का अधिकारी हो जाता है और प्रत्येक पहर की नमाज़ से उसके पाप और अपराध क्षमा होते रहते हैं और उसके हृदय मे प्रकाश उत्पन्न होता है। उसका हृदय पापों के मैल कुचैल से पवित्र और स्वच्छ हो जाता है। एक हदीस में है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक बार बड़ा अच्छा उदाहरण देकर फ़रमाया।

> "बतलाओ यदि तुम में से किसी के द्वार पर नहर बह रही हो जिसमें वह प्रति दिन पाँच बार स्नान करता हो तो क्या उसके शरीर पर कुछ भी मैल रहेगा ?" लोगों ने उत्तर दिया "हुज़ूर कुछ भी नहीं रहेगा।" आपने फ़रमाया "बस पाँचो नमाज़ों का उदाहरण ऐसा ही है। अल्लाह तआला उनकी बरकत से पापों और अपराधों को मिटा देता है (बुख़ारी वमुस्लिम)।

जमाअत (सामूहिक रूप) से नमाज़ पढ़ने का दृढ़ आदेश और उसकी उत्तमता:—

रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीसों से यह भी ज्ञात होता है कि नमाज़ की वास्तविक श्रेष्ठता और बरकत प्राप्त होने के लिये सामूहिक रूप से (जमाअत से) नमाज़ पढ़ना भी आवश्यक है, और इसके लिये इतना दृढ़ आदेश है कि जो लोग असावधानी से अथवा आलस्य वश जमाअत में (सामूहिक नमाज़ में) उपस्थित नहीं होते थे उनके सम्बन्ध में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक बार फ़रमाया था कि:—

"मेरा जी चाहता है कि मैं उनके घरों में आग लगवा दूँ (सही मुस्लिम)।

बस इसी एक हदीस से अनुमान लगाया जा सकता है कि जमाअत का छोड़ना अल्लाह और रसूल को कितना क्लेशकारक है। और सही हदीस में आया है कि:—

सामूहिक रूप से नमाज़ पढ़ने का प्रतिफल अकेले नमाज़ पढ़ने की अपेक्षा सत्ताईस गुना अधिक होता है[1] (बुखारी व मुस्लिम)।

पाबन्दी (यथा क्रम) के साथ सामूहिक रूप से नमाज़ पढ़ने में आख़िरत के प्रतिफल के अतिरिक्त और भी बड़े बड़े लाभ है उदाहरणार्थ यह कि (१) यथाक्रम सामूहिक रूप से नमाज़ पढ़ने

१—परन्तु यह बात का ध्यान में रहे कि जमाअत (सामूहिक रूप) के लिए यह दृढ़ आदेश और उत्तमता केवल पुरुषों के लिए है। हदीस शरीफ में स्पष्ट रूप से अंकित है कि स्त्रियों को अपने घर में नमाज़ पढ़ने का प्रतिफल मस्जिद में पढ़ने की अपेक्षा अधिक मिलता है।

से मनुष्य में यथाक्रम समय के प्रयोग की क्षमता उत्पन्न हो जाती है (२) दिन रात में पाँच बार मुहल्ले के समस्त मुसलमान भाइयों का एक जगह जनसमूह हो जाता है जिससे बड़े बड़े लाभ उठाये जा सकते हैं। (३) जमाअत की पाबन्दी करने से नमाज़ की पूरी पाबन्दी प्राप्त हो जाती है। और जो लोग जमाअत की पाबन्दी नहीं करते बहुधा देखा गया है कि उनकी नमाजें अधिकता से छूट जाती है (४) और एक बहुत बड़ा लाभ यह है कि सामूहिक रूप से नमाज़ पढ़ने वाले प्रत्येक व्यक्ति की नमाज़ पूरे समूह की नमाज़ का अंश बन जाती है जिसमें अल्लाह के ऐसे नेक और प्रिय बन्दे भी होते हैं जिनकी नमाज़ें बड़ी अच्छी, लीनता तथा धुन ध्यान वाली होती हैं और अल्लाह तआला उनको स्वीकार करता है तथा अल्लाह तआला की दयालुता से यही आशा है कि जब वह समूह के कुछ लोगों की नमाजें स्वीकार करेगा तो उनही के साथ नमाज़ पढ़ने वाले अन्य व्यक्तियों की नमाज़ें भी स्वीकार कर लेगा चाहे उनकी नमाज़ें उस श्रेणी की न हों।

है वह दयालु करुणा निधान ऐसा दयालु ऐसा उदार
देता है दुर्जन को क्षमा सत संग से करके सुधार ॥
जिस नाव पर संतों सहित बैठे कोई पापी कुजन।
हो जायगी जब नाव पार डूबेगा पापी किस प्रकार ॥

अतएव हम में से प्रत्येक व्यक्ति को विचार करना चाहिये कि बिना किसी अत्यन्त विवशता के जमाअत नष्ट कर देना कितने बड़े प्रतिफल और कितनी बरकतों से अपने को वंचित कर देना है।

लीनता तथा धुन ध्यान का महत्व:—

लीनता सहित व ध्यान पूर्वक नमाज़ पढ़ने का अर्थ यह है कि अल्लाह तआला को सर्वव्यापक तथा सर्वदर्शी समझते हुए नमाज़ इस प्रकार पढ़ी जाय कि हृदय उसके प्रेम से भरा हुआ हो और उसके डरसे तथा उसकी बड़ाई और गौरव से सहमा हुआ हो जैसे कोई अपराधी किसी बड़े से बड़े अधिकारी और सम्राट के समक्ष खड़ा होता है। नमाज़ी जब खड़ा हो तो समझे कि मैं अपने अल्लाह के सामने उपस्थित हूँ और उसकी प्रतिष्ठा में खड़ा हूँ, रूकू करे तो समझे कि मैं उसके सामने झुक रहा हूँ। इसी प्रकार जग सजदह करे तो विचार करे कि मैं उसकी सेवा में सर टेके हुए हूँ और उसके सामने अपनी तुच्छता एवं असमर्थता प्रकट कर रहा हूँ और बहुत अच्छा तो यह है कि खड़े होने की दशा में और रूकू व सजदे में जो कुछ पढ़े उसको समझ समझ कर पढ़े। वास्तव में नमाज़ का यथार्थ स्वाद जब ही प्राप्त हो सकता है कि जो कुछ उसमें पढ़ा जाय उसका अर्थ समझते हुये पढ़ा जाये (नमाज़ में जो कुछ पढ़ा जाता है उस के अर्थ को याद कर लेना बहुत सरल है।)

नमाज़ मे लीनता एवं ध्यान और अल्लाह की ओर हृदय का झुकाव वास्तव में नमाज़ की जान और उसका सार है। और अल्लाह के जो बन्दे ऐसी नमाज पढ़ें उनकी मुक्ति एवं सफलता नियत और निश्चित है।

पवित्र क़ुरआन में है।

قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝ الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ صَلَاتِهِمْ خٰشِعُوْنَ

क़द अफ़लहल मूमिनूनल्लज़ी नहुम फी सलातिहिम खाशिऊन ।

सफल वह ईमान वाले हैं जो अपनी नमाजें लीनता सहित अदा करते हैं ।

और एक पवित्र हदीस में है कि रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:—

पाँच नमाज़ें अल्लाह तआला ने अनिवार्य (फ़र्ज़) की है जिसने भली भाँति इनके लिये वुज़ू किया और ठीक समय पर इनको पढ़ा और रूकू व सजदह भी उसे जैसे करना चाहिये, वैसे ही क्रिया और बहुत ध्यान देकर उनको अदा किया तो ऐसे व्यक्ति के लिये अल्लाह का वचन और निर्णय है कि उसको क्षमा प्रदान कर देगा और जिसने ऐसा न किया अर्थात् जिसने ऐसी भली भाँति नमाज न पढ़ी तो उसकी क्षमा के लिये अल्लाह का कोई वचन नहीं है। चाहेगा तो उसको क्षमा कर देगा और चाहेगा तो उसे दण्ड देगा। (मुस्नद अहमद व सुनन अबू दाऊद)।

अत: यदि हम चाहते है कि आखिरत के दण्ड से मुक्ति प्राप्त हो और अल्लाह तआला हमको अवश्य ही क्षमा प्रदान कर दें तो हमको चाहिये कि इस पवित्र हदीस के विषय के अनुसार पांचों पहर की नमाज अच्छे से अच्छे ढंग से पढा करें।

नमाज पढ़ने का नियम—

जब नमाज़ का समय आवे तो हमें चाहिये कि हम पहले भली भांति वज़ू करें और यों समझें कि अल्लाह तआला के दरबार में उपस्थित होने के लिये और उसकी आराधना के लिये यह पवित्रता

और स्वच्छता आवश्यक है। यह अल्लाह तआला का उपकार है कि उसने वुज़ू में भी हमारे लिये बड़ी दया और बरकतें रक्खी हैं। पवित्र हदीस में है कि वुज़ू में शरीर के जो अंग और जो भाग धोए जाते हैं इन अंगों द्वारा होने वाले पाप वुज़ू ही की बरकत से क्षमा कर दिये जाते हैं और इन पापों का अपवित्र फल वुज़ू के जल से धुल जाता है। वुज़ू पश्चात् जब हम नमाज़ के लिये खड़े होने लगें तो चाहियें कि भली भांति दिल में यह ध्यान जमाएँ कि हम पापी और कलंकी बन्दे अपने उस स्वामी और पूज्य प्रभु के सम्मुख खड़े हो रहे हैं जो हमारे खुले छुपे समस्त गुण अवगुण जानता है और क़यामत के दिन हमको उसके सम्मुख उपस्थित होना है। फिर जिस पहर की नमाज़ पढ़नी हो विशेष कर उसी समय को विचार में रख कर नियमानुसार कानों तक हाथ उठा के हृदय और ज़बान से कहना चाहिये "अल्लाहु अकबर" (अर्थात् अल्लाह बहुत बड़ा है) फिर करबद्ध होकर और अल्लाह की सेवा में अपने उपस्थित होने का पूरा ध्यान करके यह पढ़ना चाहिये:—

सुब+हा+न+क अल्लाहुम+म+वबि हमदि+क+व+
तबारकस्मु+क+व+तआला जद्दु+क+व+ला+इला+
ह+ग़ैरुक—

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالٰى جَدُّكَ وَلَآ اِلٰهَ غَيْرُكَ

अर्थात्:—ऐ मेरे अल्लाह पवित्र है तू और तेरे ही लिये है समस्त प्रशंसा, और बरकत वाला है तेरा नाम, और ऊंची है तेरी शान और तेरे अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं!

अऊजु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम—

أَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ

बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम—

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

मैं अल्लाह की शरण लेता हूं धिक्कारे हुए शैतान से। आरम्भ करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा दयामय और अत्यन्त कृपाशील है।

अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल+आ+ल+मीन—अर्रहमानिर्रहीम—मालिकि यौमिद्दीन—इय्या + क + न+बुदु+व+ इय्या + क नस्तईन—इहदिनस्सिरातल मुस्तक़ीम—सिरातल्लज़ी+न+अन+अम+त+अलै हिम+ग़ैरिल मग़ज़ूबि अलैहिम वलज़्ज़ाल्लीन—आमीन—

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۝
اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ۝ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۝ صِرَاطَ الَّذِيْنَ
اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۵ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۝ اٰمين۔

समस्त प्रशंसाएं अल्लाह के लिये हैं जो समस्त संसारों का पालने वाला है। बड़ी दयावाला और अत्यन्त कृपाशील है। बदले के दिन का स्वामी है। हम तेरी ही पूजा करते हैं और तुझसे ही सहायता मांगते हैं। ऐ अल्लाह हमको सीधे मार्ग पर चला। उन अच्छे बन्दों के मार्ग पर जिन पर तूने उपकार किया और न उनका मार्ग जिनपर तेरा प्रकोप हुआ और न उनका जो सीधे मार्ग से

भटके है (अल्लाह मेरी यह प्रार्थना स्वीकार कर ले)।

इसके पश्चात् कोई सूरत (क़ुरआन का अध्याय) अथवा किसी सूरत का कोई अंश पढ़े।

हम यहाँ पवित्र क़ुरआन की छोटी छोटी चार सूरतें अर्थ सहित अंकित करते हैं।

(१) बल+अस्रि इन्नल इन्सा+न लफ़ी खुसरिन इल्लल्लज़ी+न आमनू व अमिलुस्सालिहाति व+त+वा सौबिल हक़्क़ि व तवा सौ बिस्सब्र—

وَالْعَصْرِ ۝ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَفِیْ خُسْرٍ ۝ اِلَّا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ ۙ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ ۝

सौगन्ध है काल की कि समस्त मानव जाति घाटे और हानि में है (और उनका अन्त बहुत बुरा होने वाला है)। केवल उनको छोड़कर जो ईमान लाए और अच्छे कर्म किये और एक दूसरे को सत्य की और धैर्य की वसीयत की।

(२) क़ुल+हुवल्लाहु+अहद—अल्लाहुस्समद—लम+यलिद+वलम यूलद—वलम यकुल्लहु कुफ़ुवन अहद—

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۝ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۝ لَمْ یَلِدْ وَلَمْ یُوْلَدْ ۝ وَلَمْ یَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۝

कहो अल्लाह एक है। अल्लाह अनाश्रित है। (वह किसी का मुहताज नहीं और सब उसके मुहताज हैं) न उसके सन्तान है। न वह किसी की सन्तान है और न कोई उसके बराबर है।

(३) क़ुल अऊज़ु बिरब्बिल फ़लक़। मिन शर्रि मा ख़लक़। वमिन शर्रि ग़ासिक़िन इज़ा वक़ब। व मिन शर्रि नफ़्फ़ासाति फ़िल उक़दि। वमिन शर्रि हासिदिन इज़ा हसद।

قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۝ مِن شَرِّ مَا خَلَقَ ۝ وَمِن شَرِّ غَاسِقٍ إِذَا وَقَبَ ۝ وَمِن شَرِّ النَّفَّاثَاتِ فِي الْعُقَدِ ۝ وَمِن شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ ۝

कहो मैं प्रात:काल के उजाले के पालनहार की शरण लेता हूं। बुराई से प्रत्येक उस वस्तु की जो पैदा की है उसने और अंधेरे की बुराई से जब वह छा जाय और फूकने वालियों की बुराई से गांठों में (अर्थात् टोने टोटके करने वाली स्त्रियों की बुराई से) और डाह करने वाले की बुराई से जब वह डाह करे।

(४) क़ुल अऊज़ु बिरब्बिन्नास। मलिकिन्नास। इलाहिन्नास। मिन शर्रिल्वस्वासिल ख़न्नासिल्लज़ी युवस विसु फ़ीसुदूरिन्नासि मिनल जिन्नति वन्नास।

قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۝ مَلِكِ النَّاسِ ۝ إِلَٰهِ النَّاسِ ۝ مِن شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ ۝ الَّذِي يُوَسْوِسُ فِي صُدُورِ النَّاسِ ۝ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ۝

कहो मैं शरण लेता हूं सब मनुष्यों के पालनहार की। सबके बादशाह की, और सबके पूज्य ख़ुदा की। बुरा विचार डालने वाले पीछे हट जाने वाले की बुराई से जो मनुष्यों के दिल में बुरे विचार डालता है चाहे वह जिनों में से हो या आदमियों में से।

सारांश यह कि अलहम्दु शरीफ़ के बाद क़ुरान शरीफ़ की

कोई सूरत अथवा उसका कुछ भाग पढ़ना चाहिये। प्रत्येक नमाज़ में इतनी क़िरअत करना अर्थात् इतना क़ुरआन पढ़ना आवश्यक है।

जब यह क़िरअत कर चुके तो अल्लाह तआला के गौरव और ऐश्वर्य और उसके प्रताप का ध्यान करते हुए दिल और ज़बान से "अल्लाहु अकबर" कहता हुआ रुकू में चला जाय (झुक जाय) और बारम्बार कहे—

"सुबहा न रब्बियल अज़ीम",
पवित्र है मेरा पालनहार जो बड़े ऐश्वर्य वाला है।
"सुबहा न रब्बियल अज़ीम",
पवित्र है मेरा पालनहार जो बड़े प्रताप वाला है
"सुबहा नरब्बियल अज़ीम",
पवित्रत है मेरा पालनहार जो बड़े वैभव और गौरव वाला है।

जिस समय रुकू में अल्लाह तआला की पवित्रता और बड़ाई का यह वाक्य ज़बान से कह रहा हो उस समय दिल में भी उसकी पवित्रता और बड़ाई का पूरा पूरा ध्यान होना चाहिये। उसके बाद रुकू से सर उठाए और कहे—

"समि अल्लाहु लिमन हमिदह।"

अल्लाह ने उस बन्दे की सुन ली जिसने उसकी प्रशंसा बखानी।

उसके बाद कहे—

"रब्बना लकल हम्द",

ए हमारे मालिक और पालनहार सारी प्रशंसा तेरे ही लिये है।

उसके बाद फिर दिल और (जबान से "अल्लाहु अकबर" कहे— और अपने प्रभु के सामने सजदे में गिर जाय और एक के बाद दूसरे लगातार दो सजदे करे और सजदों में अल्लाह तआला का पूरा पूरा ध्यान करके और अपने सामने उसको व्यापक और सर्व द्रष्टा जानकर और उसको अपना श्रोता बना के जबान से और जबान के साथ दिल से और प्राण से कहे और बारम्बार कहे।

"सुबहा+न+रब्बियल आला"

पवित्र है मेर पालनहार जो बड़े ऊचें प्रताप और गौरव वाला है

"सुबहा+न+रब्बियल आला",

पविव है मेरा पालनपार जो बढ़े उच्च प्रताप और गौरव वाला है।

"सुबहा+न+रब्बियलआला",

पवित्र है मेरा पालनहार जो बड़े उच्च प्रताप और गौरव वाला है। सजदे की दशा में जिस समय यह वाक्य ज़बान पर हो उस समय दिल में अपनी असामर्थ्य और अपने छोटे और तुच्छ होने का और अल्लाह तआला की पवित्रता एवं अत्यन्त बड़ाई का पूरा पूरा ध्यान होना चाहिये। यह ध्यान और यह विचार जितना अधिक और जितना गहरा होगा नमाज उतनी ही अधिक अच्छी और अधिक बहुमूल्य होगी क्योंकि यही नमाज़ की जान है।

यह केवल एक रकअत का वर्णन हुआ। फिर जितनी रकअत नमाज पढ़नी हो इसी प्रकार पढ़नी चाहिये अलवत्ता यह ख़याल रखना चाहिये कि "सुबहा/न/क/अल्लाहुम्म" केवल पहली ही

रकअत में पढ़ा जाता है। नवाज़ के अंत में और बीच में जब बैठते हैं तो "अत्तहीयात" पढ़ते हैं जो मानो नमाज़ का सारांश और उसका निचोड़ है और वह यह है।

अत्तहीयातु लिल्लाहि वस्स+ल+वातु+वत्तैयिबातु। अस्स-लामु अलै+क+ऐयु+हन्नबीयु व रहमतुल्लाहि वब+र+कातुहू। अस्सलामु अलैना व+अला+इबादिल्लाहिस्सालि हीन+अश+हदु+अल्ला इला+ह+इल्लल्लाहु व अश+हदु+अन्ना मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुह+

اَلتَّحِيَّاتُ لِلّٰهِ وَالصَّلَوٰةُ وَالطَّيِّبَاتُ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصّٰلِحِيْنَ اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

शिष्टाचार और महिमा एवं प्रशंसा के सब शब्द केवल अल्लाह ही के लिये हैं और सब पूजा और दान अल्लाह ही के लिये हैं। सलाम हो तुम पर ऐ नबी और अल्लाह की दया और बरकतें। सलाम हो हम पर और अल्लाह के सब नेक बन्दों पर। मैं गवाही देता हूं कि कोई पूजा के योग्य नहीं सिवा अल्लाह के। और मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद उसके बन्दे और उसके पैग़म्बर हैं।

तीन रकअत और चार रकअत वाली नमाजों में जब दूसरी रकअत पर बैठते हैं तो केवल यह "अत्तहीयात" ही पढ़ी जाती है और अन्तिम रकअत पर जब बैठत हैं तो "अत्तहीयात" के बाद दुरूदशरीफ़ और एक दुआ भी पढ़ते हैं हम उन दोनों को यहां लिखते हैं।

अल्ला+हुम+म+सल्लि+अला+मुहम्मदिव+व+अला+आलि
+मुहम्मदिन+कमा+सल्लै+त+अला+इब+राही+म+व+
अला+आलि+इब+राही+म+इन्न+क+हमीदुम+मजीद+

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰٓى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰٓى اٰلِ
اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ

अल्लाहुम+म+बारिक+अला+मुहम्मदिव+व + अला+आलि
+मुहम्मदिन+कमा+बारक+त+अला+इब+राही+म+व+
अला आलि इबराही+म+इन्न+क+हमीदुम+मजीद ।

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ وَعَلٰٓى اٰلِ
اِبْرٰهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ

ऐ अल्लाह हजरत मुहम्मद सल्लअम पर और उनकी सन्तान और उनके पीछे चलनेवालों पर विशेष दयाकर जैसे तूने इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर और उनकी संतान पर और उनके पीछे चलने वालों पर दया की, तू बड़ी प्रशंसा वाला है, बड़ाई वाला है। ऐ अल्लाह हज़रत मुहम्मद सल्लअम-पर और उनकी सन्तान पर और उनके पीछे चलनेवालों पर बरकतें उतार जैसे तूने हज़रत इब्राहीम अलेहिस्सलाम पर और उनकी सन्तान पर और उनके पीछे चलने वालों पर बरकतें उतारी। तू बड़ी प्रशंशा वाला है और बड़ाई वाला है।

यह दरूद शरीफ़ वास्तव में रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपकी आल (बीबी बच्चे आदि) के लिये अर्थात् आपके

घरवालों और आपसे प्रमुख धार्मिक सम्बन्ध रखने वालोंके लिये रहमत और बरकत की प्रार्थना है—हमको धर्म की नेमत (धन्यता) और नमाज़ की सम्पत्ति चूँकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ही के द्वारा मिली है, अतः अल्लाह ने हुज़ूर के इस उपकार पर धन्यवाद के तौर पर हमारे कर्त्तव्य में यह नियमित किया है कि जब नमाज़ पढ़ें तो उस के अन्त में हुज़ूर के लिये और हुज़ूर के सहाबियों के लिये रहमत और बरकत की दुआ (प्रार्थना) भी करें। अतः हमको चाहिये कि प्रत्येक नमाज़ के अन्त में अत्तहीयात पढ़ने के बाद हम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इस उपकार का स्मरण करके दिल से उन पर यह दरूद शरीफ़ पढ़ें और उनके लिये रहमत और बरकत की दुआ करें।

उसके बाद सलाम फेर दें :—

अल्लाहुम्म+इन्नी+ज़लम्तु+नफ्सी+ज़ुल्मन+कसीरों+व+इन्नहू+ला+यग़ फ़ि रूज़्ज़ुनू+ब+इल्ला+अन्त+फ़ग़ फ़िर्ली मग़फ़ि+रतम+मिन+इन्दि+क+वर+हम+नी+इन्न+क + अन्तल+ग़फ़ू रुर्रहीम—

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ ظَلَمْتُ نَفْسِیْ ظُلْمًا كَثِیْرًا وَّلَا یَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ فَاغْفِرْ لِیْ

مَغْفِرَةً مِّنْ عِنْدِكَ وَارْحَمْنِیْ اِنَّكَ اَنْتَ الْغَفُوْرُ الرَّحِیْمُ

ऐ मेरे अल्लाह! मैंने अपनी जान पर बड़ा अत्याचार किया और तेरे आज्ञापालन में मुझसे बड़ा अपराध हुआ और तेरे अलावा कोई पापों का क्षमा करने वाला नहीं है। अतएव तू मुझे केवल अपनी दया से क्षमा कर दे और मुझपर दया कर। तू बड़ा क्षमा करने वाला दयालु है।

इस प्रार्थना में अपने अपराध और पाप स्वीकार किये गये है

आर अल्लाह् तआला से क्षमा आर दया की प्रार्थना की गई है। वास्तव में बन्दे के लिये यही उचित है कि वह् नमाज जैसी इबादत करके भी अपने दोष को स्वीकार करे और अपने को अपराधी एवं दूषित समझे और अल्लाह् की क्षमा और उसकी दया ही को अपना सहारा समझे और इबादत के कारण कोई घमण्ड इसमें पैदा न हो क्योंकि अल्लाह् तआला की इबादत की पूर्ति हमसे किसी प्रकार नहीं हो सकती।

इस पाठ में नमाज़ के बारे में जो कुछ बयान करना था वह सब बयान किया जा चुका। अन्त में हम फिर कहते है कि नमाज़ वह पारस जैसा प्रभाव डालने वाली इबादत है कि यदि इसको ध्यान के साथ और समझ समझ के और लीनता के साथ अदा किया जाय जैसा कि ऊपर हमने बतलाया है तो वह मनुष्य को कर्म और चरित्र में फ़रिश्तह् बना सकती है। भाइयो, नमाज़ का महत्व और उसका मूल्य समझो।

रसूलुल्लाह् सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम को उम्मत (मानने वाले) के नमाज़ पर जमें रहने की इतनी चिन्ता थी कि बिल्कुल अंतिम समय में जब कि हुजूर इस दुनिया से बिदा हो रहे थे और ज़बान से कुछ फ़रमाना भी कठिन था, उस समय पर भी आपने अपनी उम्मत को नमाज़ पर जमे रहने की बड़ी ताकीद के साथ वसीयत (अन्तिम उपदेश) फ़रमाई थी। अतएव जो मुसलमान आज नमाज़ नहीं पढ़ते और नमाज़ को स्थापित करने और रिवाज देने का कोई प्रयास नहीं करते वह ख़ुदा के लिये सोचें कि क़ियामत में वह किस तरह हुज़ूर के सामने जा सकेगें और किस तरह हुज़ूर से आंखे मिला सकेगें जबकि वह हुज़ूर की अन्तिम

वसीयत (अन्तिम उपदेश) को भी पैरों से रोंद रहे हैं। आओ हम सब हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के शब्दों में प्रार्थना करें।

रब्बिज+अल्नी+मुक़ीमस्सलाति व मिन ज़ुर्रीयत+रब्बना व तक़ब्बल दुआ+इ+रब्ब+नग़फ़िर्ली व लि वालिदय्य व लिल+मु+मिनी+न+यौ+म+यक़ूमुल+हिसाब—

رَبِّ اجْعَلْنِيْ مُقِيْمَ الصَّلٰوةِ وَمِنْ ذُرِّيَّتِيْ رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَاۗءِ رَبَّنَا اغْفِرْلِيْ وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ يَوْمَ يَقُوْمُ الْحِسَابُ

ऐ परवर्दिगार आप मुझको और मेरी सन्तान को नमाज़ का स्थापित करने वाला बना दीजिये। हे रब मेरी प्रार्थना स्वीकार कर लीजिये। ऐ मेरे परवरदिगार मुझको और मेरे माँ बाप को और सब ईमान वालों को क़ियामत के दिन क्षमा कर दीजिये।

तीसरा पाठ

ज़कात

इस्लाम की बुनियादी शिक्षाओं में ईमान और नमाज़ के बाद ज़कात का स्थान है अर्थात् वह इस्लाम का तीसरा स्तम्भ है। ज़कात का अर्थ यह है कि जिस मुसलमान के पास एक नियत राशि में नियमत: धन सम्पत्ति आदि हो वह प्रति वर्ष हिसाब लगाकर अपनी उस सम्पत्ति का चालीसवाँ भाग निर्धनों पर या नेकी की उन अन्य बातों पर व्यय कर दिया करें जो ज़कात के व्यय के लिये अल्लाह और रसूल ने नियुक्त की हैं[1]।

ज़कात का अनिवार्य होना और उसका महत्व :—

क़ुर्आन शरीफ़ में जगह जगह पर नमाज़ के साथ साथ ज़कात की ताकीद की गई है। यदि आप क़ुरआन शरीफ़ का पाठ (तिलावत) करते होंगे तो उसमें बीसों जगह पढ़ा होगा। अक़ी+मुस्सला+त+व आतुज्ज़का+त+" अ॰ तु् नमाज़ स्थापित करो और ज़कात दिया करो और कई जगह मुसलमानों की विशेषता यह बयान की गयी है कि "अल्लज़ी+न+युक़ीमूनस्सला+त+व

---

1. ज़कात की समस्याओं और उसके आदेशों के लिये फ़िक़ह की पुस्तकों को देखना चाहिये अथवा विद्वानों से पूछना चाहिये।

थू+तूज्ज़का+त+" अर्थात् वह नमाज़ स्थापित करते है और ज़कात देते है। इससे ज्ञात हुआ कि जो लोग नमाज़ नहीं पढ़ते और ज़कात नहीं देते वह सच्चे मुसलमान नहीं हैं क्योंकि इस्लाम की जो बातें और जो लक्षण असली मुसलमानों में होने चाहियें वह उन में नहीं हैं। सारांश यह कि नमाज़ न पढ़ना और ज़कात न देना क़ुरआन शरीफ़ के बयान के अनुसार मुसलमानों के लक्षण नहीं हैं वरन् काफ़िरों मुशरिकों, का चिह्न है। नमाज़ के बारें में तो सू+र+ए रूम की एक आयत (वाक्य) में फ़रमाया गया है कि:—

अक़ीमुस्सला +त+ वला + तकूनू+मिनल+ मुशरिकीन + (अलरूम—रुकू ४)

اَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَلَا تَكُوْنُوْا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ

अर्थात् नमाज़ स्थापित करो और नमाज़ को छोड़कर सू+र+ए मुशरिकों में से न हो जाओ।

और ज़कात न देने को मुशरिकों काफ़िरों तथा का चिह्न फ़ुस्सिलत की इस आयत में बतलाया गया है।

व+वैलुल्लिल + मुशरिकीनल्लज़ी + न+ लायूतूनज्ज़का+त +वहुम बिल+आखि+र+तिहुम काफ़िरून। (फ़ुस्सिलत, रुकू १)

وَوَيْلٌ لِّلْمُشْرِكِيْنَ ○ الَّذِيْنَ لَا يُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ

अर्थात् उन मुशरिकों के लिये बड़ी ख़राबी है और उनका अन्त बहुत बुरा होने वाला है जो ज़कात अदा नहीं करते और वह आख़िरत के मुन्किर और काफ़िर हैं।

जकात न देने का दुःख से भरा हुआ दण्ड :–

जकात न देने वालों का जो बुरा अन्त क़ियामत में होने वाला है और जो दण्ड इनको मिलने वाला है वह इतना कड़ा है कि उसके सुनने ही से रोंगटे खड़े हो जाते हैं और दिल काँपने लगते हैं।

सूरए तौबह में फ़रमाया गया है :–

वल्लज़ी+न+यक+निज़ू+नज़+ज़+ह+ब+वल + फ़िज़+ज़+त+वला+युन+फ़िक़ू + नहा + फ़ी सबी लिल्लाहि + फ़+बशिश्हुंम बि + अज़ाबिम अलीम+यौ+म+युहमा अलैहा + फ़ी + नारि जहन्न+म+फ़+तुकवा+बिहा+जिबा हुहुम+व+जुनूबुहुम व+ज़ुहूरुहुम+हाज़ा+मा+कनज़तुम लि+अनफ़ुसिकुम+फ़+ज़ूक़ू+मा+कुन्तुम+तक निज़ून। (सूरए तौबह रुकू ५)

وَالَّذِيْنَ يَكْنِزُوْنَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا يُنْفِقُوْنَهَا فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ○ يَوْمَ يُحْمٰى عَلَيْهَا فِىْ نَارِ جَهَنَّمَ فَتُكْوٰى بِهَا جِبَاهُهُمْ وَجُنُوْبُهُمْ وَظُهُوْرُهُمْ هٰذَا مَا كَنَزْتُمْ لِاَنْفُسِكُمْ فَذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَكْنِزُوْنَ

और जो लोग सोना चांदी अर्थात् धन दौलत जोड़ कर रखते हैं और उसको ख़ुदा की राह में खर्च नहीं करते, अर्थात् उन पर जो ज़कात आदि फ़र्ज़ (अनिवार्य) है, नहीं देते। ऐ रसूल तुम उनको कड़े और दुख देने वाले दण्ड का संदेश सुना दो जिस दिन कि तपाया जायगा उनकी इस दौलत को नर्क (दोज़ख़) की आग में फिर

दाग़े जायेंगे उससे उनके माथे और उनकी करवटें और पीठें और कहा जायगा कि यह है वह धन दौलत जिसको तुमने जोड़ा था अपने वास्ते अतः स्वाद चक्खो अपनी जोड़ी हुई दौलत का। (सूरए तौबह रुकूउ (५))

इस आयत के विषय की कुछ व्याख्या हुजूर सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी एक हदीस में फ़रमाई है। उस हदीस का अनुवाद यह है कि :—

जिस व्यक्ति के पास सोना चाँदी अर्थात् धन और माल हो और वह उस धन के बारे में अपना कर्तव्य पालन न करे अर्थात ज़कात आदि न देता हो तो कियामत के दिन उसके लिये आग की तख़्तियाँ तैयार की जायेंगी। फिर उनको दोज़ख़ की आग में और अधिक तपाकर उनसे उनसे उस व्यक्ति के माथे को और करवट को और पीठ को दाग़ा जायेगा और इसी प्रकार बारम्बार उन तख़्तियों को दोज़ख़ की आग पर तपा कर उस व्यक्ति को दाग़ा जाता रहेगा और कियामत के दिन की पूरी मुद्दत में इसी दण्ड का क्रम जारी रहेगा और वह मुद्दत पचास हज़ार साल की होगी। (तो इस तरह पचास हजार साल तक उस को यह कड़ा दुःख से भरा हुआ दण्ड दिया जाता रहेगा।)

कुछ हदीसों में ज़कात न देने वालों के लिये इसके अतिरिक्त [और] दूसरे प्रकार के कड़े दण्डों का वर्णन भी किया गया है [अ]ल्लाह तआला हम को अपने अज़ाबों (दण्ड) से बचाए।

अल्लाह तआला ने जिन लोगों को धनी और मालदार किया है वह यदि ज़कात न दें और अल्लाह के आदेश के अनुसार उसकी राह में खर्च न करें तो निस्संदेह वह बड़े अत्याचारी और उपकार को भुलाने वाले हैं और जो कड़े से कड़ा भी दण्ड क़ियामत के दिन दिया जाय वह उचित है।

ज़कात न देना अत्याचार और उपकार को ठुकराना है :—

फिर यह भी सोचना चाहिये कि ज़कात और सदक़ों से वास्तव में अपने ही ग़रीब भाइयों की सेवा होती है, तो ज़कात न निकालना वास्तव में अपने उन ग़रीब और असमर्थ भाइयों पर अत्याचार करना है और उनका हक़ मारना है।

भाइयो, ज़रा सोचो हमारे आपके पास जो कुछ माल और दौलत है वह सब अल्लाह तआला ही का दिया हुआ तो है और हम खुद भी उसी के बन्दे और उसी के पैदा किये हुए हैं अतएव यदि वह हमसे हमारा सारा धन भी मांगे वरन् जान देने को भी कहे तो हमारा कर्तव्य है कि बिना कारण पूछे सब कुछ दे दें। यह तो उसकी बड़ी दया है कि अपने दिये हुए माल में से केवल चालीसवां भाग निकालने का उसने आदेश दिया है।

ज़कात का प्रतिफल :—

फिर अल्लाह तआला की दूसरी बहुत बड़ी दया और उसकी बड़ी दयालशीलता यह है कि उसने ज़कात और सदक़े का बहुत बड़ा सवाब (प्रतिफल) नियुक्त किया है इसमें सन्देह नहीं कि ज़कात या सदक़ा देने वाला जो कुछ देता है, अल्लाह तआ-

ही के दिये हुए माल में से देता है इसलिये यदि अल्लाह पाक उस पर कोई सवाब न देता तो बिल्कुल न्याय संगत था परन्तु यह उसकी दया ही दया है कि उसके दिये हुए माल में से हम जो कुछ उसके आदेशानुसार जकात या सदके के तौर पर उसकी राह में खर्च करते हैं तो वह उससे बहुत प्रसन्न होता है और उसपर बड़े-बड़े सवाबों का वचन देता है कुर्आन मजीद ही में है कि—

म+स+लुल्लज़ी+न+युनफ़िक़ू+न+अमवा लहुम+फ़ी+सबीलिल्लाहि+ क+म+सलि+हब्बतिन+अम्ब+तत+सब+अ सनाबि+ल+फ़ी+कुल्लि+सुमबु+लतिम+मि+अतु+हब्बह + वल्लाहु + युज़ाइफ़ु + लिमैंयशाउ + वल्लाहु वासिउन अलीम + अल्लज़ी+न+युन+फ़िक़ू+न+अमवा+लहुम+फी सबीलिल्ला-हि सुम+म+ला+युत बिऊ+न+मा+अन+फ़क़ू+मन+नौं+वला+अज़ल+लहुम अजरुहुम इन+द+रब्बिहिम+वला खौफ़ुन अलैहिम+वला+हुम+यह ज़नून+ (सूरए बक़रह रुकू ३६)

مَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ اَنْبَتَتْ سَبْعَ
سَنَابِلَ فِيْ كُلِّ سُنْۢبُلَةٍ مِّائَةُ حَبَّةٍ ۗ وَاللّٰهُ يُضٰعِفُ لِمَنْ يَّشَآءُ ۗ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ
عَلِيْمٌ ○ اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ لَا يُتْبِعُوْنَ مَآ اَنْفَقُوْا
مَنًّا وَّلَآ اَذًى ۙ لَّهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ـ

जो लोग अल्लाह की राह में अपना माल खर्च करते हैं उनके इस खर्च करने का उदाहरण उस दाने का सा है

जिससे पौदा उगे और उससे सात बालें निकलें और हर बाली में सौ दाने हों। और अल्लाह बढ़ाता है जिसके वास्ते चाहे वह बड़ी अधिकता वाला है और सब कुछ जानता है। जो लोग अपना माल ख़ुदा की राह में खर्च करते हैं फिर न वह अपना यश जताते हैं न दुख पहुँचाते हैं उनके लिये उनके रब (पालनहार) के पास बड़ा सवाब (प्रतिफल) है और उन्हें क़ियामत में कोई भय और हानि न होगी। (बक़रह रु० ३६)

इस आयत (क़ुरआन का एक पूर्ण वाक्य) में ज़कात देनेवालों और ख़ुदा की राह में खर्च करने वालों के लिये अल्लाह तआला की ओर से तीन वचन दिये गये हैं :

एक यह कि जितना वह ख़र्च करते हैं अल्लाह तआला उनको इसके बदले सैकड़ों गुना अधिक देगा।

दूसरे यह कि उनको बहुत बड़ा बदला और सवाब (प्रति-फल) मिलेगा और बड़ी-बड़ी नेमतें मिलेंगी।

तीसरे यह कि क़ियामत के दिन उनको कोई डर और भय और कोई शोक एवं व्यथा न होगी। सुबहानल्लाह! (अल्लाह बे ऐब और पाक है।)

भाइयो! सहाबए किराम को (रसूल के साथियों को) अल्लाह तआला के इन वचनों पर पूर्ण विश्वास था इसलिये उनकी दशा यह थी कि जब ख़ुदा के मार्ग में सदक़ा (दान) करने की बड़ाई की और सवाब (प्रतिफल) की आयतें हुज़ूर पर उतरीं और उन्होंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से उनका बयान

सुना तो इनमें जो ग़रीब थे और जिनके पास दान देने के लिये पैसा भी न था वह भी दान देने के विचार से मज़दूरी करने के लिये घरों से निकल पड़े और अपनी पीठ पर बोझ लाद लाद कर उन्होंने पैसे कमाए और ख़ुदा की राह में दान दिया[१]।

ज़कात के महत्व और उसकी श्रेष्ठता के बारे में यहां हम रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की केवल एक हदीस और अंकित करते हैं। हदीस की प्रसिद्ध पुस्तक अबूदाऊद शरीफ़ में रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बयान फ़रमाया:—

> तीन बातें हैं, जिस व्यक्ति ने उनको ग्रहण कर लिया उसने ईमान का स्वाद पा लिया। एक यह कि केवल अल्लाह की इबादत (पूजा) करे। और दूसरे यह कि "ला इलाह इल्लल्लाह" पर उसका पूर्ण विश्वास हो। और तीसरे यह कि प्रत्येक वर्ष हृदय की पूर्ण प्रफुल्लता के साथ अपने धन और अपनी सम्पत्ति की ज़कात अदा करे। "तो जिसको यह तीन बातें प्राप्त हो जायें उसको ईमान का स्वाद और उसकी चाशनी प्राप्त हो जायेगी।"

अल्लाह तआला हमको ईमान का स्वाद और उसकी लज़्ज़त प्रदान करें।

ज़कात और दान के कुछ सांसारिक लाभ :—

ज़कात और दान का जो सवाब (प्रतिफल) और जो पारितोषिक अल्लाह तआला की ओर से आख़िरत (परलोक) में

१. रियाज़ुस्सालिहीन पृष्ठ २८ संकेत बुख़ारी व मुस्लिम।

मिलेगा उसके अलावा इस लौकिक जीवन में भी उससे बड़े लाभ प्राप्त होते हैं। उदाहरणार्थ यह कि ज़कात और दान अदा करने वाले मोमिन (इस्लाम का मानने वाला) का दिल प्रसन्न और सन्तुष्ट रहता है। ग़रीबों को इससे हसद (डाह) नहीं होता, वरन् वह उसका भला चाहते हैं। उसके लिये दुआएं (प्रार्थनाएँ) करते हैं और उसके प्रति शुभ कामनाएँ रखते हैं और उसकी ओर प्रेम दृष्टि से देखते हैं। साधारणतः लोगों की दृष्टि में उसका बड़ा सम्मान होता है और सब लोगों का प्रेम और सबकी सहानुभूति ऐसे व्यक्ति को प्राप्त होती है। अल्लाह तआला उसके धन में बड़ी बरकतें देता है। एक हदीस में है रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि :—

> अल्लाह तआला का आदेश है कि ऐ आदम के पुत्र ! तू मेरे निर्धन मुहताज बन्दों पर और अन्य भले अवसरों पर मेरा दिया हुआ धन व्यय किये जा मैं तुझको बराबर देता रहूंगा।

एक दूसरी हदीस में है कि रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :—

> "मैं इस बात पर सौगन्द खा सकता हूँ कि दान करने के कारण कोई व्यक्ति निर्धन और मुहताज न होगा।

अल्लाह तआला हमको तौफ़ीक़ (सहायता) दें कि हम रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उपदेशों और इस्लाम के निर्देशों पर चल कर दुनिया और आख़िरत की नेमतें और दौलतें प्राप्त करें।

चौथा पाठ

रोज़ह (इस्लामी व्रत)

रोज़े का महत्व और उसका अनिवार्य होना :—

इस्लाम की बुनियादी शिक्षाओं में ईमान और नमाज़ और ज़कात के पश्चात् रोज़े का स्थान है। क़ुरआन शरीफ़ में फ़रमाया गया है।

या+अय्यु हल्लज़ी+न+आ+म+नू+कुति+ब+अलै अलै-कुमुस्सि+यामु कमा कुति+ब+अलल्लज़ीन+मिन+क़ब+लिकुम +ल+अल्लकुम+तत+त+क़ून+ (सूरए+बक़रह+रुकू २३)

يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ

ऐ ईमान वालो! तुम पर रोज़े रखना अनिवार्य किया गया है जैसे कि तुमसे पहली उम्मतो पर भी अनिवार्य (फ़र्ज़) किया गया था ताकि तुममें तक़्वे (अल्लाह से डरना) का गुण उत्पन्न हो जाय।

इस्लाम में रमज़ान के पूरे महीने क रोज़े फ़र्ज़ (अनिवार्य) हैं। और जो व्यक्ति बिना किसी वास्तविक कारण और बिना मजबूरी के एक रोज़ह भी छोड़ दे वह बहुत बड़ा पापी और घोर

अपराधी है ।

एक हदीस में है कि :—

जो व्यक्ति बिना किसी मजबूरी और बीमारी के रमज़ान का एक रोज़ह भी छोड़ दे वह यदि इसके बदले सारी आयु भी रोज़े रक्खे तो भी उसका पूरा हक़ अदा न हो सकेगा ।

रोज़ों का सवाब :—

रोज़े में चूंकि इबादत (तपस्या) की इच्छा से खाने पीने और कामुकता से अपने मन को रोका जाता है और अल्लाह के वास्ते अपनी इच्छाओं और लज़्ज़तों का बलिदान किया जाता है इसलिये अल्लाह ने उसका सवाब (प्रतिफल) भी बहुत ज़ियादा और सबसे निराला रक्खा है । एक हदीस में है :—

जो व्यक्ति पूर्ण ईमान और विश्वास के साथ और अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिये और उससे सवाब लेने के लिये रमज़ान के रोज़े रक्खे तो उसके पहले सब गुनाह (पाप) क्षमा कर दिये जायंगे ।

एक दूसरी हदीस में है :—

कि बन्दों के समस्त भले कर्मों के बदले का एक नियम बना हुआ है और प्रत्येक कर्म का प्रतिफल उसी नियुक्त हिसाब से दिया जायगा परन्तु रोजह इस साधारण नियम से मुक्त है उसके बारे में अल्लाह तआला का वचन है कि बन्दह रोज़े में मेरे लिये अपना खाना पीना

अा१र अपनी कामुकता का बलिदान करता है अत : रोज़े का बदला बन्दे को मैं स्वयं दूंगा ।

एक दूसरी हदीस में है कि :—

"रोज़ेदार के लिये आनन्द के दो विशेष अवसर हैं। एक विशेष आनन्द उसको इफ़्तार के समय (रोज़ह खोलने के समय) इस संसार में प्राप्त होता है और दूसरा आनन्द आखिरत में अल्लाह के सामने उपस्थित होने के समय पर और अल्लाह के दर्बार में स्थान पाने के अवसर पर प्राप्त होगा।

एक और हदीस में आया है कि :—

रोज़ह दोज़ख (नर्क) की आग से बचाने वाली ढाल है और एक मजबूत किला है जो दोज़ख के दण्ड से रोज़ेदार को सुरक्षित रक्खेगा।

एक और हदीस में आया है कि :—

रोज़ेदार के लिये खुद रोज़ह की अल्लाह तआला से प्रार्थना करेगा कि मेरे कारण इस बन्दे ने दिन को खाना पीना और मन की इच्छा की पूर्ति को त्याग दिया था (अतः इसको क्षमा कर दिया जाय और इसको सम्पूर्ण प्रतिफल दिया जाय) तो अल्लाह तआला रोज़े की यह प्रार्थना स्वीकार कर लेगा।

एक हदीस में है कि :—

रोज़ेदार के मुख की दुर्गन्धि (जो किसी-किसी समय पेट

खाली होने से पैदा हो जाती है) अल्लाह के निकट मुश्क की सुगन्ध से अधिक अच्छी है ।

इन हदीसों में रोज़े की जो महिमा बखान की गई है इसके अलावा इसकी एक बड़ी विशेषता यह है कि रोज़ह मनुष्यों को दूसरे जीवधारियों से विशिष्ट करता है——जब इच्छा हुई खा लिया, जब मन में आया पी लिया और जब कामुकता उठी अपने जोड़े से स्वाद प्राप्त कर लिया : यह विशेषता अन्य जीव-धारियों की है———और न कभी खाना न कभी पीना न कभी अपने जोड़े से स्वाद प्राप्त करना : यह विशेषता फ़रिश्तों (देवदूतों) की है ।———और पवित्र धर्म शास्त्र के आदेशानुसार लगे बँधे नियम से खाना पीना और मन की अन्य इच्छाओं का पूरा करना; यह विशेषता केवल मानव जाति ही की है । अतः रोज़ह रखकर आदमी अन्य जीवधारियों से विशिष्ट होता है और फ़रिश्तों (देवदूतों) से उसको एक प्रकार की समता प्राप्त होती है ।

रोज़ों का विशेष लाभ :—

रोज़े का विशेष लाभ यह है कि इसके द्वारा मनुष्य में तक़्वा (अल्लाह का डर) और परहेज़गारी (भक्ति तथा संयम) का गुण उत्पन्न हो जाता है और अपने मन की इच्छाओं को वश में रखने की ताक़त आती है । और अल्लाह की आज्ञा की अपेक्षा अपने काम की शक्ति और अपने मन की इच्छा को दबाने की टेंव पड़ती है और आत्मा की उन्नति और उसका सुधार होता है, परन्तु यह सब बातें उसी समय प्राप्त हो सकती हैं जब रोज़ह रखने वाला खुद

भी इनके प्राप्त करने की चेष्टा रक्खे और रोज़े में उन सभी बातों का ध्यान रहे जिनकी शिक्षा रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दी है अर्थात् खाने पीने के अलावा सब छोटे बड़े पापों से भी घृणा करे, न झूठ बोले न गीबत[१] करे, न किसी से लड़े झगड़े। सारांश यह कि रोज़े की दशा में सभी खुले और छिपे गुनाहों (पापों) से पूर्ण रूप से बचे जैसा कि हदीसों में इस पर बल दिया गया है। जैसा कि एक हदीस में है कि रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उपदेश दिया :—

"जब तुममें से किसी के रोज़े का दिन हो तो चाहिये कि कोई गन्दी और बुरी बात उसकी ज़ुबान से न निकले और वह गुल गपाड़ा भी न करे और यदि कोई मनुष्य उससे झगड़ा करे और उसको गालियाँ दे तो उससे केवल इतना कह दे कि मैं रोज़े से हूं (अत: तुम्हारी गालियों के उत्तर में भी मैं गाली नहीं दे सकता)।

एक और हदीस में है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया :—

जो व्यक्ति रोज़े में अशुद्ध वाणी और अनुचित कर्म न छोड़े तो अल्लाह को उसका खाना पानी छोड़ने की कोई आवश्यकता और कोई परवाह नहीं।

एक और हदीस में है कि रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व

१. पीठ पीछे किसी को ऐसी बात कहना कि यदि उसके मुख पर कही जाय तो उसे दुख: हो।

सल्लम ने फ़रमाया :—

"कितने ही ऐसे रोज़ेदार होते है (जो रोज़े में बुरी बातों और बुरे कार्यों से घृणा नहीं करते और उसके कारण) उनके रोज़ों का निष्कर्ष भूख प्यास के अतिरिक्त कुछ नहीं होता"।

सारांश यह कि रोज़े के प्रभाव से आत्मा में पवित्रता एवं चरित्र और खुदा के डर का गुण और मन की इच्छाओं को वश में रखने का सामर्थ्य तभी उत्पन्न होगा जब कि खाने पीने के समान अन्य समस्त छोटे बड़े गुनाहों से भी बचा जाय और विशेष कर झूठ, ग़ीबत और गाली गलौज आदि से ज़बान की रक्षा की जाय।

संक्षेप यह कि यदि इस प्रकार के सम्पूर्ण रोज़े रक्खे जायँ तो खुदा चाहे तो वह सब लाभ प्राप्त हो सकते हैं जिनका वर्णन ऊपर किया गया और ऐसे राज़े मनुष्य में फ़रिश्तों के गुण उत्पन्न कर सकते हैं। अल्लाह तआला हम सबकी सहायता करे कि रोज़े की सत्यता एवं वास्तविकता और उसका मूल्य समझें और इसके द्वारा अपने अन्दर तक़वे और परहेज़गारी के गुण उत्पन्न करें।

रोज़े के बारे में यहाँ इस तुच्छ सेवक ने बहुत संक्षेप में लिखा है। जो सज्जन रोज़े का महत्व और इसकी बड़ाई और उसके प्रभाव के बारे में इससे अधिक विस्तार पूर्वक अध्ययन करना चाहें वह मेरी पुस्तिका "बरकाते रमज़ान" नामी देखें जो कि इस विषय पर प्रमुख और विस्तृत पुस्तिका है। (जो उर्दू में छपी हुई है)

पाँचवाँ पाठ

हज

हज का अनिवार्य होना :—

इस्लाम के स्तंभो में से अन्तिम स्तंभ हज है । क़ुर्आन शरीफ़ में हज के अनिवार्य होने को घोषित करते हुए फ़रमाया गया है ।

व लिलाहि+अलन्नासि हिज्जुल बैतिमनिस्तता+अ+इलैहि सबीला व मन+क+फ़+र+फ़इन्नल्ला+ह+ग़नीयुन अनिल आ+ल+मीन ।

وَلِلّٰهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ اِلَيْهِ سَبِيْلًا ۚ وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ

और अल्लाह के वास्ते बैतुल्लाह (काबा शरीफ़) का हज करना फ़र्ज़ (अनिवार्य) है उन लोगों पर जो वहाँ तक पहुँचने की शक्ति रखते हों और जो न मानें तो अल्लाह बेनियाज़[1] है सब दुनिया से।

इस आयत में हज के फ़र्ज़ होने की सूचना भी दी गई है और साथ ही यह भी बतलाया गया है कि हज केवल उन लोगों पर फ़र्ज़ है, जो वहाँ पहुँचने की सामर्थ्य रखते हो और आयत के अन्तिम भाग में इस ओर भी संकेत है कि जिन लोगों को अल्लाह ने हज करने

१ सब से बे परवाह

की शक्ति और हैसियत दी हो और वह कृतघ्नतावश हज न करें (जैसे कि आजकल के बहुत से मालदार नहीं करते) तो अल्लाह तआला सबसे बेनियाज़ और बेपरवाह है अतः उनके हज न करने से उसका कुछ नहीं बिगड़ेगा वरन् इस कृतघ्नता के कारण खुद ही उसकी रहमत और दया से वंचित हो जायेंगे और उनका परिणाम (खुदा न करें) बहुत बुरा होगा।

रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की एक हदीस में है कि:—

"जिस किसी को अल्लाह ने इतना दिया हो कि वह हज कर सके परन्तु फिर भी वह हज न करे तो कोई परवाह नहीं है कि चाहे वह यहूदी होकर मरे या नसरानी (ईसाई) होकर।"

भाइयो यदि हमारे दिलों में ईमान और इसलाम का कुछ भी मूल्य हो और अल्लाह व रसूल से कुछ भी सम्बन्ध हो तो इस हदीस के ज्ञात हो जाने के पश्चात् हम में से किसी ऐसे व्यक्ति को हज से वंचित न रहना चाहिये जो वहां पहुँच सकता हो।

हज की बड़ाइयां और बरकतें :—

बहुत सी हदीसों में हज की और हज करने वालों की बहुत सी बड़ाइयां और प्रशंसाएँ बयान की गई है। हम यहां केवल दो तीन हदीसें वर्णन करते हैं।

एक हदीस में है कि:—

"हज और उमरे के लिए जाने वाले लोग अल्लाह तआला के प्रमुख और विशेष पाहुने हैं। वह अल्लाह से प्रार्थना

करें तो अल्लाह तआला उनकी प्रार्थना स्वीकार करता है क्षमा याचना करे तो क्षमा कर देता है। (मिश्कात शरीफ़)

एक दूसरी हदीस में है कि:—

जो व्यक्ति हज करे और उसमें कोई अश्लील और पाप की बात न करे और अल्लाह की आज्ञा का उल्लंघन न करे तो वह पापों से ऐसा पवित्र और स्वच्छ होकर लौटेगा जैसा कि वह अपने जन्म के समय बिल्कुल निरापराध था। (मिश्कात शरीफ़)

एक और हदीस में है कि :—

"हज मबरूर अर्थात् वह हज जो खरेपन और निष्कपटता के साथ बिलकुल ठीक-ठीक अदा किया गया हो और उसमें कोई बुराई और खराबी न हो तो उसका प्रतिफल और बदला केवल जन्नत ही जन्नत है।" (मिश्कात शरीफ़)

हज की नक़द लज्ज़तें :—

हज की बरकत से गुनाहों की क्षमा और जन्नत की नेमतें जो प्राप्त होती हैं वह तो इनशा अल्लाह (खुदा ने चाहा) पूर्ण रूप से आखिरत में मिलेंगी परन्तु अल्लाह तआला के प्रमुख और विशेष चमत्कार के स्थान बैतुल्लाह शरीफ़ को देखकर और पवित्र मक्के के उन विशेष स्थानों पर पहुँचकर जहां हज़रत इब्राहीम व इस्माईल अलैहिमस्सलाम की और हमारे नबी व रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यादगारें

अब तक मौजूद हैं ईमान वालों को जो लज्ज़त और दौलत प्राप्त होती है वह भी इस दुनिया में जन्नत ही की नेमत है। फिर मदीन-ए-तैयिबा में पवित्र रौज़े (क़ब्र) की ज़ियारत (दर्शन) और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मस्जिद शरीफ़ में नमाज़ें पढ़ना और सीधे हुज़ुर ही से मुख़ातिब होकर सलातोसलाम भेजना, तैबह की गलियों में और वहाँ के जंगलों में फिरना वहाँ की हवा में साँस लेना और वहाँ की पवित्र भूमि में और हवा में बसी हुई सुगन्ध से मस्तिष्क का सुगन्धित होना और हुज़ूर का स्मरण करके शौक़ और प्रेम में प्रसन्न होना और कभी रो पड़ना यह वह लज्ज़तें हैं जो हज करनेवालों को मक्के और मदीने पहुँच कर नक़द प्राप्त होती हैं। शर्त यह अवश्य है कि अल्लाह इस योग्य बना दे कि इन लज्ज़तों को बन्दा समझ सके और इनसे प्रसन्नता ग्रहण कर सके। आओ हम सब प्रार्थना करें अल्लाह तआला केवल अपनी दयालुता एवं कृपा से यह दौलतें और लज्ज़तें हमारे भाग्य में लिख दें।

इस्लाम की पाँच बुनियादें :—

इस्लाम की जिन पाँच बुनियादी शिक्षाओं का यहाँ तक वर्णन हुआ अर्थात् कलिमा, नमाज़, ज़कात, रोज़ह, हज, यह पाँचों चीज़ें "अरकाने इस्लाम" (इस्लाम के स्तंभ) कही जाती है।

रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की प्रसिद्ध हदीस है आप ने फ़रमाया कि :—

इस्लाम की बुनियाद इन पाँच चीज़ों पर रक्खी गई

है (१) एक "ला इलाह इल्लल्लाहु मुसम्मदुर्रसूलुल्लाहि" की गवाही देना। दूसरे नमाज़ स्थापित करना। तीसरे ज़कात देना। चौथे रमज़ान के रोज़े रखना और पाँचवें बैतुल्लाह का हज करना उनके लिये जो वहाँ तक पहुँच सकते हों (सहीह बुख़ारी व मुस्लिम)

इन पाँच चीज़ो के इस्लाम के खम्बे और इस्लाम का बुनियाद होने का अर्थ यह है कि यह इस्लाल के बुनियादी कर्तव्य है और इन पर भलीभाँति चलने से इस्लाम के शेष आदेशों पर चलने की भी योग्यता पैदा हो जाती है। यहाँ हमने इन स्तंभो की केवल बड़ाई और उनका महत्व बयान किया है। इनके विस्तृत निर्देश फ़िक़ह के प्रामाणिक ग्रन्थों में देखे जायें या विद्वानों से पूछे जायें।

छठा पाठ

तक़वा तथा परहेज़गारी
(खुदा का डर और पवित्र जीवन)

तक़वा और परहेज़गारी (संयम) की शिक्षा भी इस्लाम की बुनियादी शिक्षाओं में से है।

तक़वा का अर्थ यह है कि अल्लाह की पकड़ और उसके दण्ड से डरते हुए और आख़िरत (मरने के बाद आने वाला जीवन) पर विश्वास रखते हुए सब बुरे कर्मों और बुरी बातों से बचा जाये। और अल्लाह तआला की आज्ञाओं का पालन किया जाये अर्थात् जो चीज़ें अल्लाह तआला ने हम पर फ़र्ज़ की हैं (हमारे लिये अनिवार्य की हैं) और अपने जिन बन्दों के जो अधिकार हमारे ऊपर अनिवार्य किये हैं उनको हम अदा करें और जिन कामों और जिन बातों को हराम (जिनका करना किसी तरह ठीक नहीं है) और नाजायज़ कर दिया है। उनसे बचें और उनके पास भी न जायें और उसके दण्ड से डरते रहें। कुरआन और हदीस में बहुत बल के साथ और बार-बार इस तक़वे की शिक्षा दी गई है। हम केवल कुछ आयतें (क़ुरआन के वाक्य) और हदीसें (रसूल के कथन) यहाँ अंकित करते हैं।

सूरए आल इमरान में फ़रमाया गया है :–

या+ऐयु हल्लज़ी+न+आ+म+नुत्तक़ुल्ला+ह+हक+क़+तुक़ातिही वला तमूतुन+न+इल्ला व+अन्तुम मुसलिमून [सूरए आले इमरान रूकू ११]

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقٰتِهٖ وَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ

"हे ईमानवालो अल्लाह से डरो जैसा कि उससे डरना चाहिये (और अन्तिम श्वास तक खुदा से डरते हुए उस की आज्ञा पालन करते रहो) यहाँ तक कि तुमको इसी आज्ञा पालन की दशा में मौत आए ।

और सूरए तग़ाबुन में फ़रमाया :–

फ़त्तक़ुल्ला+ह+मस+त+तातुम वस्मऊ व अतीऊ (सूरए तग़ाबुन रूकू २]

فَاتَّقُوا اللّٰهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ وَاسْمَعُوْا وَاَطِيْعُوْا

अल्लाह से डरो और तक़वा [डर] धारण करो जितना भी तुमसे हो सके और उसके समस्त आदेश सुनो और मानो ।

और सूरए हश्र में फ़रमाया गया हैं :–

या+ अय्युहल्लज़ी+न+आमनुत + तकुल्ला +ह + वल + तन्ज़ुर+नफ़सुम+मा+क़द्दमत लिग़द+वत्तकुल्लाह+इन्नल्ला+ह+ख़बीरुम+बिमाता+मलून+ [अल+हश्र रूकू ३]

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَلْتَنظُرْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ

ऐ ईमान वालो ! अल्लाह से डरो [और तक़्वा धारण करो] और प्रत्येक व्यक्ति को चाहिये कि वह देखे और ध्यान देकर सोचे कि उसने कल के लिये (अर्थात् आख़िरत के लिये) क्या कार्य किये हैं और देखो अल्लाह से डरते रहो वह तुम्हारे सब कार्यों से पूर्ण रूप से जानकारी रखता है।

क़ुरआन शरीफ़ ही से ज्ञात होता है कि जो लोग अल्लाह तआला से डरें और तक़्वा और परहेज़गारी के साथ जीवन व्यतीत करें। दुनिया में भी उन पर अल्लाह तआला की विशेष दया दृष्टि रहती है और अल्लाह तआला उनकी बड़ी सहायता करता है।

व मैंयत्तक़िल्ला+ह+यजअल्लहू मख़+र+जंव+वयर+ज़ुक़+हु+मिन हैसुला यह+तसिब (सूरए अत्तलाक़, रूकू १)

وَمَن يَتَّقِ اللَّهَ يَجْعَل لَّهُ مَخْرَجًا وَيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ

और जो लोग डरें अल्लाह से तो अल्लाह उनके वास्ते मार्ग पैदा कर देता है और उनको ऐसे साधनों से रोज़ी देता है जिसका उनको अनुमान भी नहीं होता।

क़ुरआन शरीफ़ ही से यह भी ज्ञात होता है कि जिन लोगों में तक़्वा होता है वह अल्लाह के वली (मित्र) होते हैं। और फिर उनको किसी दूसरी वस्तु का डर और शोक तनिक भी नहीं

होता। फ़रमाया गया है कि—

अला इन+न+औलिया अल्लाहि ला ख़ौफ़ुन अलैहिम वला हुम यह+ज़नून+अल्लज़ी+न+आ+मनू व कानू यत्तक़ून लहुमुल बुशरा फ़िल+हयातिद्दनया+व+फिल+आख़िरह (अध्याय यूनुस रूकू ७)

أَلَآ إِنَّ أَوْلِيَآءَ اللّٰهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ۝ لَهُمُ الْبُشْرٰى فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِى الْاٰخِرَةِ ط

याद रखना चाहिये कि जो अल्लाह के वली होते हैं उन्हें कोई डर और शोक नहीं होता। यह वह लोग होते हैं जो सच्चे मोमिन और मुत्तक़ी (तक़्वा रखने वाले) हों उन के वास्ते (ख़ुश ख़बरी) है दुनिया के जीवन में भी और आख़िरत में भी।

इन मुत्तक़ी (तक़्वा रखने वाले) और परहेज़गार लोगों को जो नेमतें आख़िरत में मिलने वाली है उनका कुछ वृतांत इस आयत में वर्णन किया गया है :—

कुल+अ+उ+नब्बिउकुम बिख़ैरिम+मिन ज़ालिकुम लिल लज़ी+नत्तक़ौ इन+द+रब्बि हिम जन्नातुन तजरी मिन तहतिहल अनहारू ख़ालिदीन फ़ीहा व अज़्वा जुम+मुतह+ह+र+तुंव+वरिज़+वानुम+मिन ल्लाहि वल्लाहु बसीरूम बिल इबाद (सूरए आले इमरान रूकू २)

قُلْ أَؤُنَبِّئُكُمْ بِخَيْرٍ مِّنْ ذَٰلِكُمْ لِلَّذِينَ اتَّقَوْا عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَأَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ وَرِضْوَانٌ مِّنَ اللَّهِ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِالْعِبَادِ

(हे रसूल, इन लोगों से) आप कहिये क्या मैं तुम्हें वह चीज़ बताऊँ जो तुम्हारी इस दुनिया की तमाम इच्छानुसार वस्तुओं से और लज़्ज़तों से अधिक अच्छी है (सुनो) उन लोगों के लिये जो अल्लाह से डरें और तक़्वा वाली ज़िन्दगी धारण करें। उनके मालिक के पास ऐसी वाटिकाएँ जन्नत की हैं जिनके नीचे नहरें बहती हैं उन में वह सदैव रहेंगे और वहाँ उनके लिये ऐसी पत्नियाँ हैं जो बिलकुल पाक, साफ़ और स्वच्छ हैं (और उनके लिये) अल्लाह की रज़ामंदी और प्रसन्नता है और अल्लाह तआला ख़ूब देखता है अपने सब बन्दों को (सबका खुला और छिपा हाल उसकी दृष्टि में है)

इस सम्बन्ध में सूरए स्वाद को यह आयत (वाक्य) और सुन लीजिए।

वइन्न + न + लिल + मुत + तक़ी + न + लहुस + न + मआब + जन्नाति अदनिम + मुफ़त + त + हतललहुमुल + अबवाब + मुत्त + त + किई + न + फ़ीहा यदऊ + न + फ़ीहा + बिफ़ाकि + हतिन कसी + रतिव + व + शराब + वइन्न + दहुम + क़ासिरातुत + तर्फ़ि + अतराब हाज़ा + मा + तूअदू + न + लियौमिलहिसाब + इन्न + हाज़ा + लरिज़ + क़ुना + मा + लहू + मिन + नफ़ाद + (सूरए स्वादरूक ४)

وَإِنَّ لِلْمُتَّقِينَ لَحُسْنَ مَآبٍ ۝ جَنّٰتِ عَدْنٍ مُّفَتَّحَةً لَّهُمُ الْأَبْوَابُ ۝ مُتَّكِئِينَ فِيهَا يَدْعُونَ فِيهَا بِفَاكِهَةٍ كَثِيرَةٍ وَشَرَابٍ ۝ وَعِندَهُمْ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ أَتْرَابٌ ۝ هٰذَا مَا تُوعَدُونَ لِيَوْمِ الْحِسَابِ ۝ إِنَّ هٰذَا لَرِزْقُنَا مَا لَهُ مِن نَّفَادٍ ۝

और निस्सन्देह अल्लाह से डरने वाले बन्दों के लिए बहुत ही अच्छा ठिकाना है। वाटिकाएं हैं सदा बहार सदैव रहने के लिए। खुले हुए हैं उनके लिए दरवाज़े। बैठे हैं उनमें तकिया लगाए। मँगाते हैं सेवकों से मेवे और शरबत। और उनके पास स्त्रियां हैं नीची दृष्टि वाली। सब एक आयु की। यह है वह पारितोषिक जिसके लिए वचन दिया जा रहा है तुमसे हिसाब के दिन के लिए। निस्सन्देह यह है हमारी रोज़ी जिसके लिये कभी निबड़ना नहीं।

और पवित्र क़ुरआन ही में डरने वाले बन्दों को यह शुभ समाचार भी सुनाया गया है कि अपने पालनहार की विशेष समीपता उनको प्राप्त होगी सूरए क़मर की अन्तिम आयत है।

इन्नल मुत्तक़ी +न +फ़ी +जन्नातिवंव+ नहरिन+फ़ीमक़+आदि सिदक़िन इन+द+मलीकिम+मुक़+तदिर (सूरए क़मर ३)

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنّٰتٍ وَّنَهَرٍ ۝ فِي مَقْعَدِ صِدْقٍ عِندَ مَلِيكٍ مُّقْتَدِرٍ

"डरने वाले बन्दे आख़िरत में जन्नतकी वाटिकाओं और नहरों में रहेंगे। एक अच्छे स्थान में पूर्ण अधिकार रखने वाले वास्तविक मालिक के समीप"।

पवित्र क़ुरआन में यह भी घोषित किया गय है कि अल्लाह तआला के वहां सम्मान और प्रतिष्ठा केवल तक़वे पर निर्भर है।

इ+न+अक+र+म+कुम+इन+दल्लाहि अत+क़ाकुम (सूरए हुजुरात रूक २)

إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللَّهِ أَتْقَاكُمْ

तुम में सब से अधिक सम्मान का पात्र अल्लाह की दृष्टि में वह है जो तक़वे (परहेज़गारी) में बड़ा है।

इसी प्रकार रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भी एक हदीस में फ़रमाया है :—

मुझसे बहुत समीप और मुझे अधिक प्यारे लोग हैं जिनमें तक़वे का गुण है चाहे वह किसी भी जाति और कुल से हों और किसी भी देश में रहते हों।

तक़वा अर्थात ख़ुदा का डर और आख़िरत की चिन्ता सारी नेकियों की जड़ है। जिस व्यक्ति में जितना तक़वा होगा उसमें उतनी ही नेकियां और अच्छाइयां इकट्ठा होंगी और उतना ही वह बुरे कार्यों और बुरी बातों से दूर होगा हदीस शरीफ़ में है कि :—

रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के एक सहाबी (सत संगी) ने आपकी सेवा में कहा कि हजरत मैंने आपके बहुत से कथन और बहुत से आदेश सुने हैं और मुझे भय है कि यह सारे निर्देस और उपदेश

मुझे याद न रह सके अतः आप कोई एक उपदेश दें मेरे लिए पर्याप्त हो। आपने फ़रमाया :—

कि अपने ज्ञान और अपनी जानकारी की सीमा तक खुदा से डरते रहो। और इसी भय और चिन्ता और तक़वे (परहेज़गारी) के साथ जीवन व्यतीत करो।

अर्थात यदि यही एक बात तुमने याद रक्खी और इसी के अनुसार कर्म किये तो बस यही तुम्हारे लिये सफलता का साधन है।

एक दूसरी हदीस में है रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि :—

जिसको डर होगा वह प्रातः चल पड़ेगा और जो सवेरे चल पड़ेगा वह ठिकाने पर नियुक्त समय पर पहुँच जायेगा।

अतः भाग्यवान और सफल वही लोग हैं जो अल्लाह से डरें और आखिरत की चिन्ता रक्खें।

खुदा के खौफ़ से और उसके दण्ड के डर से यदि एक आँसू भी आँख से निकले तो अल्लाह तआला के यहाँ उसका बड़ा मान है।

हदीस शरीफ़ में है कि :—

अल्लाह तआला को आदमी की दो बूंदों और उसके दो चिन्हों से अधिक कोई वस्तु प्यारी नहीं है। अतः दो बूंद जो अल्लाह को बहुत प्यारें हैं उनमें से एक तो आँसू की बूंद है जो अल्लाह के डर से किसी आँख

से निकली हो और दूसरी रक्त की वह बूंद है जो खुदा की राह में किसी के शरीर से बही हो और जो दो चिन्ह अल्लाह को बहुत प्रिय हैं उनमें एक तो वह चिन्ह है जो खुदा की राह में किसी को लगा हो (अर्थात् जिहाद में घाव लगा हो और उसका चिन्ह रह गया हो) और दूसरा वह चिन्ह जो अल्लाह के नियुक्त किये हुए कर्तव्यों का पालन करने से पड़ गया हो (जैसा कि नमाज़ियो के माथों और घुटनों में चिन्ह पड़ जाते है।)

एक दूसरी हदीस में है कि :—

"ऐसा आदमी कभी नरक (जहन्नम) में नही जा सकता जो अल्लाह के डर से रोता हो।"

सरांश यह कि खुदा का सच्चा डर और आख़िरत की चिन्ता यदि किसी के भाग्य में आ जाय तो बड़ी बात है और इसी डर और चिता से मनुष्य का जीवन सोना बन जाता है।

भाइयों भली भाँति समझ लो कि इस कुछ दिनों वाली दुनिया में जो खुदा से डरता रहेगा मरने के पश्चात् आख़िरत के जीवन में उसको कोई डर और शोक न होगा और वह अल्लाह तआला की दया दृष्टि से सदैव ही प्रसन्न रहेगा और बड़े चैन से रहेगा। और जो यहां खुदा से डरेगा और आख़िरत की चिता न करेगा और दुनिया ही के स्वादों मैं मस्त रहेगा वह आख़िरत में बड़े दुख उठाएगा और हजारों वर्ष खून के आँसू रोए गा।

तक़्वा अर्थात् खुदा का डर और आख़िरत की चिंता पैदा

होने का सबसे बड़ा साधन अल्लाह के उन नेक बन्दों का सत्संग है जो ख़ुदा से डरते हों और ख़ुदा की आज्ञाओं का पालन करते हों। दूसरा साधन धर्म के अच्छे और प्रमाणिक ग्रन्थों का पढ़ना और सुनना है और तीसरा साधन यह है कि अकेले में बैठ बैठ कर अपनी मौत का ध्यान जमाए और मरने के पश्चात् अल्लाह की ओर से नेकियों पर जो प्रतिफल और पापों पर जो दण्ड मिलने वाला है उसको याद करे और उसका ध्यान जमाए और अपनी दशा पर विचार करे और सोचे कि क़ब्र में मेरी क्या दशा होगी और क़यामत में जब सब बन्दे उठाए जायेंगे तो उस समय मेरी दशा क्या होगी। और जब ख़ुदा के सामने उपस्थित होना पड़ेगा और मेरा आमाल नामा (कर्मों का ब्योरा) मेरे सामने खोला जायगा तो मैं क्या उत्तर दूंगा और कहाँ मुंह छिपाऊंगा। जो व्यक्ति इन साधनों का प्रयोग करेगा इनशाअल्लाह (यदि ख़ुदा ने चाहा) उसको तक़वा अवश्य प्राप्त होजाये गा। अल्लाह तआला हम सब को नसीब करे।

सातवाँ पाठ

आपस के व्यवहारों में सच्चाई और ईमानदारी तथा शुद्ध कमाई और दूसरों के अधिकार पूर्ति का महत्व

आपस के व्यवहारों में सच्चाई और ईमानदारी की शिक्षा भी इस्लाम की बुनियादी शिक्षा में है ।

कुरआन शरीफ़ से और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीसों से ज्ञात होता है कि असली मुसलमान वही है जो अपने व्यवहार में और अपने कामों तथा धन्धों में सच्चा और ईमानदार हो, वादे का सच्चा और प्रण का पक्का हो । अर्थात धोखा और छल न देता हो और अमानत में खयानत न करता हो, किसी का हक़ न मारता हो, नाप तौल में कमी न करता हो, झूठे मुकद्दमे न लड़ाता हो और न झूठी गवाही देता हो । सूद ब्याज और रिश्वत जैसी हराम कमाइयों से बचता हो और जिसमें यह बुराइयां मौजूद हों कुरआन और हदीस से ज्ञात होता है कि वह असली मुसलमान और खरा मोमिन नहीं है वरन एक प्रकार का मुनाफ़िक़ है, और घोर नाफ़र्मान है । अल्लाह तआला हम सबको इन बुरी बातों से बचाए । इस बारे में कुरआन तथा हदीस में जिस महत्व का वर्णन है उसका थोड़ा सा भाग हम यहाँ प्रस्तुत करते हैं । कुरआन शरीफ़ की छोटी सी आयत है ।

या अययुहल्लजी+न+आ+म+नूला+ता+कुलू+अमवा+लकुम+बै+नकुम बिल+बातिलि ।

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوْٓا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ

"ऐ ईमान वालों तुम किसी अशुद्ध और नियम विरुद्ध प्रकार से दूसरों का माल न खाओ ।

इस आयत ने कमाई के उन समस्त साधनों को मुसलमानों के लिये हराम (वर्जित) कर दिया है जो अशुद्ध और नियम विरुद्ध हैं जैसे धोके फ़रेब का व्यापार, अमानत में खयानत जुवा, सट्टा और सूद ब्याज रिश्वत घूस आदि । फिर दूसरी आयतों में अलग-अलग विस्तार पूर्वक वर्णित किया गया है । उदाहरणार्थ जो दुकानदार और सौदागर नापतौल में धोखाबाजी और बेईमानी करते हैं उनके बारे में विशेष रूप से फ़रमाया गया है ।

वैलुल + लिल + मुतफ़ + फ़फ़ी + नल्लजी + न + इज़्क + तालू अलन्नासि यस्तौफ़ + न + वइजा कालू हुम ओ + व + ज़ नूहुम युखसिरून + अला + यज़ुन्नु + उलाइ + क + अन्नहुम + मबऊसू + न + लियौमिन + अज़ीम यौ + म + यकूमन्नासु लिरब्बिल + आ लमीन + (सूरए ततफ़ीफ़)

وَيْلٌ لِّلْمُطَفِّفِيْنَ ○ الَّذِيْنَ اِذَا اكْتَالُوْا عَلَى النَّاسِ يَسْتَوْفُوْنَ ○ وَاِذَا كَالُوْهُمْ اَوْ وَّزَنُوْهُمْ يُخْسِرُوْنَ ○ اَلَا يَظُنُّ اُولٰٓئِكَ اَنَّهُمْ مَّبْعُوْثُوْنَ ○ لِيَوْمٍ عَظِيْمٍ يَّوْمَ يَقُوْمُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ○

"इन कम देनेवालों के लिये बड़ी खराबी और बड़ा दण्ड है जो दूसरे लोगों से जब नाप कर लेते हैं तो पूरा लेते हैं और जब

स्वयं दूसरों के लिये नापते हैं तो कम देते हैं। क्या उनको यह ख़्याल नहीं है कि वह एक बहुत बड़े दिन उठाये जायंगे जिस दिन कि सारे लोग प्रतिफल और दण्ड के लिए सारे संसार के पालनहार के सम्मुख उपस्थित होंगे।

दूसरों के अधिकार और दूसरों के धरोहर अदा करने के लिए विशेष रूप से आदेश हैं :—

इन + नल + लाह + या + मुरुकुम + अन्त + उद्दूल + अमा + नत + इला + अह + लिहा। (सुरतुन्निसा)

إِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُكُمْ أَنْ تُؤَدُّوا الْأَمٰنٰتِ إِلٰٓى أَهْلِهَا

अल्लाह तआला तुमको यह आदेश देता है कि जिन लोगों की जो अमानतें (और जो हक़) तुम पर हों उन को ठीक ठीक अदा करो।

और कुरआन शरीफ ही में दो[1] जगह असली मुसलमानों की यह विशेषता और उनका यह लक्षण बताया गया है कि :—

वल + लज़ी + न + हुम + लि + अमा + नाति + हिम + व + अह + दि + हिम + राऊन।

وَالَّذِينَ هُمْ لِأَمٰنٰتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رٰعُونَ

"वह जो धरोहरों के अदा करनेवाले और वचनों की प्रतिष्ठा करनेवाले हैं।

और हदीस शरीफ़ में है कि रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने अधिकतर भाषणों तथा उपदेशों में फ़रमाया करते थे कि :—

१. एक सूरए मोमिनून में और दूसरे सूर-ए-मआरिज में।

"याद रक्खो जिसमें अमानत का गुण नहीं उसमें ईमान भी नहीं और जिसको अपने वचनों तथा वादे का पास नहीं उसमें धर्म का कोई अंश नहीं।

एक और हदीस में है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया :-

"मुनाफ़िक के तीन चिन्ह हैं—झूठ बोलना, अमानत में खयानत करना और वादा पूरा न करना।

बनिज तथा व्यापार में धोखा फरेब करने वालों के सम्बन्ध में आपने फ़रमाया :-

"जो धोखेबाजी करे वह हमसे नहीं और छल तथा कपट नर्क में ले जानेवाली वस्तु है।

यह वचन हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस समय अपने मुखारविन्द से उच्चारित किया जब कि एक बार मदीने के बाज़ार में आपने एक व्यक्ति को देखा कि बेचने के लिए उसने ग़ल्ले (अनाज) का ढेर लगा रक्खा है परन्तु ऊपर सूखा अनाज डाल रक्खा है और भीतर कुछ गीलापन है उस पर हुजूर ने यह फ़रमाया कि :-

"ऐसे धोखेबाज़ हमारे संघ से अलग है।"

अतएव जो दुकानदार ग्राहकों को माल का अच्छा नमूना दिखाएं और जो अवगुण हो उसको प्रकट न करें तो हुजूर की इस हदीस के अनुसार वह सच्चे मुसलमानों में से नहीं हैं और खुदा न करे कि नर्क में जाने वाले हैं। एक और हदीस में है हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि :-

"जो कोई ऐसी वस्तु किसी के हाथ बेचे जिसमें कोई दोष और त्रुटि हो और ग्राहक पर वह इसको प्रकट न

करे तो ऐसा व्यक्ति सदैव अल्लाह के क्रोध मे ग्रस्त रहेगा [और एक दूसरी व्याख्या में है]कि सदैव अल्लाह के फरिश्ते उस पर लानत करते रहेगें ।'

सारांश यह कि इसलामी शिक्षा के अनुसार व्यापार और व्यवहार में हर प्रकार की धोखेबाजी और जाल हराम और लानती कार्य है और रसूलुल्लाहि सल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ऐसा करने वालों से अपना सम्बन्ध काटने की घोषणा की है और उनको अपने समूह से पृथक बताया है ।

इसी प्रकार सूद ब्याज और घूस का लेन देन भी (चाहे दोनों ओर की रज़ामन्दी से हो) बिलकुल हराम है और उनके लेने देने वालों पर हदीसों में साफ़ साफ़ लानत आई है । ब्याज के सम्बन्ध में तो प्रसिद्ध हदीस है कि हुज़ूर सल्लस्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया :—

अल्लाह की लानत (शाप) हो सूद के लेने वाले पर और देने वाले पर और सूदी दस्तावेज़ लिखने वाले पर और उसके गवाहों पर—

और इसी प्रकार घूस के बारे में हदीस शरीफ़ में है कि :—

"रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने लानत (शाप) फ़रमाई है रिश्वत के लेने वाले पर और देने वाले पर ।

एक हदीस में यहाँ तक है कि :—

"जिस व्यक्ति ने किसी मनुष्य के प्रति किसी कार्य में (उचित और सत्य) सुफ़ारिश की फिर उस मनुष्य ने उस सुफ़ारिश करने वाले को कोई भेंट की और उसने यह

भेंट स्वीकार कर ली तो यह भी उसने बड़ा अपराध किया (अर्थात् यह भी उस पर एक प्रकार की घूस और एक प्रकार का सूद हुआ)।

सारांश यह कि घूस और सूद का लेन देन और व्यापार में धोखाधड़ी और बेईमानी इस्लाम में हराम हैं और इन सबसे बढ़कर हराम यह है कि झूठी गवाही और झूठी मुक़दमेबाज़ी द्वारा अथवा ज़ोर ज़बरदस्ती से किसी दूसरे की वस्तु पर अनुचित-ढंग से अधिकार कर लिया जाए।

एक हदीस में है :—

जिस व्यक्ति ने किसी की भूमि के कुछ भी भाग पर न्याय विरुद्ध अधिकार जमा लिया तो क़ियामत के दिन उसको यह दण्ड दिया जायगा कि भूमि के उस भाग के साथ उसको भूमि में धँसा दिया जायगा यहाँ तक कि सबसे नीचे के भाग तक धंसता चला जायेगा।

एक और हदीस में है कि :—

जिस व्यक्ति ने (राजाधिकारी के सम्मुख) झूठी सौगन्द खाकर किसी मुसलमान की किसी वस्तु को न्याय विरुद्ध साधन से प्राप्त कर लिया तो अल्लाह ने उसके लिये दोज़ख़ की आग अनिवार्य कर दी है और जन्नत उसके लिये हराम कर दी है। यह सुनकर किसी ने कहा कि हे अल्लाह के रसूल ! यद्यपि यह कोई साधारण ही वस्तु हो ? आपने फ़रमाया "हां यद्यपि वह पीलू के जंगली वृक्ष की टहनी ही क्यों न हो।"

एक और हदीस में है कि रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि

व सल्लम ने एक मुकद्दमावाज़ को सचेत करते हुए फ़रमाया ।

"देखो जो व्यक्ति झूठी सौगन्ध खाकर किसी दूसरे का कोई भी माल न्याय विरुद्ध साधन से प्राप्त करेगा वह समान रूप से क़ियामत में अल्लाह के सामने कोढ़ी होकर उपस्थित होगा ।

एक और हदीस में है कि :–

"जिस किसी ने किसी ऐसी वस्तु पर दावा किया जो वास्तव में उसकी नहीं है तो वह हममें से नहीं है और उसे चाहिए कि दोज़ख [नर्क] में अपना स्थान बना ले ।

झूठी गवाही के बारे में एक हदीस में है कि :–

"हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक दिन प्रातःकाल की नमाज पढ़कर खड़े हो गये और आपने एक विशिष्ट ढंग से तीन बार फ़रमाया कि झूठी गवाही शिर्क [खुदा के लिये साझी ठहराना] के बराबर कर दी गई है ।

हराम माल की अपवित्रता तथा नहूसत :—

माल प्राप्त करने के जिन नियम-विरुद्ध और हराम साधनों का ऊपर वर्णन किया गया है उनके द्वारा जो धन भी प्राप्त होगा वह हराम और नियम विरुद्ध होगा । और जो व्यक्ति उसका प्रयोग अपने खाने पहनने में करेगा। रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कथन है कि उसकी नमाज़ें स्वीकार न होंगी, प्रार्थनाएं स्वीकार न होंगी यहाँ तक कि यदि वह उस धन से कोई अच्छा कार्य करेगा तो वह भी अल्लाह के यहाँ स्वीकार न होगा और आखिरत में वह अल्लाह की विशिष्ट रहमतों से वंचित रहेगा ।

एक हदीस में है कि :–

"जो व्यक्ति [किसी नियम-विरुद्ध साधन से] कोई हराम धन प्राप्त करेगा और उस धन से दान करेगा तो उसका यह दान स्वीकार न होगा। और उसमें जो कुछ [अपनी आवश्यकताओं में] व्यय करेगा उसमें बरकत न होगी और यदि उसको छोड़ कर मरेगा तो वह उसके लिये नर्क की पूंजी होगी, विश्वास करो कि अल्लाह बुराई को बुराई से नहीं मिटाता [अर्थात हराम धन दान में दे देना पापों की क्षमा का साधन नहीं बन सकता] वरन् अल्लाह बुराई को नेकी से मिटाता हैं। कोई अपवित्रता दूसरी अपवित्रता को नष्ट करके उसको पवित्र नहीं कर सकती।

एक दूसरी हदीस में है कि :–

"अल्लाह तआला स्वयं पवित्र है और वह पवित्र एवं हलाल [नियमानुसार कमाया हुआ धन] धन ही को स्वीकार करता है–इस हदीस क अन्तिम भाग में अल्लाह के पवित्र रसूल ने एक ऐसे व्यक्ति का वृतान्त दिया–जो बड़ी लम्बी यात्रा करके [किसी विशेष पवित्र स्थान पर प्रार्थना करने के लिये] इस दशा में आवे कि उसके बाल बिखरे हुए हों और सिर से पाँव तक वह धूल में अटा हुआ हो और आकाश की ओर वह दोनों हाथ उठा उठा कर लीनतापूर्वक रो रो कर प्रार्थना करे और कहे "ऐ मेरे पालने वाले! हे मेरे पालनहार! परन्तु उसका खाना पीना हराम धन से हो और उसका वस्त्र

भी हराम का हो और हराम धन ही से उसका पालन पोषण भी हुआ हो तो इस दशा में उसकी यह प्रार्थना कैसे स्वीकार होगी।"

अर्थ यह है कि जब खाना पीना सब हराम धन से हो तो प्रार्थना की स्वीकृति की योग्यता और अधिकार नहीं रहता। एक दूसरी हदीस में है कि—

"यदि कोई एक कपड़ा दस दिरहम[1] में मोल ले और उस दस दिरहम में से एक दिरहम हराम धन से आया हो तो जब तक वह कपड़ा उसके शरीर पर रहेगा उस व्यक्ति की कोई नमाज भी अल्लाह के दरबार में स्वीकार न होगी।"

एक और हदीस में है कि —

"जो शरीर हराम धन से पला हो वह जन्नत में न जा सकेगा।

भाइयों हमारे हृदय में यदि कण मात्र भी ईमान है तो अल्लाह के पवित्र रसूल के इन पवित्र कथनों को सुनकर हमको निश्चित रूप से निर्णय कर लेना चाहिये कि हमको दुनिया में चाहे जितनी निर्धनता और चाहे जितने दुख से जीवन व्यतीत करना पड़े परन्तु हम कदापि किसी नियम विरुद्ध साधन से कोई पैसा कमाने का प्रयत्न नहीं करेंगे और केवल पवित्र और स्वच्छ कमाई ही पर सन्तुष्ट रहेंगे।

पवित्र कमाई और ईमानदारी का व्यवहार :—

इस्लाम में जिस प्रकार कमाई के अपवित्र और नियम विरुद्ध

१. एक सिक्का

साधनों को हराम और उनके द्वारा प्राप्त होने वाले धन को अपवित्र और भ्रष्ट बताया गया है उसी प्रकार हलाल [नियमानुनुसार] साधनों से भोजन प्राप्त करने और ईमानदारी के साथ व्यापार तथा व्यवहार करने की बड़ी प्रशंसा की गई है ।

एक हदीस में है कि —

"हलाल [नियमानुसार] कमाई की खोज भी धर्मशास्त्र के नियुक्त किये हुए अनिवार्य कर्तव्यों के पश्चात एक अनिवार्य कर्त्तव्य है ।

एक दूसरी हदीस में अपने परिश्रम से भोजन कमाने की उत्तमता का वर्णन करते हुए पवित्र रसूल ने अपने मुखारविन्दु से कथन किया कि —

"किसी ने अपना भोजन उससे उत्तम साधन से प्राप्त नहीं किया कि उसने स्वयं अपने भुजबल से परिश्रम किया हो, और अल्लाह के नबी दाऊद [उन पर अल्लाह का सलाम हो] की यही रीति थी कि वह अपने हाथ से कुछ कार्य करके अपना भोजन प्राप्त करते थे ।"

एक और हदीस में है कि—

"सच्चाई और ईमानदारी के साथ कार्य करने वाला व्यापारी [कियामत में] नबियों, सिद्दीकों [सच्चों] तथा शहीदों के साथ होगा ।"

व्यवहारों में नम्रता और दयालुता :—

आर्थिक व्यवहार और कार्यों में जिस प्रकार सच्चाई और ईमानदारी पर इस्लाम में अधिकतर बल दिया गया है और उस

को उच्चकोटि की नेकी और अल्लाह की समीपता का साधन माना गया है इसी प्रकार इसकी भी बड़ी चेष्टा उत्पन्न कराई गई है और बड़ी उत्तमता वर्णन की गई है कि व्यवहार और लेन देन में नम्रता का ढंग अपनाया जाय और कड़ा व्यवहार न किया जाय। एक हदीस में आया है कि :–

"अल्लाह की दया हो उस बन्दे पर जो बेचने और मोल लेने में और दूसरों से अपना अधिकार प्राप्त करने में नम्र हो।"

एक दूसरी हदीस में है कि :--

"जो व्यक्ति किसी विनीत तथा निर्धन बन्दे को [ऋण चुकाने में] समय दे या [पूर्ण रूप से अथवा कोई आंशिक रूप से अपना मतालबा] क्षमा कर दे तो अल्लाह उसको कियामत के दिन की कठिनाइयों से मुक्त कर देगा। एक दूसरे वृतान्त में है कि कियामत के दिन अल्लाह तआला उसको अपनी दयालुता की छाया में स्थान प्रदान करेगा।"

पवित्र रसूल के इन पवित्र कथनों का सम्बन्ध तो व्यापारियों और उन धनवानों से है जिनसे निर्धन लोग अपनी आवश्यकताओं में उधार लेकर काम चलाते हैं परन्तु जो लोग किसी से उधार लें तो उनको रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस बात की बड़ी ताकीद फ़रमाते थे कि यथासम्भव वह ऋण चुकाने का प्रयत्न शीघ्र करें ताकि कहीं ऐसा न हो जाय कि वह उधार चुकाने से पूर्व ही परलोक सिधारें और उनके ऊपर दूसरे का हक बाकी रह जाये। इस बारे में आप जितना बल देते थे उसका अनुमान निम्न-

लिखित पवित्र कथनों अर्थात हदीसों से हो सकता है ।

एक हदीस में है कि :—

"यदि कोई व्यक्ति अल्लाह की राह में शहीद हो जाय तो उसकी शहादत के यश में उसके समस्त पाप क्षमा कर दिये जायेंगे । परन्तु यदि किसी का ऋण उसके ऊपर लदा हुआ है तो उसके इस ऋण वाले भार का बोझ उसकी शहादत न उतार सकेगी ।"

एक और हदीस में है कि :—

"उस पालनहार की सौगन्ध जिस के वश में मुहम्मद [उन पर सलाम] के प्राण हैं कि यदि कोई व्यक्ति खुदा की राह में शहीद हो फिर जीवित किया जाय और फिर शहीद हो और फिर जीवित किया जाय और फिर शहीद हो और उसके ऊपर उधार का भार हो तो [इस उधार का निर्णय हुये बिना] वह शहीद जन्नत में न जा सकेगा ।"

आर्थिक व्यवहार और अन्य व्यक्तियों के हक के महत्व का अनुमान करने के लिए केवल यही दो हदीसें यथेष्ट हैं । अल्लाह तआला सहायता करें कि हम भी इनके महत्व और बारीकी को समझें और सदैव इसका प्रयत्न करते रहें कि किसी बन्दे का कोई हक हमारी गरदन पर न रह जाय ।

आठवाँ पाठ

सामाजिक जीवन के आदेश और शिष्टाचार तथा पारस्परिक अधिकार

सामाजिक शिष्टाचार और अधिकार की शिक्षा भी इस्लाम की विशेष और महत्वपूर्ण शिक्षाओं में से है। और एक मुसलमान सच्चा और पक्का मुसलमान तब ही हो सकता है जब कि वह इस्लाम के सामाजिक आदेशों का भी पूर्ण रूप से पालन करे। सामाजिक आदेशों से हमारा अभिप्राय पारस्परिक व्यवहार की वह रीति नीति हैं जो इस्लाम ने सिखाई है। जैसे यह कि संतान का व्यवहार माता पिता के साथ कैसा हो और माता पिता का बरतावा संतान के साथ किस प्रकार का हो। एक भाई दूसरे भाई के साथ किस प्रकार पेश आए, बहिनों के साथ किस प्रकार का सुलूक किया जाय, पति पत्नी किस प्रकार आपस में जीवन व्यतीत करें, छोटे अपने बड़ों के सामने किस प्रकार रहें और बड़े छोटों के साथ कैसा बरताव करें। पड़ोसियों के साथ हमारा रवय्या क्या हो। धनवान निर्धनों के साथ किस प्रकार का सुलूक करें, और निर्धन धनवानों के साथ कैसा व्यवहार रक्खें। स्वामी का सम्बन्ध नौकर के साथ और नौकर का व्यवहार स्वामी के साथ कैसा हो। सारांश यह कि इस सांसारिक जीवन में अनेक

प्रकार की श्रेणी के जिन छोटे बड़े लोगों से हमारा सम्पर्क रहता है उनके साथ बरताव और रहन सहन के बारे में इस्लाम ने हमको जो परिपूर्ण तथा प्रज्वलित और कान्ति युक्त निर्देश दिये हैं वही सामाजिक आदेश और शिष्टाचार हैं और इस पाठ में हम उन्हीं का कुछ वर्णन करना चाहते हैं ।

माता पिता के अधिकार और उनके साथ शिष्टाचार :—

इस संसार में मनुष्य का सर्वप्रथम और सर्वश्रेष्ठ सम्बंध माता पिता से है । इस्लाम ने अल्लाह के अधिकार के पश्चात सब से बड़ा अधिकार माता पिता ही का बतलाया है ।

कुर्आन शरीफ़ में है ।

व + क़ज़ा + रब्बु + क + अल्ला + ताबु + दू + इल्ला + ईयाहु व बिल वालिदैनि इहसानन + इम्मा यबलुग़न + न + इन + दकल + कि + ब + र + अ + ह + दुहु मा औ किलाहुमा फ़ला + तक़ुल्लहुमा उफ़ + फ़िवं + वलातन हर हुमा व क़ुल्लहुमा क़ौलन + करीमा + वख़् फ़िज़ + लहुमा जना + हज़्ज़ुल्लि मिनरंह मति व क़ुर्रब्बिर हम हुमा कमा रब्ब यानी सग़ीरा [सूरए बनी इसरा ईल, रूकू ३]

وَقَضٰى رَبُّكَ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّآ اِيَّاهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا ۭ اِمَّا يَبْلُغَنَّ
عِنْدَكَ الْكِبَرَ اَحَدُهُمَآ اَوْ كِلٰهُمَا فَلَا تَقُلْ لَّهُمَآ اُفٍّ وَّلَا تَنْهَرْهُمَا وَقُلْ
لَّهُمَا قَوْلًا كَرِيْمًا ○ وَاخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ وَقُلْ رَّبِّ
ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيٰنِيْ صَغِيْرًا ○

और तेरे पालनहार ने अटल आदेश दिया है कि उस के सिवा तुम किसी की पूजा और बन्दगी न करो और माता पिता के साथ अच्छाई करो यदि इनमें से एक या दोनों तुम्हारे सामने बुढ़ापे को हहुँच जाएं तो उनको ऊँह भी न कहो और उनसे क्रुद्ध होकर न बोलो और उनसे शिष्टाचार पूर्वक बोलो और छोटे बनकर तथा कृतज्ञ होकर उनकी सेवा करो और उनके लिये खुदा से इस प्रकार प्रार्थना भी करते रहो कि हे पालनहार तू इन पर दया कर जैसे उन्होंने मुझको बचपन में प्रेम से पाला पोसा।

कुरआन शरीफ़ ही की दूसरी आयत में माता पिता के अधिकार वर्णन करते हुए यहाँ तक फ़रमाया गया है कि—

यदि मानलो कि किसी के माता पिता काफ़िर व मुशरिक हों और वह संतान पर भी कुफ्र व शिर्क के लिये दबाव डालें तो संतान को चाहिये कि उनके कहने से कुफ्र व शिर्क तो न करे परन्तु दुनिया में उनके साथ अच्छा व्यवहार करता रहे और उनकी सेवा करता रहे।"

आयत के शब्द यह हैं—

वइन+जाहदा+क+अला+अन+तुश्रि+क+बी+मा+लैं+स+ल+क+बिही इल्मुन फ़ला तुतीहुमा व साहिब हुमा फ़िद् नया मारुफ़ा (सूरए लुक़मान रुकू २)

وَإِنْ جَاهَدَاكَ عَلَىٰ أَنْ تُشْرِكَ بِي مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا

وصاحبهما فى الدنيا معروفا

कुर्आन शरीफ़ के अलावा हदीसों में भी माता पिता की सेवा

करने और उनका आज्ञाकारी होने पर अधिक बल दिया गया है और उनकी आज्ञा न मानने और उनको पीड़ित करने को घोर पाप बतलाया गया है।

एक हदीस में है कि :—

माता पिता की प्रसन्नता में अल्लाह की रज़ामन्दी है और माता पिता की अप्रसन्नता में अल्लाह की अप्रसन्नता है।

एक दूसरी हदीस में है :—

एक व्यक्ति ने हुज़ूर से पूछा कि सन्तान पर माता पिता के क्या अधिकार हैं आपने फ़रमाया सन्तान की जन्नत तथा दोज़ख़ माता पिता हैं (अर्थात उनकी सेवा से जन्नत मिल सकती है और उनकी आज्ञा का पालन न करना और उनके साथ अच्छा व्यहार न करना दोज़ख़ में ले जाने वाले कार्य हैं)।"

एक और हदीस में है आप ने फ़रमाया कि :—

माता पिता की सेवा तथा आज्ञापालन करने वाला पुत्र या पुत्री जितनी बार भी प्रेम और सम्मान की दृष्टि से माता पिता की ओर देखेगा तो अल्लाह तआला प्रत्येक दृष्टि के बदले में एक स्वीकार किये हुये हज का सवाब (प्रतिफल) उसके लिये लिख देते है।" लोगों ने हुज़ूर से प्रश्न किया कि हज़रत ! यदि वह प्रतिदिन सो बार देखें जब भी प्रत्येक बार के देखने के बदले में उसको क्या एक स्वीकृत हज का सवाब मिलेगा ? हुज़ूर ने फ़रमाया ! हां ! अल्लाह महान है और

बहुत पवित्र है। (अर्थ यह कि उसके यहाँ कोई कमी नहीं वह जिस कार्य पर जितना चाहे बदला दे सकता है)।"

एक हदीस में है :–

जन्नत माता पिता के चरणों के नीचे है।"

एक और हदीस में है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबए किराम को (महान संतसगियों को) सबसे बड़े पाप यह बतलाए :–

"किसी को अल्लाह का साझी ठहराना, माता पिता की आज्ञा का पालन न करना और झूठी गवाही देना"।

एक और हदीस में है कि हुज़ूर ने फ़रमाया :–

तीन प्रकार के मनुष्य हैं जिनकी ओर अल्लाह तआला क़ियामत के दिन दया दृष्टि से नहीं देखेगा। इनमें से एक प्रकार के वह लोग हैं जो माता पिता की आज्ञा का पालन नहीं करते है।"

सन्तान के अधिकार :–

इस्लाम ने जिस प्रकार सन्तान पर माता पिता के अधिकार नियुक्त किये हैं उसी प्रकार माता पिता पर भी सन्तान के कुछ अधिकार रक्खे हैं। जहाँ तक उनको खिलाने पिलाने और पहनाने के अधिकार का सम्बन्ध है उसके वर्णन करने की इस स्थान पर आवश्यकता नहीं है क्योंकि सन्तान के इस अधिकार का ध्यान हमको प्रकृति की ओर से है। हां सन्तात के जिस अधिकार को देने में हमसे साधारणत: चूक होनी है वह उनकी धर्मिक

और चारित्रिक देखभाल है। अल्लाह तआला ने हमारे लिये अनिवार्य किया है कि हम अपनी सन्तान और अपने बाल-बच्चो की देख रेख इस प्रकार करें कि वह जहन्नम (नर्क) में न जायँ।

क़ुरआन शरीफ़ में है :-

या अय्यु हल्लज़ी+न+आ+म+नू+क़ू+अन्फ़ु+स+कुम+व अहलीकुम नारा। (सूरए तहरीम रुकू—२)

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قُوا أَنفُسَكُمْ وَأَهْلِيكُمْ نَارًا

"ऐ ईमान वालो! अपने आपको और अपने बाल बच्चों को जहन्नम की आग से बचाओ"

औलाद (सन्तान) की अच्छी दीक्षा और देख रेख की श्रेष्ठता रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक हदीस में इस प्रकार वर्णन की है :—

"बाप की ओर से सन्तान के लिये, इससे अच्छा कोई दूसरा उपहार नहीं है कि वह उनकी अच्छी देखभाल करके उनको अच्छी शिक्षा दे दे।"

कुछ लोगों को अपनी सन्तान में बालकों से अधिक प्रेम और लगाव होता है और बेचारी बालिकाओं को वह बोझ समझते हैं और इस कारण उनकी देख रेख और दीक्षा में कमी करते हैं। इस कारण इस्लाम में बालिकाओं की अच्छी दीक्षा पर विशेष कर बल दिया गया है और इसकी बड़ी श्रेष्ठता बयान की गई है।

एक हदीस में है :—

"जिस व्यक्ति के बेटियां या बहनें हो और वह उनके साथ बहुत अच्छा व्यवहार करे और उनको अच्छी दीक्षा दे और उचित स्थान पर उनका विवाह करे तो अल्लाह तआला उसको जन्नत देगा।"

पति पत्नी के अधिकार :–

मनुष्यों के पारस्परिक सम्बन्ध में पति पत्नी का सम्बन्ध भी एक महत्वपूर्ण सम्बन्ध है और यों कहना उचित है कि उन दोनों का चोली दामन का साथ है। इस कारण इस्लाम ने इसके बारे में अत्यन्त साफ़ साफ़ महत्वपूर्ण निर्देश दिये हैं। इस बारे में इस्लाम की शिक्षा का सारांश यह है कि पत्नी को चाहिये कि अपने पति की पूर्ण रुप से शुभचिन्तक हो और उसकी आज्ञाओं का पालन करे और उसकी अमानत में (देख रेख के विश्वास में) किसी प्रकार की ख़यानत (चोरी और छल कपट) न करे।

क़ुरआन शरीफ़ में है :—

फ़स्सालिहातुन क़नितातु न हाफ़िज़ातुल लिल ग़ैबि (अन्निसा +अ रुकू ६)

فَالصّٰلِحٰتُ قٰنِتٰتٌ حٰفِظٰتٌ لِّلْغَيْبِ

'तो फिर, भली स्त्रियां आज्ञाकारी होती हैं और पति की अनुपस्थिति में उनकी अमानत की रखवाली करती हैं।

और पति को इस्लाम का आदेश है कि :–

"वह पत्नी के साथ पूर्ण रूप से प्रेम का व्यवहार करे और अपनी हैसियत और सामर्थ्य के अनुसार अच्छा भोजन और

अच्छा वस्त्र दे और उनका दिल प्रसन्न रखने में कमी न करें। कुर्आन शरीफ में कहा गया है कि :–

व आशिरुहुन+न+बिल मारुफ़ (सुरतुन्निसा+अ+रुक ३)

وَعَاشِرُوهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ

"स्त्रियों के साथ अच्छा व्यवहार रक्खो (अन्निसा रुक ३)

रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कुरआन के इस आदेश के अनुसार मुसलमान पुरुषों और स्त्रियों को आपस में अच्छे व्यवहार की और एक दूसरे को प्रसन्न रखने की बड़ी ताकीद फ़रमाया करते थे इस संबंघ की कुछ हदीसें यह हैं :–

एक बार आपने स्त्रियों को उपदेश देते हुए फ़रमाया :—
"जो व्यक्ति अपनी पत्नी को अपने पास बुलाए और वह न आए और वह रात को उससे अप्रसन्न रहे तो फ़रिश्ते सवेरे तक उस पर लानत (शाप) करते हैं।"

और इसके विरुद्ध एक दूसरी हदीस में हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया :–

"जो स्त्री इस दशा में मरे कि उसका पति उससे प्रसन्न रहा तो वह जन्नत में जायगी।"

एक और हदीस में है हुज़ूर ने फ़रमाया :—

"शपथ उसकी जिसके वश में मुहम्मद का प्राण है कोई स्त्री अल्लाह का हक़ उस समय तक अदा नहीं कर सकती जब तक कि वह अपने पति का हक़ अदा न कर दे।"

और एक महत्वपूर्ण अवसर पर मुसलमानों के बहुत बड़े समारोह में विशेष कर पुरुषों को सुनाते हुए आपने फ़रमाया :—

"मैं तुमको स्त्रियों के साथ सुन्दर व्यवहार की विशेष रूप से वसीयत करता हूँ तुम मेरी इस वसीयत (अन्तिम वचन) का स्मरण रखना। देखो वह तुम्हारे अधीन हैं और तुम्हारे वश में हैं।"

एक और हदीस में है हुज़ूर ने फ़रमाया :—

"तुम में अच्छे वह हैं जो अपनी स्त्रियों के लिए अच्छे हैं।"

एक दूसरी रवायत (हदीस) में है कि रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लय ने फ़रमाया :—

"मुसलमानों में परिपूर्ण ईमान वाले वह हैं कि जिनके स्वभाव सुन्दर हों और अपनी घर वालियों के साथ जिनका व्यवहार प्रेम तथा नम्रता का हो।"

सामान्य नातेदारों के अधिकार :—

माता, पिता, सन्तान और पति पत्नी के सम्बन्ध के अतिरिक्त मनुष्य का एक विशेष प्रकार का संबंध अपने सामान्य नातेदारों के साथ भी होता है इस्लाम ने इस सम्बन्ध और नाते का भी बड़ा आदर और मान किया है। और इसके अनुसार भी कुछ पारस्परिक अधिकार नियुक्त किये है। इसी लिए क़ुरआन शरीफ़ में जगह जगह ज़विल क़ुरबा अर्थात नाते दारों के साथ अच्छे व्यवहार पर बल दिया गया है और इस्लाम में उस व्यक्ति को बहुत बड़ा अपराधी और महापापी बतलाया गया है जो नातेदारों को और नाते दारी के अधिकारों को पैरों से रौंदे।

एक हदीस में है हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया :—

नातेदारी के अधिकार को पैरों से रौंदने वाला और अपने व्यवहार में नातों का सम्मान न रखने वाला जन्नत में नहीं जायगा।"

फिर इस सम्बन्ध में रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की एक विशेष और महत्वपूर्ण शिक्षा यह है कि मान लो कि यदि तुम्हारा कोई नातेदार नातेदारी का हक़ अदा न करे तो उसकी नातेदारी का हक़ तुम इस दशा में भी अदा करते रहो। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक हदीस में फ़रमाया कि—

"तुम्हारा जो नातेदार तुमसे सम्बन्ध और नाता तोड़ने का व्यवहार करे और नातेदारी का हक़ अदा न करे तो तुम उस से सम्बन्ध न तोड़ो। अपनी ओर से तुम उसकी नातेदारी का हक़ अदा करते रहो।

सिल+मन क़ता+क" (अंत तक)

(صل من قطعك الخ)

अर्थात जो तुम से तोड़े तुम उससे जोड़ो।

बड़ों के छोटों पर और छोटों के बड़ों पर सामन्य अधिकार :—

इस्लाम ने सामाजिक जीवन के सम्बन्ध में एक सामान्य और बुनियादी शिक्षा यह भी दी है कि प्रत्येक छोटा अपने बड़ो का आदर और सम्मान करे और उनके सामने शिष्टाचारपूर्वक रहे। और प्रत्येक बड़े को चाहिये कि अपने छोटों से प्रेम तथा नम्रता का व्यवहार करे (चाहे उनमें पारस्परिक नातेदारी न हो) इस्लाम की दृष्टि में यह बात ऐसी महत्वपूर्ण है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक हदीस में घोषित किया है कि :—

"जो बड़ा अपने छोटों से नम्रता का व्यवहार न करे और जो छोटा अपने बड़ों से शिष्टाचार पूर्वक व्यवहार न करे वह हम में से नहीं है।"

एक और हदीस में है :—

"हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया "जो युवक किसी बूढ़े बुज़ुर्ग की उसकी बड़ी आयु के कारण उसका आदर करेगा तो अल्लाह उसके लिये भी ऐसे व्यक्ति नियुक्त कर देगा जो उसके बुढ़ापे की अवस्था में उसका आदर करेगें"

पड़ोसी के अधिकार :—

मनुष्य का अपने नातेदारों के अलावा एक प्रौढ़ सम्बन्ध अपने पड़ोसियों के साथ होता है, इस्लाम ने इस सम्बन्ध को भी बड़ा महत्व दिया है और इसके लिये अलग और विस्तृत निर्देश दिये है। क़ुरआन मजीद में जहाँ माता, पिता, पति, पत्नी और अन्य नाते दारों के साथ सुन्दर व्यवहार और अच्छे बरताव का आदेय दिया गया है वहाँ पड़ोसियों के बारे में भी इसकी शिक्षा दी गई है। इरशाद है कि:—

وَالْجَارِ ذِي الْقُرْبَىٰ وَالْجَارِ الْجُنُبِ وَالصَّاحِبِ بِالْجَنبِ

वल जारि ज़िल क़ुरबा वल जारिल जुनुबि वस्साहिबि बिल जम्बि:—

इस आयत में तीन प्रकार के पड़ोसियों का वर्णन है और इनमें से हर प्रकार के पड़ोसी के साथ अच्छे व्यवहार का निर्देश दिया गया है। वल+जारि+ज़िल+क़ुरबा से वह पड़ोसी माने गए है

जिनसे पड़ोस के अलावा कोई विशेष नाता भी हो। और वल जारिल जुनुबि से मुराद वह पड़ोसी हैं जिनके साथ कोई और सम्बन्ध नातेदारी आदि का न हो केवल पड़ोस ही का सम्बन्ध हो जिसमें ग़ैर मुसलिम पड़ोसी भी सम्मिलित है और वस+साहिबि +बिल+जम्बि से मतलब वह लोग हैं जिनका कहीं संयोगवश साथ हो गया हो जैसे यात्रा के साथी या पाठशाला के साथी या साथ रहकर काम काज करने वाले। इसमें भी मुस्लिम और ग़ैरमुस्लिम की कोई विशेषता नहीं है। और इन तीनों प्रकार के पड़ोसियों और साथियों के साथ सुन्दर व्यवहार की इस्लाम ने हमको शिक्षा दी है रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस पर इतना बल दिया करते थे कि एक हदीस में है कि आप ने फ़रमाया कि:—

"जो व्यक्ति ख़ुदा और अन्तिम दिवस (आख़िरत) पर विश्वास रखता हो वह अपने पड़ोसी को कोई कष्ट और दुख न पहुंचाये।"

एक दूसरी हदीस में है कि हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया कि:—

वह मुसलमान नहीं जो स्वयं पेट भर खाय और बगल में पड़ा हुआ पड़ोसी भूखा रहे।"

एक और हदीस में है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक बार अति उत्तेजना पूर्वक फ़रमाया :—

"ख़ुदा के नाम की सौगन्ध कि वह सच्चा मुसलमान नहीं, अल्लाह की क़सम वह सम्पूर्ण मोमिन नहीं वल्लाह वह पूरा मोमिन नहीं" सेवा में निवेदन किया गया कि हुज़ूर कौन पूरा मोमिन नहीं।" इरशाद फ़रमाया "वह मोमिन

नहीं जिसका पड़ोसी उसकी शरारतों से अमन में नहीं।"

एक और हदीस में है कि हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया:—

"वह आदमी जन्नत में नहीं जायगा जिसकी शरारतों से उसके पड़ोसी अमन में नहीं।"

एक और हदीस में है:—

किसी सहाबी ने (सतसंग करने वाला) हुज़ूर से निवेदन किया कि हुज़ूर अमुक स्त्री के बारे में कहा जाता है कि वह बड़ी नमाज़े पढ़ती है, बहुत रोज़े रखती हैं और खूब दान पुन्न करती हैं। परन्तु अपनी कठोर वाणी से पड़ोसियों को कष्ट पहुंचाती है। हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया कि वह दोज़ख (नर्क) में जायगी।" फिर उनही सहाबी ने निवेदन किया, या रसुलुल्लाह! अमुक स्त्री के बारे में कहा जाता है कि वह नमाज रोज़ा और ख़ैरात तो बहुत नहीं करती (अर्थात नफ़िल कार्य) परन्तु पड़ोस वालों को अपनी वाणी से कभी कष्ट नहीं देती"। तो हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया कि वह जन्नत में जायगी।"

भाइयो यह हैं इस्लाम में पड़ोसियों के अधिकार। खेद है कि आज हम इन आदेशों से कितने अनभिज्ञ हैं।

निर्बलों और दीनों के अधिकार:-—

यहाँ तक जिस श्रेणी के लोगों के अधिकारों का वर्णन किया गया यह सब वह थे जिनसे मनुष्य का कोई विशेष सम्बन्ध और और रख रखाव होता है चाहे नातेदारी हो या पड़ोस या संग साथ परन्तु इस्लाम ने इनके अतिरिक्त हर प्रकार के निर्बल तथा दीनों

और आवश्यकता रखने वालों के अधिकार भी नियुक्त किये हैं। जो लोग कुछ हैसियत और सामर्थ्य रखते हैं उनपर अनिवार्य किया है कि वह उनकी देख रेख रक्खें और उनकी सेवा किया करें और अपनी सम्पति तथा सामर्थ्य में उनका भी अधिकार और भाग समझें कुरआन शरीफ़ में बीसियों जगह इसपर जोर दिया गया है और इसका आदेश दिया गया है कि अनाथों, पितृहीनों, दरिद्रों, दीनों, यात्रियों तथा अन्य आवश्यकता रखने वालों की सेवा और सहायता की जाय। भूखों के भोजन का और नंगों के वस्त्र का प्रबन्ध किया जाय आदि।

रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भी इस पर बड़ा जोर दिया है और इसके लिये बहुत ही प्रोत्साहित किया है और इसकी बड़ी श्रेष्ठता वर्णन की है। इस सम्बन्ध में कुछ हदीसें यह हैं।

एक हदीस में है कि रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी दो उंगलियां बराबर करके फ़रमाया :—

"किसी पितृरहित बालक के पालन पोषण का भार उठा लेनेवाला व्यक्ति जन्नत में मुझसे इतना निकट होगा जिस प्रकार यह दो उंगलियां मिली हुई हैं।"

एक दूसरी हदीस में है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया :—

"विधवा स्त्रियों, दीनों तथा दरिद्रों की देख रेख और सहायता के लिये दौड़ धूप करने वाला व्यक्ति ख़ुदा के रास्ते में तनमन धन की बाज़ी लगा देने वाले के उच्च स्थान पर है और पुण्य में उस व्यक्ति के समान है जो सदैव

दिन को रोज़ह रखता हो और रात नफ़िल[1] नमाज़ों में काटता हो"।

एक और हदीस में है कि हुज़ूर ने मुसलमानों को आदेश दिया:—

"जो भूखे हों उनके खाने का प्रबन्ध करो। रोगियों की देख रेख करो, बन्दियों को छुड़ाओ।"

एक और हदीस में है कि आपने लोगों को कुछ उपदेश दिये और इस सम्बन्ध में फ़रमाया कि :—

"दुखी प्राणियों की सहायता करो और भटके हुओं को मार्ग बताओ।"

इन हदीसों में आपने मुस्लिम और गैर मुस्लिम का कोई भेद नहीं रक्खा बल्कि कुछ हदीसों में आपने सभी जीवधारियों के साथ सुन्दर व्यवहार करने पर अधिक ज़ोर दिया है और बेज़बान जीवधारियों पर दया करने वालों और उनकी देख रेख करने वालों को अल्लाह की रहमत की खुश खबरी सुनाई है। वास्तव में इस्लाम सारे संसार और सारे जीवधारियों के लिये रहमत है और हमारे प्रभु और नाथ और हमारे पथ प्रदर्शक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रहमतुललिल आलमीन (सारे संसारों वालों के लिये रहमत) है। परन्तु हम स्वयं ही आपके आदेश और सन्देश से दूर हो गये। क्या अच्छा होता कि हम भी सच्चे मुसलमान बनकर सारी दुनिया के लिये रहमत बन जावें।

१ वह नमाज़ जो पढ़ी जाय तो सवाब और अगर न पढ़ी जाय तो कोई दण्ड नहीं।

मुसलमान पर मुसलमान का अधिकार:—

नातेदारी और पड़ोस और सामान्य मानव अधिकारों के अलावा प्रत्येक मुसलमान पर दूसरे मुसलमान के कुछ इस्लामी अधिकार हैं। इस बारे में रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की कुछ हदीसें यह हैं :—

"प्रत्येक मुसलमान दूसरे मुसलमान का भाई है। उसके लिये यह आवश्यक है कि न तो उसपर स्वयं कोई अत्याचार और ज़बरदस्ती करे और अगर कोई दूसरा उस पर अत्याचार करे तो उसको अकेला छोड़ कर अलग न हो जाय (सम्भव हो तो उसकी सहायता करे और उसका साथ दे)

तुम में से जो कोई अपने भाई की आवश्यकता पूरी करने में लगा रहेगा तो अल्लाह तआला उसकी आवश्यकता पूरी करने में लगा रहेगा और जो मुसलमान किसी दूसरे मुसलमान की कठिनाई दूर करेगा तो अल्लाह तआला उसके बदले में क़ियामत में उसकी किसी कठिनाई से उसको मुक्त करेगा और जो व्यक्ति किसी मुसलमान का ऐब ढाकेगा अल्लाह तआला क़ियामत के दिन उसका ऐब ढाकेगा"।

एक और हदीस में है कि रसूलुल्लाहि सल्ललाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि :—

"तुम आपस में कपट वैर न रखो, डाह न करो, गीबतें[1]

१ पीठ पीछे ऐसी बात कहना कि मुह पर कही जाय तो बुरा माने।

न करो और एक अल्लाह के बन्दे और भाई भाई बन कर रहो, और किसी मुसलमान के लिए उचित नहीं है कि वह अपने मुसलमान भाई से तीन दिन से अधिक सलाम और बात चीत त्याग दे।"

एक और हदीस में है कि हुज़ूर ने फ़रमाया है कि :—

"मुसलमान का माल, उसकी जान तथा मान मर्यादा मुसलमान पर बिलकुल हराम[1] है।

अब हम रहन सहन के नियमों को और पारस्परिक अधिकारों के इस वर्णन को रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की एक हदीस पर समाप्त करते हैं। जो हर मुसलमान को थर्रा देने वाली है।

रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक दिन सहाबा से पूछा।

"बताओ मुफ़लिस और निर्धन कौन है। सहाबा ने कहा हुज़ूर मुफ़लिस वह है जिसके पास दिरहम और दीनार न हों (दिरहम और दीनार सिक्के हैं)। आपने फ़रमाया नहीं, हम में मुफ़लिस वह है जो क़ियामत के दिन नमाज़ और रोज़ह और ज़कात का भण्डार लेकर आवेगा परन्तु दुनिया में उसने किसी को गाली दी होगी किसी पर झूठा इल्ज़ाम लगाया होगा किसी को मारा पीटा होगा किसी का माल बिना अधिकार के खाया होगा। जब यह हिसाब के स्थान पर खड़ा किया जायेगा तो उसके मुद्दई लोग आयेंगे और जितना जिसका अधि-

१ हराम—वह कार्य जिसका करना बहुत बड़ा पाप है।

कार सिद्ध होगा उसकी नेकियों में से उनको दिलवाया जायगा। यहाँ तक कि उसकी सब नेकियां समाप्त हो जायेंगी तो फिर उनके (मुद्दईओं) पाप उस पर लाद दिये जायेंगे और उसको नर्क में डलवा दिया जायगा"।

भाईयों ! इस हदीस पर विचार करो और सोचो कि दूसरों का हक़ मारना उनको बुरा भला कहना और उनकी ग़ीबतें करना अपने आपको किस बरबादी में डालना है।

खुदा के बन्दो ! यदि किसी का कोई हक़ तुमने मारा हो तो दुनिया ही में उसका हिसाब कर लो या उसका बदला दे दो या क्षमा करा लो और आगे के लिए लापरवाही न करने का प्रण कर लो नहीं तो आख़िरत में इसका परिणाम बहुत बुरा होने वाला है।

हमको अल्लाह बचाए।

नवाँ पाठ

अच्छा चरित्र तथा उत्तम गुण

अच्छे चरित्र और गुणों की शिक्षा भी इस्लाम की बुनियादी शिक्षाओं में से है और लोगों का चारित्रिक एवं आत्मिक सुधार उन विशेष उद्देश्यों में से है जिनको पूरा करने के लिये रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नबी बना कर भेजे गये थे।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ही का कथन है कि :—"मैं अल्लाह की ओर से इस लिये भेजा गया हूँ कि अच्छे चरित्र की शिक्षा दूं और उन्हें उच्चतम श्रेणी तक पहुँचाऊँ"।

अच्छे चरित्र को बड़ाई और उसका महत्व :

इस्लाम में अच्छे चरित्र का जो महत्व और उसको जो श्रेष्ठता है उसका कुछ अनुमान रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलेहि व सल्लम की निम्नलिखित हदीसों से किया जा सकता है।

हुज़ूर ने फरमाया कि :—

"तुम में सबसे अच्छे वह लोग हैं जिनके चरित्र बहुत अच्छे हैं"।

एक और हदीस में आया है कि रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि :—

"क़ियामत के दिन मेरी दृष्टि में सबसे अधिक प्यारा वह व्यक्ति होगा जिसके चारित्रिक गुण सब में अच्छे होंगे।"

एक दूसरी हदीस में आया है कि रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि :—

"क़ियामत के दिन कर्मों की तराज़ू में सब से अधिक भार अच्छे चरित्र का होगा।"

एक और वर्णन में है कि हुज़ूर से पूछा गया कि वह कौन सा गुण है जो मनुष्य को जन्नत में ले जाता है ?

आप ने फ़रमाया :—

"अल्लाह का भय और अच्छा चरित्र"

एक और वर्णन में आया है कि रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि :—

"अच्छे चरित्र वाले मोमिन को दिनों के रोज़ों और रातों में खड़े होने (अर्थात् नफ़्ल नमाज़ों) का सवाब (प्रतिफल) मिलता है।"

अर्थ यह है कि जिस अल्लाह के बन्दे को ईमान प्राप्त हो और वह अल्लाह के नियुक्त किये हुए फ़र्ज़ (अनिवार्य कार्यों) अदा करता हो और अधिक नफ़्ल रोज़े न रखता हो और न रात को बहुत ज्यादा नफ़्ल नमाज़ें पढ़ता हो परन्तु उसके चरित्र अच्छे हों तो अल्लाह तआला उसको अच्छे स्वभाव और अच्छे आचार व्यवहार के कारण उन लोगों के बराबर सवाब देगा जो दिन को रोज़ा रखने वाला और रात को नफ़्ल नमाज़ें पढ़ने वाला हो।

बुरे स्वभावों की नहूसत :—

जिस प्रकार हुज़ूर (पवित्र रसूल) ने अच्छे स्वभावों की प्रशंसा की है और उनकी उत्तमता और श्रेष्ठता वर्णन की है उसी प्रकार बुरे स्वभावों की नहूसत से भी आपने हमको ख़बरदार कराया है।

एक हदीस में है :—

"बुरे स्वभावों वाला व्यक्ति जन्नत में न जा सकेगा।"

हदीस के एक और वृत्तान्त में है कि :—

"कोई पाप अल्लाह की दृष्टि में बुरे स्वभाव से अधिक बुरा नहीं है"।

कुछ महत्वपूर्ण और आवश्यक स्वभावों का वर्णन :—

यों तो क़ुरआन और हदीस में समस्त अच्छे स्वभाव और श्रेष्ठ आत्मिक तथा आध्यात्मिक गुणों की शिक्षा दी गई है और समस्त बुरे स्वभावों और बुरी बातों से बचने पर बल दिया गया है परन्तु यहाँ हम इस्लाम के केवल आवश्यक और बुनियादी दर्जे के थोड़े से चरित्र सम्बन्धी निर्देशों की व्याख्या करते हैं जिनके बिना कोई व्यक्ति सच्चा मोमिन और मुस्लिम नहीं हो सकता।

सच्चाई तथा सत्यनिष्ठता :—

इस्लाम में सच्चाई का इतना महत्व है कि प्रत्येक मुसलमान को सर्वदा ही सच बोलने के साथ साथ इसका भी आदेश दिया गया है कि वह सदैव सच्चों के साथ और सत्यवादियों के सत संग में रहें।

पवित्र क़ुरआन में है कि :—

या अय्युहल्लजी+न+आ+म +नुत्तक़ुलला+ह+वकूनू+
मअस्सादिक़ीन

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَكُوْنُوْا مَعَ الصّٰدِقِيْنَ ○

ऐ ईमान वालो खुदा से डरो और केवल सच्चों ही के साथ रहो।

हदीस में है कि पवित्र रसूल ने एक अवसर पर पवित्र सहाबा से फ़रमाया :—

जो यह चाहे कि अल्लाह व रसूल से उसको प्रेम हो जाय अथवा अल्लाह और रसूल उससे प्रेम करें तो उसके लिये अनिवार्य है कि जब बात करें तो सत्य बोले।

एक और हदीस में है कि :—

सत्यता धारण करो यद्यपि तुमको इसमें अपना नष्ट हो जाना भी प्रतीत हो और अपनी मृत्यु भी विदित हो क्योंकि वास्तव में मुक्ति तथा जीवन सच्चाई ही में है। और झूठ से घृणा करो यद्यपि इसमें देखने में सफलता तथा मुक्ति प्रतीत हो क्योंकि झूठ का परिणाम विनाश तथा असफलता है।

हदीस के एक वृत्तान्त में है कि किसी व्यक्ति ने पवित्र रसूल से प्रश्न किया कि:—

"जन्नत में जाने वालों का क्या चिन्ह है" ?

पवित्र रसूल ने उत्तर दिया कि:—

["सत्य बोलना"]

इसी की अपेक्षा एक दूसरी हदीस में है कि पवित्र रसूल ने फ़रमाया:—

'झूठ बोलना कपटी मुनाफ़िक[1] का प्रमुख चिह्न है।'

एक और हदीस में है कि—

किसी ने रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा कि "क्या मोमिन डरपोक हो सकता है ?" आप ने फ़रमाया। "हां हो सकता है।" फिर प्रश्न किया गया क्या मोमिन कँजूस हो सकता हैं ? "आपने फ़रमाय हाँ हो सकता है।" फिर पूछा गया 'क्या मोमिन झूठा हो सकता है?" आपने फ़रमाया "नहीं" (अर्थात् झूठ की आदत ईमान के साथ एकदम नहीं हो सकती)

अल्लाह तआला हम सबको तौफ़ीक़ दे (सहायता करे) कि सदा के लिए हम सच्चाई को ग्रहण कर लें। जो मुक्ति प्रदान करने वाली है। जन्नत में पहुँचाने वाली और अल्लाह व रसूल का प्रिय और प्रेमी बनाने वाली है और हम झूठ से पूर्ण रूप से बचें क्योंकि झूठ का परिणाम तबाही बरबादी और खुदा व रसूल की लानत और अप्रसन्नता है और झूठ मुनाफ़िक़ों (मन के रोगियों और कपटियों) का चिह्न है।

वचन तथा प्रण की पूर्ति

यह भी वास्तव में सच्चाई ही का एक विशेष अंग है कि जिस किसी से जो वादा किया जाय उसकी पूर्ति की जाय पवित्र क़ुरआन और हदीस में विशेष रूप से इसके लिये निर्देश है और इस पर जोर दिया गया है।

१ वह व्यक्ति जो दिखाव में तो मुसलमान हो परन्तु हृदय से इस्लाम का शत्रु हो।

अल्लाह तआला का पवित्र कथन है:—

व+औ+फू+बिल+अहादि+इन्नल+अहदा+काना+
मसऊला (बनीइसराइल रूकू ४)

وَاَوْفُوْا بِالْعَهْدِ اِنَّ الْعَهْدَ كَانَ مَسْئُوْلًا

और अपने प्रत्येक वचन की पूर्ति करो। निःसन्देह
तुमसे क़ियामत में प्रत्येक वचन के बारे में पूछा जायगा।
पवित्र क़ुरआन ही में एक दूसरे स्थान पर नेकियों तथा नेकों
के सम्बन्ध में कहा गया है:—

वल+मू+फू+ना+बेअहदि+हिम+ +इज़ा+आहद्
(बक़रह रूकु२२]

وَالْمُوْفُوْنَ بِعَهْدِهِمْ اِذَا عٰهَدُوْا ج

और अल्लाह की दृष्टि में सदाचारी वह लोग भी हैं जो
अपने प्रण की पूर्ति करें जब कि वह बचन दे दें।

हदीस में है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने भाषण
में बहुधा फ़रमाया करते थे:—

"जो अपने प्रण का पक्का नहीं उसका धर्म में कोई
स्थान नहीं।"

एक और हदीस में है कि:—

"वचन की पूर्ति न करना कपटियों और मन के रोगियों
का प्रमुख चिह्न है।"

मानो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कथानुसार प्रतिज्ञा
तोड़ डालना, प्रण का भंग करना और वचन की पूर्ति न करना

ईमान के साथ इकट्ठा नहीं हो सकते ।

अल्लाह तआला इन बुरी बातों से हम सब को बचाए ।

अमानतदारी

धरोहर की सुरक्षा भी वास्तव में सच्चाई और सत्यनिष्टता ही का एक विशेष अंग है । इस पर भी विशेष रूप से बल दिया गया है । पवित्र कुरआन में है ।

इन्नल्ला+ह+यामुरुकुम अन+तुअद्दुल+अमानाति इला अहलिहा

إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُكُمْ أَنْ تُؤَدُّوا الْأَمَانَاتِ إِلَىٰ أَهْلِهَا

अल्लाह तुमको आदेश देता है कि धरोहर उनके मालिकों को ठीक-ठीक अदा करो ।

और पवित्र कुरान ही में दो स्थानों पर सच्चे ईमानवालों के गुणों के वर्णन में कहा गया ।

वल्लजी नहुम लिअमानातिहिम व अहदिहिम राऊन)
सूरए मूमिनून व [सूरए मआरिज]

وَالَّذِينَ هُمْ لِأَمَانَاتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رَاعُونَ

और वह लोग जो धरोहरों की और अपने वचन की सुरक्षा करते हैं (अर्थात् धरोहर अदा करते हैं और वचन का पालन करते हैं ।)

रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बहुधा अपने भाषणों में फ़रमाया करते थे ।

"लोगो जिसमें धरोहर को सुरक्षित रखने का गुण नहीं उसमें मानो ईमान ही नहीं।"

एक हदीस में है:—

"किसी के अच्छे व्यक्ति होने का अनुमान करने के लिए केवल उसकी नमाज़ और उसके रोज़े ही को न देखो (अर्थात किसी के नमाज व रोज़े ही को देखकर उसको विश्वासपात्र न समझ लो) वरन् यह गुण देखो कि वह जब बात करे तो सत्य बोले और जब कोई धरोहर उसको सौंपी जाय तो वह उसको ठीक-ठीक वापस करे और कष्ट और दुःख के समय में भी वह सयंम पर स्थिर रहे।"

सज्जनों ! यदि हम अल्लाह की दृष्टि में सच्चे मोमिन और उसकी दयालुता के अधिकारी सिद्ध होना चाहते हैं तो, अनिवार्य है कि प्रत्येक परिस्थिति और अवस्था में ईमानदारी से काम लें और प्रतिज्ञा पालन को अपना सिद्धान्त बनायें। याद रक्खो कि हममें से जिस किसी व्यक्ति में यह गुण नहीं वह अल्लाह व रसूल की दृष्टि में सच्चा मोमिन और पूरा मुसलमान नहीं।

इस्लाम ने प्रत्येक परिस्थिति में और प्रत्येक अवस्था में निष्पक्षपात और न्याय पर अधिक जोर दिया है। पवित्र क़ुरआन में है:—

इन्नल्ला+ह+यामुरु+बिल+अद+लिवल इहसानि

إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْإِحْسَانِ

अल्लाह तआला निष्पक्षपात और न्याय का और परोपकार का आदेश देता है।

साथ ही इस्लाम में न्याय और निष्पक्षता पर जो ज़ोर दिया गया है वह केवल अपनों ही के प्रति नहीं, बल्कि अन्य लोगों के प्रति भी, यहां तक अपने प्राण, अपने धन और अपने दीन धर्म के शत्रुओं के प्रति भी निष्पक्षपात और न्याय पर बल दिया गया है।

पवित्र क़ुरआन का खुला हुआ आदेश है।

वला+यज+रिमन+नकुम+श+न+आनुक़ौमिन+अल्ला
ताद्‌दिलू+एदिलू+हु+व+अक़+रबु लित्तक़्वा
(सूरए माइदा रुकू २)

وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَآنُ قَوْمٍ عَلَىٰٓ أَلَّا تَعْدِلُوا۟ ۚ ٱعْدِلُوا۟ هُوَ أَقْرَبُ لِلتَّقْوَىٰ

और किसी जाति की शत्रुता तुमको इस पाप पर तैयार न कर दे कि तुम उसके साथ न्याय न करो। तुम प्रत्येक परिस्थिति में प्रत्येक व्यक्ति के साथ न्याय करो परहेज़गारी के लिये यही उचित है।

इस आयत से स्पष्ट है कि किसी व्यक्ति से अथवा किसी जाति से यदि हमारी लड़ाई और शत्रुता हो तो भी हम उसके साथ कोई अन्याय नहीं कर सकते और यदि करेंगे तो अल्लाह की दृष्टि में हम बहुत बड़े अपराधी और पापी ठहरेंगे।

पवित्र हदीस का एक वृत्तांत है कि हुज़ूर ने (उन पर सलाम हो), अपने मुखारविन्द से कथन किया कि :—

"क़ियामत के दिन अल्लाह से अति निकट और अल्लाह को सबसे अधिक प्रिय वह राजाधिकारी होगा जो न्याय-कारी होगा (अर्थात् अल्लाह के आदेशानुसार न्यायपूर्वक

राज्य करेगा) और अल्लाह से सबसे अधिक दूर और सबसे कड़े दण्ड में वह राजाधिकारी फंसा हुआ होगा जो अत्याचार और अन्याय से राज्य करने वाला होगा ।"

एक दूसरी हदीस में है कि :—

"पवित्र रसूल (उन पर सलाम हो) ने एक दिन अपने सतसंगियों से फ़रमाया क्या तुम जानते हो कि क़ियामत के दिन अल्लाह की दयालुता के छाये में कौन लोग सबसे पहले आयेंगे ? निवेदन किया गया कि अल्लाह और उसके रसूल ही को अधिक ज्ञान है अतएव हुज़ूर ही हमको बतायें कि कौन भाग्यशाली बन्दे क़ियामत के दिन सबसे पहले दयालुता के छाये में लिये जायेंगे । पवित्र रसूल (उन पर सलाम हो) ने फ़रमाया यह वह बन्दे होंगे जिनकी दशा यह होगी कि जब उनको उनका अधिकार दिया जाय तो वह सहर्ष स्वीकार कर लें और जब कोई उनसे अपना अधिकार माँगे तो वह बिना टालमटोल के उसका अधिकार उसको सौप दें और अन्य लोगो के लिए इसी प्रकार निर्णय करें जिस प्रकार वह स्वयं अपने लिए करें अर्थात् अपने और पराये के व्यवहार में कोई अन्तर न करें ।

खेद है कि हम मुसलमानों ने इस्लाम की इन साफ-सुथरी शिक्षाओं को बिलकुल भुला दिया है । यदि आज मुसलमानों में यह गुण उत्पन्न हो जायें कि वह वचन के सच्चे प्रण के पक्के अमानतदार और प्रत्येक व्यक्ति के साथ निष्पक्षपात और न्याय करने वाले हो जायें तो सांसारिक सम्मान भी उनके पांव चूमें

और जन्नत में भी उनको अति उच्च पद मिलें ।

दया करना और अपराधी को क्षमा करना :—

किसी को कष्ट की दशा में और दुख से पीड़ित देखकर उस पर दया करना और उसके साथ सहानुभूति का व्यवहार करना और अपराधी के अपराध क्षमा करना भी उन स्वभावों में से है जिनका इस्लाम में बड़ा महत्व है और जिनकी बड़ी श्रेष्ठता वर्णन की गई है । एक हदीस में है कि :—

"तुम अल्लाह के बन्दों पर दया करो तो तुम पर दया की जायेगी । तुम लोगों के अपराध क्षमा करो तुम्हारे भी अपराध क्षमा किये जायेंगे ।"

एक और हदीस में है कि :—

"जो दया नहीं करता उस पर दया नहीं की जायेगी ।"

एक दूसरी हदीस में है :—

"जो कोई किसी का अपराध क्षमा नहीं करता तो अल्लाह तआला भी उसका अपराध क्षमा नहीं करेगा ।"

एक और हदीस में है कि :—

"दया करने वालों पर अपार दयालु दया करता है । तुम धरती पर बसने वालों के ऊपर दया करो । तुम पर आकाशवाला दया करेगा ।"

इस हदीस से स्पष्ट है कि इस्लाम मित्र तथा शत्रु सबके साथ वरन् पृथ्वी पर बसने वाले समस्त जीव जन्तुओं के साथ दयालुता की शिक्षा देता है ।

एक हदीस में है कि :—

"किसी व्यक्ति ने एक प्यासे कुत्ते को जो अधिकप्यास के कारण कीचड़ चाट रहा था उस पर दया करके पानी पिला दिया था तो अल्लाह तआला ने उसके इस शुभ कर्म के बदले में उसको जन्नत प्रदान कर दी थी।"

शोक की बात है कि अल्लाह की सृष्टि पर दया करने और उसके साथ सहानुभूति का व्यवहार करने का गुण हमसे निकल गया और इसी कारण हम ख़ुदा की दया के पात्र नहीं रहे।

नम्रता :—

लेन देन में और प्रत्येक प्रकार के व्यवहार में नम्रता और सरलता बरतना भी इस्लाम की विशेष शिक्षाओं में से है।

एक हदीस में है कि :—

"नम्रता का व्यवहार करने वालों पर सरलता का प्रयोग करने वालों पर दोज़ख़ की आग हराम है।"

एक दूसरी हदीस में है कि :—

अल्लाह तआला नम्रता करने वाला है और नम्रता को पसन्द करता है और नम्रता पर इतना देता है जितना कठोरता पर नहीं देता।

सहनशीलता तथा धैर्य :—

अच्छी न लगने वाली बातों का सहन करना और ऐसे अवसर पर क्रोध को पी जाना भी उन स्वभावों में से है जिनको

इस्लाम सभी मनुष्यों में उत्पन्न करना चाहता है और अल्लाह की दृष्टि में उन लोगों का बड़ा मान है जो अपने में यह गुण उत्पन्न कर लें।

पवित्र क़ुरआन में जहां उन लोगों की चर्चा है जिनके लिए जन्नत सजाई गई है। वहां ऐसे लोगों का विशेष कर वर्णन किया गया है, कहा गया है।

वल काज़िमी नल ग़ै+ज़+वल आफ़ी+न+अनिन्नास (आले इमरान रुकू १४)

وَالْكٰظِمِيْنَ الْغَيْظَ وَالْعَافِيْنَ عَنِ النَّاسِ

जो क्रोध को पी जाने वाले हैं और लोगों के अपराध क्षमा करने वाले हैं।

ऐसे लोगों के प्रति पवित्र रसूल (उन पर सलाम हो) ने शुभ समाचार दिया है कि :—

"जो व्यक्ति अपने क्रोध को रोकेगा अल्लाह तआला उससे अपना दण्ड रोक लेगा।"

बड़े भाग्यवान हैं वह लोग जो क्रोध आने के समय पर इन आयतों को और हदीसों को याद करके अपने क्रोध को रोक लें और उसके बदले में अल्लाह तआला उनसे अपने दण्ड को रोक लें।

अच्छी बोली तथा मधुर वाणी :—

इस्लाम के आचरण की शिक्षाओं में से एक विशेष शिक्षा यह भी है कि बातचीत सदैव अच्छे स्वभाव से और मधुर वाणी में

की जाय और कड़ी और कड़वी बोली से घृणा की जाय । पवित्र कुरआन में है ।

व+क़ूलू लिन्नासि हुस्ना

وَقُولُوا لِلنَّاسِ حُسْنًا

और लोगों से अच्छी बात कहो।

इस्लाम ने अच्छी बात बोलने को पुण्य ठहराया है । और कठोर वाणी को पाप बताया । पवित्र हदीस में है कि :—

नम्रता और अच्छे स्वभाव से बात चीत करना पुण्य है और एक प्रकार का दान है ।

एक और हदीस मे है कि :—

कटु वाक्य अत्याचार है और अत्याचार का ठिकाना नर्क है ।

एक दूसरी हदीस में है ।

अपशब्द निकालना निफ़ाक़ (मन का रोग) है (अर्थात् मुनाफ़िक़ों का आचरण है ।)

अल्लाह तआला अपशब्दों के और कठोर वाणी के अत्याचार और कपटी स्वभाव से हमारी सुरक्षा करे । और हमको अपनी दया से वह मीठी और मधुर वाणी प्रदान करे जो ईमान की शोभा है और अल्लाह के नेक बन्दों का तरीक़ा है ।

नम्रता, विनय तथा निरहंकार :—

इस्लाम जिन स्वभावों को अपने मानने वालों में प्रचलित करना चाहता है उनमें से एक यह भी है कि खुदा के दूसरे बन्दों

की अपेक्षा मनुष्य अपने को नीचा रक्खे और अपने आपको विनीत ओर तुच्छ बन्दा समझे अर्थात् घमंड और अहंकार से अपने हृदय को पवित्र रक्खे और इसके विपरीत दीनता तथा विनय को अपना स्वभाव बनाये।

अल्लाह के यहाँ सम्मान एवं उत्तमता उन्ही भाग्यवानों के लिए है जो दुनियाँ में विनीत होकर रहें।

पवित्र कुरआन में है कि :—

वइबादुर्रहमानिललज़ी+न+यमशू+न+अलल अर्ज़ि हौना (अल्फुर्कान रुक ६)

> अनन्त दयालु के प्रमुख बन्दे तो वही हैं जो पृथ्वी पर विनय पूर्वक चलते हैं।
>
> दूसरे स्थान पर है :—
>
> तिल+कद्दारुल आख़ि रतु नज+अलुहा लिल्लज़ी+न+ला

युरीदू+न+उलूव्वन फ़िल अर्ज़ि वला फ़सादा (अल+क़ि+सस रुकू ८)

تِلْكَ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِيْنَ لَا يُرِيْدُوْنَ عُلُوًّا فِي الْاَرْضِ وَلَا فَسَادًا

> पर लोक के इस घर (जन्नत) का अधिकारी हम उन्ही को करेंगे जो नहीं चाहते दुनियाँ में बड़ाई प्राप्त करना और उपद्रव करना।

एक हदीस में है कि :—

> "जिसने विनय धारण किया अल्लाह तआला उसके पद इतने ऊंचे करेगा कि उसको जन्नत के उच्चतर स्थान में पहुचायेगा।"

और इसके विपरीत घमण्ड तथा अहंकार अल्लाह तआला को

इतना नापसन्द है कि एक हदीस में आया है कि :—

"जिस व्यक्ति के हृदय में राई के दाने के बराबर भी अहंकार होगा तो अल्लाह तआला उसको औंधे मुंह नर्क में डलवायेगा ।"

दूसरी हदीस में है कि :—

"जिस व्यक्ति के हृदय में राई के दाने के बराबर भी अहंकार होगा वह जन्नत में न जा सकेगा ।

एक और हदीस में है कि :—

"अहंकार से बचो । अहंकार ही वह पाप है जिसने सबसे पहले शैतान को बरबाद किया ।"

अल्लाह तआला हम सबको इस पैशाची स्वभाव से बचाये और हमको विनय तथा दीनता प्रदान करे जो कि उसको पसन्द है और जो कि भक्त का धर्म है । परन्तु यहां हमको यह याद रखना चाहिए कि हमारी दीनता और हमारी विनय अपने निज के और अपनी आत्मा के बारे में होना चाहिए परन्तु सत्य और धर्म के बारे में हमको शक्ति, दृढ़ता और साहस प्रकट करना चाहिए । ऐसे अवसर के लिए अल्लाह का और अल्लाह के रसूल का आदेश यही है । सारांश यह है कि मोमिन की शोभा यही है कि वह अपने आपको तुच्छ और नीचा समझे और सत्य पर दृढ़तापूर्वक स्थिर रहे और किसी के डर और भय से सत्य के सम्बन्ध में निर्बलता और असमर्थता न दिखाये ।

धैर्य तथा वीरता :—

इस दुनिया में आदमियों पर कष्ट और परिश्रम के अवसर भी

आते हैं। कभी रोग लगता है तो कभी दीनता और निर्धनता की परिस्थिति हो जाती है। कभी उपद्रवी शत्रु दुःख देते हैं। कभी अन्य विभिन्न प्रकार से परिस्थिति प्रतिकूल हो जाती है। अतः ऐसी परिस्थितियों के लिए इस्लाम की विशेष शिक्षा यह है कि अल्लाह के बन्दे धैर्य तथा साहस से काम लें और सहस्त्रों कष्टों और दुखों में भी दृढ़ता और वीरता के साथ अपने सिद्धांत पर जमे रहे। ऐसे लोगों के लिए पवित्र कुरआन यह शुभ समाचार सुनाता है कि वह अल्लाह के प्यारे हैं।

वल्लाहु युहिब्बुस्साबिरीन+

وَاللّٰهُ يُحِبُّ الصّٰبِرِيْنَ

और अल्लाह धैर्यवालों से प्रेम रखता है।

दूसरी आयत में है :–

इन्नल्ला+ह+मअस्साबिरीन

اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ

अल्लाह निःसंदेह धैर्य वालों के साथ है।

एक और आयत में उन ईमान वालों की बड़ी प्रशंसा की गई है जो कष्ट तथा परिश्रम के अवसर पर सत्य के लिए लड़ाई के समय दृढ़ और स्थिर रहें और बलिदान से न भागें।

वस्साबिरी+न+फिल बासाइ वज्जर्रा+ई वहीनल बास+उलाइ कल्लज़ी+न+स+द+क़+व+उलाइ+क+हुमुल मुत्तकून

وَالصّٰبِرِيْنَ فِي الْبَاْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ وَحِيْنَ الْبَاْسِ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ

और जो लोग कष्ट एवं दुख और लड़ाई के अवसर पर दृढ़ रहने वाले हैं, वही हैं जो सच्चे हैं और ख़ुदा से डरने वाले हैं।

एक हदीस में है कि :—

धैर्य प्रदान किये जाने से उच्चतर कोई देन नहीं है।

एक दूसरी हदीस में है कि :—

धैर्य आधा ईमान है।

और इसके विपरीत अधैर्य और कायरता इस्लाम की दृष्टि में अत्यन्त बुरे दोष हैं। जिससे हुज़ूर अपनी प्रार्थनाओं में बहुधा मुक्ति -माँगते थे। अल्लाह तआला हम सबको भी धैर्य और साहस प्रदान करे और अधैर्य तथा कायरता से अपनी शरण में रक्खे।

निःस्वार्थता एवं मन की शुद्धता :—

निःस्वार्थता एवं मन की स्वच्छता समस्त इस्लामी स्वभावों का वरन् पूर्ण इस्लाम का सार और तत्व है। इख़लास (निःस्वार्थ-परता) का अर्थ यह है कि हम जो कार्य भी करें वह केवल अल्लाह के लिए और उसको राज़ी करने की इच्छा से करें और इसके अतिरिक्त हमारा और कोई प्रयोजन और उद्देश्य न हो।

इस्लाम की जड़ तौहीद और तौहीद की पूर्ति इख़लास से ही होती है। अर्थात् सम्पूर्ण तौहीद यही कि हमारा प्रत्येक कार्य केवल अल्लाह के लिए हो और केवल अल्लाह की प्रसन्नता और उसका प्रतिफल ही हमारा ध्येय और उद्देश्य हो।

१. जमउल फ़वाइद में इसको हज़रत अबदुल्लाह बिन मसूद से नक़ल किया गया है।

एक हदीस में है कि :—

"जिसने अल्लाह के लिए प्रेम किया और अल्लाह के लिए शत्रुता की और अल्लाह के लिए दिया और अल्लाह के लिए मना किया। उसने अपना ईमान पूर्ण कर लिया।

अर्थ यह है कि जिसने अपने नातों और सम्बन्धों और व्यवहारों को अपनी निज की इच्छा और अन्य उद्देश्यों के विपरीत केवल अल्लाह की रज़ामन्दी के अधीन कर दिया वही अल्लाह की दृष्टि में सम्पूर्ण मोमिन है। एक दूसरी हदीस में है कि :—

अल्लाह तुम्हारी शक्ल एवं सूरत और तुम्हारे शरीरों को नहीं देखता वरन् तुम्हारे दिलों को देखता है।

अर्थात् अल्लाह तआला की ओर से बदले और प्रतिफल का व्यवहार खुलूस (निष्कपटता) और दिल की नियत (इच्छा) के अनुसार होगा।

एक और हदीस में है कि :—

"लोगों अपने कार्यों में इख़लास पैदा करो। अल्लाह तआला वही कर्म स्वीकार करता है जो इख़लास से हो।"

अन्त में एक हदीस और लिखी जाती है जिसको सुनकर हम सबको काँप जाना चाहिए। हदीस के कुछ वृत्तान्तों में है कि हज़रत अबू हुरैरह (अल्लाह उनसे राजी हो) जब इस हदीस को सुनाते थे तो कभी-कभी मूर्छित होकर गिर पड़ते थे। वह हदीस यह है कि :—

कियामत में सबसे पहले पवित्र कुरआन के कुछ विद्वान और कुछ शहीद और कुछ धनवान उपस्थित किये जायेंगे और उन लोगों से पूछा जायेगा कि तुमने अपने जीवन में हमारे लिए क्या किया ? कुरआन का विद्वान् कहेगा कि मैं जीवन भर तेरी किताब को पढ़ाता रहा । उसको स्वयं सीखा और दूसरों को सिखाया और यह सब तेरे वास्ते किया । उत्तर मिलेगा कि तू झूठा है कि तूने तो यह सब कुछ अपने नाम के लिए किया था । जो दुनिया में तुझको प्राप्त हो चुका । फिर धनवान से पूछा जायेगा कि हमने तुझको धन दिया था । तूने हमारे लिए क्या किया । वह कहेगा कि पुण्य के समस्त कार्यों में और भलाई के समस्त मार्गों में तेरी प्रसन्नता के लिए व्यय किया ? उत्तर मिलेगा तू झूठा है तूने दुनिया में यह उदारता इसलिए की थी कि तेरी उदारता तथा दानशीलता की चर्चा हो और लोग प्रशंसा करें सो दुनिया में यह सब कुछ तुझे प्राप्त हो चुका । फिर इसी भांति शहीद से पूछा जायेगा । वह कहेगा कि तेरी प्रदान की हुई सबसे अधिक प्रिय वस्तु प्राण थे मैंने उसको भी तेरे लिए बलिदान कर दिया । उत्तर मिलेगा कि तू झूठा है । तूने तो युद्ध में इसलिए भाग लिया था कि तेरी वीरता का बखान हो और तेरा नाम हो । सो वह यश तुझे प्राप्त हो चुका और दुनिया की शुहरत तुझे मिल चुकी । फिर इन तीनों के लिए आदेश होगा कि इनको औंधे मुहँ घसीट के नर्क में डाल दिया जाय । और यह नर्क में डाल दिये जायेंगे ।

भाइयों हमें चाहिए कि अच्छे कर्मों को इस हदीस के प्रकाश में देखें अपने हृदय में और अपनी नीयतों में निष्कपटता उत्पन्न करने का प्रयत्न करें।

ऐ अल्लाह हम सबको सत्यता, निःस्वार्थता और खरापन प्रदान कीजिये हमारी इच्छाओं और हमारे विचारों को केवल अपनी दयालुता और कृपा से सुधार दीजिए और हमको अपने निःस्वार्थी भक्तों में से कर दीजिए। आमीन।

दसवाँ पाठ

प्रत्येक वस्तु से अधिक अल्लाह तथा रसूल और धर्म का प्रेम

भाइयों ! इसलाम जिस प्रकार हमको अल्लाह व रसूल पर ईमान लाने और नमाज़, रोज़ह, हज और ज़कात आदि की शिक्षा देता है और ईमानदारी और परहेज़गारी और अच्छे स्वभावों और अच्छे कर्मों को ग्रहण करने का निर्देश देता है और इस पर जोर देता है उसी प्रकार उसका एक विशेष निर्देश और उसकी एक प्रमुख शिक्षा यह भी है कि हम दुनिया की प्रत्येक वस्तु से अधिक यहां तक कि अपने माता पिता और स्त्री तथा बच्चों और प्राण तथा धन और आदर एवं सम्मान से भी अधिक खुदा और उसके रसूल से और उसके पवित्र धर्म से प्रेम करें।

अर्थात् यदि कभी ऐसा कोई कठिन तथा कठोर समय आजाय कि धर्म पर जमे रहने और अल्लाह व रसूल के आदेशों पर चलने के कारण हमको प्राण, धन, मान, मर्यादा और आदर तथा सम्मान का भय हो तो उस समय भी हम अल्लाह व रसूल को और धर्म को न छोड़ें। और जान माल तथा मान मर्यादा पर जो कुछ गुजरे उसे गुजर जाने दें।

पवित्र क़ुरआन और हदीस में विभिन्न स्थानों पर आया है कि जो लोग अपना मुसलमान होना प्रकट करें परन्तु उनको अल्लाह व रसूल के साथ और धर्म के साथ ऐसा प्रेम और ऐसा सम्बन्ध न हो तो वह असली मुसलमान नहीं है वरन् वह अल्लाह की ओर से कड़े दण्ड के अधिकारी हैं। पवित्र कुरआन के सूरए तौबह में है :—

कुल+इन+का+न+आबाउकुम व+अबनाउकुम व+इख-वानुकुम + वअज़वाजुकुम व+अशी+रतुकुम व+अम्वालु निक़ +तरफ़ तुमूहा+व तिजा+रतुन+तख़+शौ+न+कसा+दहा+ व+मसाकिनु तर्ज़ौ+नहा+अहब+ब+इलैकुम मि+नल्लाहि व +रसूलिही व+जिहादिन फ़ीसबीलिही फ़+तरब्बसू हत्ता+ यातियल्लाहु बिअमरिहि+वल्लाहु ला यह+दिल + क़ौमल+ फ़ा+सिक़ीन+ (सूरए तौबह रुकू तीन)

قُلْ اِنْ كَانَ اٰبَآؤُكُمْ وَاَبْنَآؤُكُمْ وَاِخْوَانُكُمْ وَاَزْوَاجُكُمْ وَعَشِيْرَتُكُمْ وَ
اَمْوَالُ ۨاقْتَرَفْتُمُوْهَا وَتِجَارَةٌ تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا وَمَسٰكِنُ تَرْضَوْنَهَآ اَحَبَّ
اِلَيْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَجِهَادٍ فِيْ سَبِيْلِهٖ فَتَرَبَّصُوْا حَتّٰى يَاْتِيَ اللّٰهُ ط
وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ

हे रसूल! तुम इन लोगों को जतला दो कि यदि तुम्हारे माता, पिता, तुम्हारी सन्तान, तुम्हारे भाई बिरादर, तुम्हारी स्त्रियां और तुम्हारा कुनबा कबीला और तुम्हारा धन सम्पत्ति जिसे तुमने कमाया है और तुम्हारा व्यापार जिसके उतार चढ़ाओ से तुम डरते हो और

तुम्हारे रहने के मकान जिनको तुम पसन्द करते हो (सो यदि यह वस्तुयें) तुमको अधिक प्रिय हैं अल्लाह से और उसके रसूल से और उसके धर्म के लिए प्रयास करने से तो अल्लाह के निर्णय की प्रतीक्षा करो और (याद रक्खो) कि अल्लाह सीधी राह नहीं दिखाता है अवज्ञा करने वालों को।

इस आयत (वाक्य) से ज्ञात हुआ कि जो लोग अल्लाह व रसूल के और 'उनके दीन की अपेक्षा अपने माता, पिता अथवा स्त्री तथा बच्चों अथवा धन तथा सम्पत्ति से अधिक प्रेम रखते हों और जिनको अल्लाह व रसूल की प्रसन्नता और धर्म की सेवा और उन्नति से अधिक इन बस्तुओं की चिन्ता हो वह अल्लाह की घोर अवज्ञा करने वाले हैं और उसके क्रोध के पात्र हैं। एक प्रसिद्ध और शुद्ध हदीस में है :—

ईमान की मिठास और दीन का स्वाद उसी व्यक्ति को प्राप्त होगा जिसमें तीन बातें एकत्रित हों। प्रथम यह कि अल्लाह व रसूल का प्रेम उसको समस्त वस्तुओं से अधिक हो। दूसरे यह कि जिससे भी प्रेम करे केवल अल्लाह के लिए करे (अर्थात् वास्तविक और सच्चा प्रेम केवल अल्लाह ही से हो)। तीसरे यह कि ईमान के पश्चात् कुफ्र की ओर लौटना और धर्म को छोड़ना उसके लिए अप्रिय और उस पर ऐसा भारी हो जैसे आग में डाला जाना।"

इससे ज्ञात हुआ कि अल्लाह व रसूल की दृष्टि में असली

और सच्चे मुसलमान वही हैं जिनको अल्लाह व रसूल का और इस्लाम का प्रेम दुनिया के समस्त लोगों और समस्त वस्तुओं से अधिक हो यहां तक कि यदि वह किसी आदमी से भी प्रेम करे तो अल्लाह ही के लिए करें और धर्म से उनको ऐसा सम्बन्ध हो कि उसको छोड़कर कुफ्र का धर्म स्वीकार करना उनके लिए ऐसा दुख-दाई और उन पर ऐसा भारी हो जैसे आग के अलाव में डाला जाना।

एक और हदीस में हुज़ूर ने फ़रमाया :—

> तुममें से कोई व्यक्ति उस समय तक पूर्ण रूप से मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि उसको मेरे साथ स्नेह अपने माता, पिता से और अपनी सन्तान से और दुनिया के समस्त लोगों से अधिक न हो।

भाइयो ईमान वास्तव में इसी का नाम है कि आदमी बिल्कुल अल्लाह व रसूल का हो जाय और अपने समस्त सम्बन्धों और इच्छाओं को अल्लाह व रसूल के सम्बन्ध पर और धर्म के मार्ग में बलिदान कर सके जिस प्रकार पवित्र सहाबा (सत संगियों ने) ने कर दिखाया और आज भी अल्लाह के सच्चे और निष्कपट बन्दों की यही दशा है। यद्यपि उनकी संख्या बहुत थोड़ी है। अल्लाह तआला हम सबको उन्हीं के साथ और उन्हीं में से कर दे।

ग्यारहवां पाठ

अल्लाह के सच्चे दीन (धर्म) की सेवा और उसकी ओर बुलावा

भाइयो ! जिस प्रकार हमारे लिए यह आवश्यक है कि अल्लाह और रसूल पर ईमान लायँ और उनके बतलाए हुए नेकी और परहेज़गारी के उस सीधे और उज्ज्वल मार्ग पर चलें जिसका नाम इस्लाम है इसी प्रकार हमारे लिए यह भी अनिवार्य है कि अल्लाह के जो बन्दे उस मार्ग से अनजान हैं या अपनी प्रकृति की बुराई के कारण इस पर नहीं चल रहे हैं उनको भी इसका ज्ञान कराने और इस पर चलाने का प्रयत्न करें अर्थात् जिस प्रकार अल्लाह ने हमारे लिए यह अनिवार्य किया है कि हम उसके अच्छे, आज्ञाकारी भक्त और परहेज़गार बन्दे बनें उसी प्रकार उसने यह भी अनिवार्य किया है कि इस प्रयोजन के लिए हम उसके बन्दों में भी प्रयत्न करें। इसी का नाम दीन की सेवा और दीन की ओर बुलाना है। अल्लाह तआला की दृष्टि में यह कार्य इतना बड़ा है कि उसने सहस्त्रों पैग़म्बर इस संसार में इसी कार्य के लिए भेजे और उन पैग़म्बरों ने अनेक प्रकार के कष्ट उठाकर और दुखों को सहन करके दीन की सेवा की और उसकी ओर बुलाने का यह कार्य

पूरा किया। और लोगों के सुधार के लिए और उनके पथ प्रदर्शन के लिए प्रयत्न किये। (अल्लाह तआला उन पर और उनका साथ देने वालों पर असंख्य रहमतें उतारे)

पैग़म्बरी का यह क्रम ख़ुदा के अन्तिम पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर समाप्त हो गया और अल्लाह तआला ने उन्हीं के द्वारा अपना यह विशेष निर्णय भी घोषित करा दिया कि दीन की शिक्षा और निमन्त्रण और लोगों के सुधार और पथ प्रदर्शन हेतु भविष्य में अब कोई नबी व पैग़म्बर नहीं भेजा जायगा वरन् अब क़ियामत तक यह कार्य उन्हीं लोगों को करना होगा जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लाये हुए सच्चे दीन को स्वीकार कर चुके हों और उनकी हिदायत (आदेश) को मान चुके हों।

सारांश यह कि रिसालत व नबूवत (दूतता) के समाप्त होने के पश्चात् दीन की ओर निमन्त्रण और लोगों के सुधार और पथ प्रदर्शन का सम्पूर्ण उत्तरदायित्व सदा के लिए अब हुज़ूर की उम्मत[1] को सौंप दिया गया है। और वास्तव में यह इस उम्मत की बड़ी उत्तमता है वरन् पवित्र कुरआन में इसी कार्य और इसी सेवा और निमन्त्रण को इस उम्मत के बाक़ी रहने का उद्देश्य बताया गया है। अर्थ यह कि यह उम्मत पैदा ही इसी कार्य के लिए की गई हैं।

पवित्र क़ुरआन का कथन है।

कुन्तुम+ख़ै+र+उम+मतिन+उख़+रिजत+लिन्नासि+

१. अनुयाइयों

ता+मुरु+न+बिल+मारूफ़ि+व+तन+हौ+न+अनिल+मुन+करि+व+तूमिनू+न+बिल्लाह+(आले+इम+रान रुक १२)

كُنْتُمْ خَيْرَ أُمَّةٍ أُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَأْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ

(हे मुहम्मद की उम्मत) तुम हो वह सर्वोत्तम समूह जो इस ससार में लाई गई है लोगों के सुधार के लिये। तुम कहते हो नेकी को और रोकते हो बुराई से और सच्चा ईमान रखते हो अल्लाह पर।

इस आयत (वाक्य) से ज्ञात हुआ कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत दुनिया के अन्य समाजों और समूहों में इसी दृष्टि से विशिष्ट और उत्तम थी कि स्वयं ईमान और नेकी पर चलने के साथ साथ दूसरों को भी नेकी के मार्ग पर चलाने और बुराइयों से बचाने का प्रयत्न करना उसकी विशेष सेवा और उसका प्रमुख कर्त्तव्य था और इसी कारण इसको "सर्वोत्तम उम्मत" ठहराया गया था। इसी से यह भी ज्ञात हो गया कि यह उम्मत यदि दीन का निमन्त्रण देने और लोगों का सुधार और पथ प्रदर्शन करने का कर्त्तव्य पालन न करे तो वह इस श्रेष्ठता की पात्र नहीं वरन् घोर अपराधी और दूषित है कि अल्लाह तआला ने इतने बड़े कार्य का भार उसको सौंपा और उसने उसको पूरा नहीं किया। इसका उदाहरण बिल्कुल ऐसा है कि कोई राजा सिपाहियों के किसी दल को नगर में इस कार्य पर नियुक्त करे कि वह बुराइयों तथा दुष्टताओं को रोके परन्तु वह सिपाही इस सेवा की पूर्ति न करे

वरन् वह भी स्वयं सब बुराइयां और अपराध करने लगें जिनकी रोकथाम हेतु बादशाह ने डियूटी लगाई थी तो स्पष्ट है कि यह अपराधी सिपाही पारितोषिक अथवा नौकरी पर नियुक्त रहने के अधिकारी तो क्या होते कड़े दण्ड के योग्य होंगें बल्कि उनको अन्य अपराधियों और दुष्टों से अधिक दण्ड दिया जाय तो अनुचित न होगा। शोक की बात है कि इस समय इसलामी उम्मत की यही दशा है कि दीन की सेवा और उसकी ओर निमन्त्रण और दुनिया के सुधार तथा पथ प्रदर्शन का तो नाम ही लेना व्यर्थ है स्वयं उनमें दस पांच प्रतिशत से अधिक ऐसे नहीं रहे हैं जो वास्तव में मुसलमान और ईमान वाले हों नेकियां करते हों और बुराइयों से बचते हों। ऐसी दशा में हमारा सर्वप्रथम कर्त्तव्य यह है कि दीन की ओर निमन्त्रण और सुधार और पथ प्रदर्शक का कार्य पहले इस उम्मत ही के उन क्षेत्रों में किया जाय जो दीन व ईमान और नेकी तथा परहेज़गारी के मार्ग से दूर हो गये हैं।

इसका एक कारण तो यह है कि जो लोग अपने को मुसलमान कहते और कहलाते हैं चाहे उनकी क्रियात्मक दशा कैसी ही हो वह इतना तो हैं ही कि ईमान व इस्लाम का इकरार करके ख़ुदा व रसूल और उनके दीन के साथ एक प्रकार का नाता तथा सम्बन्ध और एक प्रकार की विशेषता उत्पन्न कर चुके हैं और इस्लामी सूसायटी और बिरादरी के एक सदस्य बन चुके हैं अतः हमारे लिए उनके सुधार और पथ प्रदर्शन की चिन्ता अति आवश्यक है जिस प्रकार स्वाभाविक रूप से प्रत्येक व्यक्ति पर उसकी सन्तान और उसके समीप के नातेदारों की देखभाल का उत्तरदायित्व अन्य लोगों की अपेक्षा अधिक होता है।

एक दूसरा कारण यह भी है कि दुनिया के साधारण लोग मुसलमानों की वर्तमान दशा देखकर इसलाम की उत्तमता और उसके गुणों को कभी समझ नही सकते वरन् उलटे उससे घृणा करने लगते हैं । सदा से सामान्य लोगों का यही नियम रहा है और अब भी यही नियम है कि किसी धर्म के माननेवालों की दशा और उनके स्वभाव और उनके कर्मों तथा कार्यों को देखकर ही उस धर्म के बारे में अच्छा अथवा बुरा विचार अपनाते हैं । जिस काल में मुसलमान साधारणतया सच्चे मुसलमान होते थे और पूर्ण रूप से इस्लाम के आदेशों पर चलते थे तो दुनिया के लोग केवल उनको देखकर इसलाम की ओर आकर्षित होते थे और क्षेत्र के क्षेत्र तथा पूरी-पूरी जातियां इस्लाम में प्रवेश करती थीं परन्तु जबसे मुसलमानों में अधिक संख्या ऐसे लोगों की हो गई जो अपने को मुसलमान तो कहते हैं परन्तु उनके कर्म और स्वभाव इस्लामी नहीं हैं और उनके दिल ईमान और तक़वे की ज्योति से रिक्त (खाली) हैं । उस समय से दुनिया इसलाम ही के बारे में बुरे विचार रखने लगी है ।

सारांश यह है कि हमें इस तथ्य को भली भांति समझ लेना चाहिये कि इस्लामी उम्मत की जीवन पद्धति और मुसलमान जाति की क्रियात्मक दशा ही इस्लाम के सम्बन्ध में सबसे बड़ी गवाही है । यदि वह अच्छी होगी तो दुनिया इस्लाम के सम्बन्ध में अच्छे विचार बनाएगी और आप से आप उसकी ओर आएगी और यदि वह बुरी होगी तो फिर सामान्य रूप से इस्लाम ही को बुरा जानेगी और फिर उनको यदि इस्लाम की ओर आने का निमन्त्रण दिया भी जायेगा तो उसका कोई प्रभाव न पड़ेगा अतः दूसरों में इस्लाम की ओर आने के निमन्त्रण का कार्य भी इसी पर

निर्भर है कि मुसलमान उम्मत में इस्लामी जीवन अर्थात् ईमान और अच्छे कार्य सामान्य रूप से प्रचलित हो जायें। अतः इस दृष्टि-कोण से भी यही आवश्यक है कि पहले मुसलमानों ही के सुधार और पथ प्रदर्शन का प्रयत्न किया जाय और इनमें इस्लामी जीवन को प्रचलित करने का प्रयत्न पूर्ण लीनता से किया जाय। पवित्र कुरआन में इस कार्य को अर्थात् धर्म की सेवा तथा निमन्त्रण और लोगों के सुधार और पथ प्रदर्शन के प्रयास को जिहाद भी कहा गया है। वरन् जिहादे कबीर अर्थात् बड़ा जिहाद बतलाया गया है।[1]

और इसमें कोई सन्देह नहीं कि यदि यह कार्य सच्चाई और अच्छाई के साथ केवल अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए किया जाय तो अल्लाह की दृष्टि में यह बहुत बड़ा जिहाद है।

बहुत से लोग समझते हैं कि जिहाद केवल उस युद्ध का नाम है जो धार्मिक सिद्धान्तों और निर्देशों के अनुसार अल्लाह के मार्ग में लड़ी जाय परन्तु सही बात यह है कि दीन की ओर बुलाने के लिए और खुदा के बन्दों के सुधार और पथ प्रदर्शन के लिए जिस समय जो प्रयत्न किया जा सकता हो वही उस समय का प्रमुख जिहाद है।

पवित्र रसूल (उन पर लाखों सलाम) नबी होने पर बारह तेरह वर्ष पवित्र मक्का नगर में रहे इस सम्पूर्ण अवधि में आप का और आपके सतसंगियों का जिहाद यही था कि रुकावटों तथा

१. (सूरए फ़ुर्क़ान की आयत के बारे में तफसीर (अर्थ) लिखनेवालों का विचार साधारणतया यही है कि इसमें तबलीग़ व दावत अर्थात् दीन पहुंचाना और दीन के निमन्त्रण का अर्थ निकलता है।)

अनेक प्रकार के कष्टों के होते हुए भी दीन पर स्वयं दृढ़तापूर्वक जमें रहे और दूसरों के सुधार और पथ प्रदर्शन के उपाय करते रहे। और ख़ुदा के बन्दों को खुले छुपे अल्लाह् के दीन का निमन्त्रण देते रहें। सारांश यह कि अल्लाह् को भूले हुए और मार्ग से भटके हुए बन्दों को अल्लाह् से मिलाने की और सीधे मार्ग पर चलाने की कोशिश करना और इस मार्ग में अपना तन, मन, धन लगाना और सुख समृद्धि एवं शान्ति का बलिदान करना यह सब अल्लाह की दृष्टि में जिहाद ही में गिना जाता है वरन उस समय का प्रमुख जिहाद यही है।

इस कार्य के करनेवालों को परलोक में जो बदला और प्रतिफल मिलनेवाला है और न करनेवालों के लिए अल्लाह् के शाप और क्रोध का जो भय है, उसका अनुमान निम्नलिखित आयतों और ह़दीसों से कुछ हो सकता है।

ह़ज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु (अल्लाह् उनसे प्रसन्न हो) का वृत्तान्त है कि पवित्र रसूल ने (उन पर सलाम हो) फ़रमाया :—

> जो व्यक्ति लोगों को सीधे मार्ग का निमन्त्रण दे और नेकी की ओर बुलाए तो जो लोग इसकी बात मान कर जितनी नेकियां और भलाइयां करेंगे और इन नेकियों का जितना सवाब (प्रतिफल) उन करनेवालों को मिलेगा उतना ही प्रतिफल उन लोगों को भी मिलेगा जिन्हों ने उनको नेकी का निमन्त्रण दिया और इसके कारण स्वयं नेकी करनेवालों के बदले और प्रतिफल में कोई कमी न होगी।"

इस ह़दीस से ज्ञात हुआ कि उदाहरणार्थ यदि आपके बुलाने

और प्रयत्न करने से दस बीस आदमियों का भी सुधार हो गया और वह खुदा व रसूल को पहचानने लगे और धार्मिक आदेशों पर चलने लगे, नमाज़ें पढ़ने लगे और इसी प्रकार अन्य कर्तव्यों का पालन करने लगे और पापो तथा बुरी बातों से बचने लगे तो इनका जितना प्रतिफल उन सबको मिलेगा उस सबके योग के बराबर अकेले आपको मिलेगा। यदि आप सोचें तो आपको ज्ञात होगा कि इतना प्रतिफल कमाने का कोई दूसरा मार्ग है ही नहीं कि एक आदमी को सैकड़ों आदमियों की नेकियों और इबादतों का प्रतिफल मिल जाय। एक दूसरे वृत्तान्त में है कि पवित्र रसूल ने हज़रत अली (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) से फ़रमाया कि :—

> ऐ अली ! सौगन्ध अल्लाह की यदि तुम्हारे द्वारा एक व्यक्ति को भी सीधा मार्ग मिल जाय तो तुम्हारे लिये यह इसकी अपेक्षा अधिक अच्छा है कि बहुत से लाल ऊँट तुमको प्राप्त हो जायें (अरब के लोग लाल ऊँटों को बड़ी सम्पत्ति समझते थे)।

वास्तव में अल्लाह के बन्दों का सुधार और उनका पथ प्रदर्शन जैसा कि पहले कहा गया है बहुत उच्च कोटि की सेवा और नेकी है और पैग़म्बरों का प्रमुख कार्य तथा कर्त्तव्य है फिर दुनिया की बड़ी से बड़ी सम्पत्ति की भी इसके सामने क्या हैसियत हो सकती है।

पवित्र रसूल ने (उन पर लाखों सलाम) एक और हदीस में लोगों के सुधार और पथ प्रदर्शन के कार्य के महत्व को एक सरल उदाहरण द्वारा समझाया है। आपके कथन का सारांश यह है कि :—

"मान लो एक नाव है जिसमें नीचे ऊपर दो दरजे हैं और नीचे के दरजेवाले यात्रियों को पानी ऊपर के दरजे से लाना पड़ता है जिससे ऊपर वाले यात्रियों को कष्ट होता है और वह उन पर क्रुद्ध होते हैं तो यदि नीचेवाले यात्री अपनी मूर्खता और ग़लती से नीचे ही से जल प्राप्त करने के लिये नाव के निचले भाग में छेद करने लगें और ऊपर के दरजे वाले उनको इस ग़लती से रोकने का प्रयत्न न करें तो परिणाम यह होगा कि नाव सबही को लेकर डूब जायगी और यदि ऊपरवाले यात्रियों ने समझा बुझाकर नीचे के दरजे वालों को इस कार्य से रोक दिया तो वह उनको भी बचा लेंगे, और स्वयं भी बच जाएँगे।" हुज़ूर ने फ़रमाया "बिलकुल इसी तरह पापों और बुराइयों की भी दशा है। यदि किसी स्थान के लोग मूर्खता की बातों और पापों में फंसे हुए हों और वहाँ के समझदार और भले लोग उनके सुधार और उनके पथ प्रदर्शन का प्रयत्न न करें तो परिणाम यह होगा कि पापियों और अपराधियों के कारण ख़ुदा का क्रोध उतरेगा और फिर सबही उसकी लपेट में आ जायेंगे और अगर उनको पापों और बुराइयों से रोकने का उपाय कर लिया गया तो फिर सब ही दन्ड से बच जायंगे।

एक और हदीस में है कि पवित्र रसूल ने (उन पर लाखों सलाम) बड़ा ज़ोर देते हुए शपथ के साथ फ़रमाया कि :—

"उस अल्लाह की सौगन्ध जिसके अधिकार में मेरे प्राण

है कि तुम अच्छी बातों और नेकियों को लोगों से कहते रहो और बुराइयों से उनको रोकते रहो। याद रखो यदि तुमने ऐसा न किया तो अति सम्भव है कि अल्लाह तुम पर कोई कड़ा दण्ड डाल दे और फिर तुम उससे प्रार्थनाएं करो और तुम्हारी प्रार्थनाएं भी उस समय न सुनी जायं।"

भाइयो इस काल के कुछ खुदा तक पहुंचे हुए और स्वच्छ एवं उज्वल हृदयवाले महापुरुषों का विचार है कि मुसलमानों पर एक मुद्दत से जो कठिनाइयां कष्ट और अपमान की वर्षा हो रही है और जिन उलझनों में वह फंसे हुए हैं जो सहस्रों प्रार्थनाओं, पाठों तथा जापों से भी नही टल रही हैं। इसका विशेष कारण यही है कि हम दीन की सेवा और उसकी ओर निमन्त्रण तथा लोगों के सुधार और पथ प्रदर्शन के काम को छोड़े हुए हैं जिसके लिये हम पैदा किये गये थे और नबूवत समाप्त हो जाने के कारण जिसके हम पूर्ण रूप से उत्तरदायी बनाए गये थे और दुनिया का भी ऐसा ही नियम है कि जो सिपाही अपनी प्रमुख ड्युटी पूरी न करे उसको अलग कर दिया जाता है और बादशाह जो दण्ड उसके लिये उचित समझता है देता है।

आओ भविष्य के लिये इस कर्तव्य और इस ड्यूटी का पालन करने का हम सब प्रण करें अल्लाह तआला हमारी सहायता करे। उसका वचन है कि :—

"अल्लाह उन लोगों की अवश्य सहायता करेगा जो उसके दीन की सहायता करेंगे।"

बारहवां पाठ

धर्म पर दृढ़तापूर्वक स्थिर रहना

ईमान लाने के पश्चात् बन्दे पर अल्लाह की ओर से जो विशेष उत्तरदायित्व लागू होते है उनमें से एक बड़ा उत्तरदायित्व यह है कि बन्दा पूर्ण दृढ़ता और साहस के साथ दीन पर जमा रहे चाहे समय उसके लिए कैसा ही प्रतिकूल हो चाहे जो हो जाय वह किसी दशा मे धर्म की रस्सी को हाथ से छोड़ने के लिये तय्यार न हो इसी का नाम इसतिक़ामत है (दृढ़ता पूर्वक जमा रहना) पवित्र क़ुरआन मे ऐसे लोगों के लिये बड़े पारितोषिकों और उच्च पदों का वर्णन किया गया है। एक स्थान पर कहा गया है कि :—

इन्नल+लज़ी+न+क़ालू+रब्बु नल्लाहु+सुम+मस्तक़ामू+त+त नज़्ज़+लु अलैहिमुल+म लाइक+तु+अल्ला+तख़ाफ़ू+व+ला+तह+ज़नू+व+अब+शिरू+बिल+जन्नतिल+लती+कुन्तुम तू+अदून+नहनु+औलियाउकुम+फ़िल+हयातिद्दुनया+व+फ़िल+आखि+रति व+लकुम+फ़ीहा+मा+तश्तही+अन+फ़ुसुकुम + व+लकुम + फ़ीहा+मा+तद्दऊन+नुज़ुलम मिन ग़फ़ूरिर्रहीम (हा+मीम+सजदह रूकू ४)

إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلَائِكَةُ أَلَّا
تَخَافُوا وَلَا تَحْزَنُوا وَأَبْشِرُوا بِالْجَنَّةِ الَّتِي كُنتُمْ تُوعَدُونَ ۝ نَحْنُ

اَوْلِيٰٓؤُكُمْ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِى الْاٰخِرَةِ وَلَكُمْ فِيْهَا مَا تَشْتَهِىْٓ اَنْفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِيْهَا مَا تَدَّعُوْنَ ۝ نُزُلًا مِّنْ غَفُوْرٍ رَّحِيْمٍ ۝ (حم السجدة ع ٤)

जिन लोगों ने दिल से स्वीकार करके वचन दे दिया कि हमारा पालनहार केवल अल्लाह है और हम केवल उसी के बन्दे हैं फिर वह इस वचन पर ठीक ठीक दृढ़ता पूर्वक जमे रहे अर्थात वचन की पूर्ति करते रहे और कभी उससे न हटे उन पर अल्लाह की ओर से फ़रिश्ते यह संदेशा लेकर उतरेंगे कि कुछ चिन्ता न करो और किसी बात का शोक न करो और उस जन्नत के मिलने से प्रसन्न रहो जिसका तुमको वचन दिया जाता था हम तुम्हारे सहायक हैं लौकिक जीवन में और परलोक में और तुम्हारे लिये उस जन्नत में वह सब कुछ होगा जो तुम्हारा जी चाहेगा और तुम्हें वह सब कुछ मिलेगा जो तुम माँगोगे, यह सत्कार होगा तुम्हारे क्षमा करने वाले और करुणाशील पालनहार की ओर से।

सुबहानल्लाह ! दीन पर दृढ़तापूर्वक स्थिर रहनेवालों और भक्ति का हक़ अदा करनेवालों के लिये इस आयत में कैसा शुभ समाचार है। सच तो यह है कि यदि जान माल सब कुछ बलिदान करके भी किसी को यह पद प्राप्त हो जाय तो वह बड़ा भाग्यवान् है। एक हदीस मे है कि :—

पवित्र रसूल से एक सहाबी (सत्संगी) ने निवेदन किया कि हज़रत मुझे कोई ऐसा परिपूर्ण उपदेश दीजिये कि आपके पश्चात फिर किसी से कुछ पूछने की आवश्यकता

न पड़े। आपने फ़रमाया कि "कहो बस अल्लाह मेरा रब है (पालनहार) और फिर इस पर दृढ़तापूर्वक जमे रहो" (और उसके अनुसार आज्ञाकारी जीवन व्यतीत करते रहो)।

पवित्र कुरआन में हमारे पथ प्रदर्शन के लिये अल्लाह तआला ने अपने कई सच्चे भक्तों की ऐसी उपदेशपूर्वक घटनाएं वर्णन की हैं जो प्रतिकूल परिस्थितियों में भी दीन पर स्थिर रहे और बड़े से बड़ा मोह और कड़े से कड़े कष्टों का भय भी उनको दीन से नहीं हटा सका। इनमें से एक घटना तो उन जादूगरों की है जिन्हें फ़िरऔन ने हज़रत मूसा (उन पर सलाम हो) से मुक़ाबिला करने के लिये बुलाया था और बड़े पारितोषिक और सम्मान का उनको वचन दिया था। परन्तु ठीक मुक़ाबिले के समय जब हज़रत मूसा (उन पर सलाम हो) के धर्म की सच्चाई उन पर खुल गई तो न तो उन्होने इसकी परवाह की कि फ़िरऔन ने जिस पारितोषिक और सम्मान का और जिन बड़े-बड़े पदों का वचन हमको दिया है उनसे हम वंचित कर दिये जायंगे और न इसकी परवाह की कि फ़िरऔन हमें कितना कड़ा दण्ड देगा। सारांश यह कि उन्होंने इन सब आपत्तियों से बेपरवाह होकर भरे जन समूह में पुकार कर कह दिया कि :—

آمَنَّا بِرَبِّ هَارُونَ وَمُوسَىٰ

आमन्ना बिरब्बि हारू+न व+मूसा

(हारून और मूसा जिस परवर्दिगार की आराधना का निमन्त्रण देते हैं हम उन पर ईमान ले आए)। फिर जब ख़ुदा के शत्रु फ़िरऔन ने उनको धमकी दी कि मैं तुम्हारे हाथ पाँव

कटवा के सूली पर लटकवा दूंगा तो उन्होंने पूर्ण ईमानी साहस से उत्तर दिया।

फ़क़+ज़ि+मा+अन+त+क़ाज़ + इन+नमा+ तक़ +ज़ी +हाज़िहिल+हयातद्दुनया।

इन्ना+आमन्ना+बिरब्बिना+लियग़+फ़ि+र+लना+ख़ता +याना। (सूरए ताहा-रुकू ३)

فَاقْضِ مَآ اَنْتَ قَاضٍ اِنَّمَا تَقْضِىْ هٰذِهِ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ۝ اِنَّآ اٰمَنَّا بِرَبِّنَا لِيَغْفِرَ لَنَا خَطٰيٰنَا

तुझे जो आज्ञा देनी हो दे डाल। तू अपनी आज्ञा केवल इसी कुछ दिन के लौकिक जीवन ही में तो चला सकता है और हम तो अपने सच्चे रब (पालनहार) पर ईमान इसलिए लाए है कि वह (परलोक के अनन्त जीवन में) हमारे अपराध क्षमा कर दे।

और इससे भी अधिक शिक्षाप्रद घटना स्वयं फ़िरऔन की पत्नी की है। आप जानते हैं कि फ़िरऔन मिस्र देश के राज्य का एकमात्र स्वामी और अधिकारी था और उसकी यह पत्नी मिस्र देश की रानी होने के साथ फ़िरऔन के हृदय की भी मालिक थी। बस इससे अनुमान कीजिये कि इसको दुनिया का कितना सम्मान और कैसा आनन्द प्राप्त था। परन्तु जब हज़रत मूसा (उन पर अल्लाह की सलाम हो) के धर्म और उनके आमन्ना की सच्चाई उस बन्दी पर खुल गई तो उसने बिलकुल इसकी परवाह न की कि फ़िरऔन मुझ पर कैसे-कैसे अत्याचार करेगा और दुनिया के इस आनन्द के स्थान पर मुझे कितनी कठिनाइयां और कैसे कष्ट

झेलने पड़ेंगे। संक्षेप यह कि इन सब बातो से बिलकुल बेपरवाह होकर उसने अपने ईमान की घोषणा कर दी और फिर सत्य के मार्ग में अल्लाह की उस बन्दी ने ऐसे-ऐसे कष्ट सहे जिनको सोचकर रोंगटे खड़े हो जाते हैं और कलेजा मुंह को आता है। फिर अल्लाह तआला की ओर से उनको यह पद मिला कि पवित्र क़ुरआन में बड़े सम्मान के साथ उनका वर्णन किया गया और मुसलमानों के लिये उनकी सहनशीलता और उनके बलिदान को आदर्श बताया गया। पवित्र क़ुरआन है।

व+ज़+र+बल्लाहु+म+स+लल+लिल+लज़ी+न+आ+मनुम+र अ+त+फ़िर+औन+इज़+क़ालत+रब्बिब+नि+ली+इन+द+क+बैतन+फ़िल+जन्नति+व+नज्जिनी+मिन+फ़िर+औ+न+व+अ+मलिही व+नज्जिनी+मिनल+क़ौमिज+ज़ालिमीन+ (सूरए तहरीम रूकू २)

وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا امْرَاَتَ فِرْعَوْنَ اِذْ قَالَتْ رَبِّ ابْنِ لِيْ عِنْدَكَ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ وَنَجِّنِيْ مِنْ فِرْعَوْنَ وَعَمَلِهٖ وَنَجِّنِيْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝

और ईमानवालों के लिये अल्लाह तआला उदाहरण प्रस्तुत करता है फ़िरऔन की पत्नी (आसिया) की जब कि उसने प्रार्थना की कि हे मेरे परवर्दिगार तू मेरे वास्ते जन्नत में अपने समीप एक घर बना दे और मुझे फ़िरऔन के उपद्रव और अत्याचार से और उसके कुकर्मों से मुक्ति दे और इस अत्याचारी समूह से मुझे छुटकारा प्रदान कर दे।

सुबहानल्लाह (पवित्र है अल्लाह) क्या पद और क्या ज्ञान है कि समस्त उम्मत के लिये अर्थात् हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (उनसे

खुदा राज़ी हो) से लेकर क़ियामत तक के सब मुसलमानों के लिये अल्लाह तआला ने अपनी इस बन्दी की दृढ़ता को उदाहरण और आदर्श ठहराया।

पवित्र हदीस में है कि पवित्र मक्का नगर में जब मूर्तिपूजा करनेवालों ने मुसलमानों को बहुत सताया और उनके अत्याचार सीमा से बढ गये तो कुछ सहाबा (सत्संगियों ने) ने रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से निवेदन किया कि "हुजूर अब इन दुष्टों के अत्याचार सीमा पार करते जा रहे हैं अतएव आप अल्लाह तआला से प्रार्थना करें" तो हुज़ूर ने उत्तर दिया कि "तुम अभी से घबरा गये! तुमसे पूर्व सत्य को ग्रहण करनेवालों के साथ यहाँ तक हुआ है कि लोहे की तेज़ कंघियां उनके सरों में चुभोकर खींच दी जाती थीं और किसी के सर पर आरा चला के बीच से दो टुकड़े कर दिये जाते थे परन्तु ऐसे प्रचण्ड अत्याचार भी उनको अपने सच्चे दीन से नहीं फेर सकते थे और वह अपना धर्म नहीं छोड़ते थे।

अल्लाह तआला हम-निर्बलों को भी अपने इन सच्चे भक्तों के साहस और उनकी दृढ़ता का कोई अंश प्रदान करे और यदि ऐसा कोई समय भाग्यवश आ ही जाय तो अपने इन सच्चे भक्तों के पद चिन्हों पर चलने के लिये सहायता प्रदान करें।

कैसी सुन्दर रीति बनाई चरणों में मिट जाने की।
अपने लाल लहू में रंग कर अपने प्राण गँवाने की॥
करुणामय की रहमत से इन पाक शहीदों पर सूफ़ी।
आज्ञा हो ठण्डे झोंकों को दया पुष्प बरसाने की॥

तेरहवाँ पाठ

दीन (धर्म) के लिये प्रयत्न, दीन की सहायता तथा समर्थन

ईमानवालों से अल्लाह की प्रमुख माँग और उनको अत्यन्त दृढ़ आदेश एक यह भी है कि जिस सच्चे दीन को और अल्लाह की आराधना वाले जिस अच्छे नियम को उन्हों ने सच्चा और अच्छा समझ कर ग्रहण किया है वह उसको जीवित और हरा भरा रखने के लिये और उसको अधिकाधिक रवाज देने के लिये जो प्रयत्न कर सकते हों अवश्य करें! दीन की विशेष भाषा में इसका नाम "जिहाद" (दीन के लिये यथा सम्भव प्रयत्न) है। और विभिन्न परिस्थितियों में इसके विभिन्न स्वरूप हैं। उदाहरणार्थ यदि किसी काल में ऐसी परिस्थिति हो कि स्वयं अपना और अपने घरवालों का और अपनी जाति और समूह का दीन पर स्थिर रहना कठिन हो और इसके कारण दुख और कष्ट उठाने पड़ते हों तो ऐसी परिस्थिति में स्वयं अपने को और घर वालों को और अपनी जाति वालों को दीन पर दृढ़तापूर्वक जमे रहने का प्रयत्न करना और दृढ़तापूर्वक दीन पर जमे रहना बहुत बड़ा जिहाद है। इसी प्रकार यदि किसी समय मुसलमान कहलाने वाली क़ौम अज्ञानता तथा

अचेतना के कारण अपने दीन से दूर होती चली जा रही हो तो उसके सुधार और धार्मिक दीक्षा का प्रयत्न करना और इसमें अपने प्राण और अपने धन का लगाना और खपाना भी "जिहाद" ही का एक रूप है इसी प्रकार अल्लाह के जो बन्दे अल्लाह के सच्चे दीन से और अल्लाह के उतारे हुए आदेशों से अनजान है उनको सभ्यता, प्रेम और सच्ची सहानुभूति के साथ दीन का सन्देश पहुँचाने और अल्लाह के आदेशों से जानकारी कराने में दौड़ धूप करना भी जिहाद का एक स्वरूप है।

और अगर कोई ऐसा समय हो कि अल्लाह व रसूल पर विश्वास रखनेवाले समाज के हाथ में राजनैतिक बल और शक्ति हो और अल्लाह के दीन की संरक्षा और सहायता के उद्देश्य की माँग यही हो कि उसके लिये राजशक्ति का प्रयोग किया जाय तो उस समय अल्लाह के नियुक्त किये हुये नियमों के अनुसार दीन की सुरक्षा और सहायता के लिये शक्ति का प्रयोग जिहाद है। परन्तु उसके जिहाद और इबादत होने की दो विशेष शर्तें हैं एक यह कि उनका यह पग उठाना किसी निजी या जातीय लाभ की दृष्टि से अपनी या जाति के पक्षपात व शत्रुता के कारण न हो वरन् वास्तविक उद्देश्य केवल अल्लाह की आज्ञा पालन और उसके दीन की सेवा हो दूसरे यह कि उसके नियमों का पूर्ण प्रतिपालन हो। इन दो शर्तों की पूर्ति के बिना यदि शक्ति का प्रयोग होगा तो धर्मशास्त्र की दृष्टि से वह जिहाद नहीं उपद्रव होगा।

इसी प्रकार अत्याचारी और अन्यायी राजाधिकारियों के सामने चाहे व मुसलमानों में से हों या दूसरे लोगों में से सत्य

बात कहना भी जिहाद का विशेष रूप है जिसको पवित्र हदीस में अफ़ज़लुल जिहाद (जिहादों में सर्वोच्च) फ़रमाया गया है ।

दीन के लिये प्रयत्न करने और उसकी सहायता और रक्षा करने के यह समस्त स्वरूप जिनका अभी वर्णन हुआ अपने अपने अवसर पर इस्लाम के अनिवार्य कर्तव्य हैं और जिहाद का शब्द जैसा कि ऊपर हमने बतलाया इन सब पर लागू है । अब इसकी ताकीद तथा उत्तमता के बारे में कुछ आयतें और हदीसें सुन लीजिये ।

व जाहिदू फ़िल्लाहि हक़्क़ जिहादि ही हुवज तबाकुम (सू० अलहजा रु० १०)

وَجَاهِدُوْا فِي اللّٰهِ حَقَّ جِهَادِهٖ هُوَاجْتَبٰكُمْ

और प्रयत्न करो अल्लाह के रास्ते में जैसा कि उसका हक़ है । उसने (अपने धर्म के लिये) तुमको चुना है ।

या+अय्यु+हल+लज़ी+न+आ + मनू + हल + अदुल्लु-कुम+अला+तिजा+रतिन+तुन जीकुम + मिन + अज़ाबिन + अलीम+तूमि + नू + न + बिल्लाहि + व + रसूलिही + व + तुजाहिदू+न+फ़ी+सबीलिल+लाहि+बिअम+वालिकुम+व+अन+फ़ुसिकुम+ज़ालिकुम+ख़ै+रुल+लकुम+इन + कुन्तुम + ता+लमून+यग़+फ़िर+लकुम+ज़ुनू+बकुम+व+युद + ख़िल +कुम+जन्नातिन+तज+री+मिन+तह+तिहल+ अन + हारु +व+मसाकि+न+तय्यि + बतन + फ़ी + जन्नाति +अद्न+ ज़ालिकुम+फ़ौज़ुल+अज़ीम+ (सूरए सफ़, रुकु २)

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰى تِجَارَةٍ تُنْجِيْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝
تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتُجَاهِدُوْنَ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ
ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝ يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ وَيُدْخِلْكُمْ جَنّٰتٍ
تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ وَمَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِىْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ذٰلِكَ
الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ (سورة الصف ع ٢)

ऐ ईमानवालों क्या मैं तुम्हें एक ऐसे व्यापार और एक ऐसे सौदे का पता दे दूँ जो कठोर दण्ड से तुम्हारी नजात दिला दे—वह यह है कि अल्लाह और उसके रसूल पर तुम अपने विश्वास को पक्का करो और उसके मार्ग में (अर्थात् उसके दीन के लिये) अपने धन और अपने जी जान से प्रयत्न करो। यह अत्यन्त अच्छा सौदा है तुम्हारे लिये यदि तुम्हें समझ बूझ हो (यदि तुमने अल्लाह व रसूल पर पूर्ण विश्वास वाली और उसके मार्ग में जान और माल से प्रयत्न करने वाली शर्त पूरी कर दी तो) वह तुम्हारे अपराध क्षमा कर देगा और तुमको (परलोक की) उन वाटिकाओं में स्थान देगा जिनके नीचे नहरें जारी होंगी और अनाशवान जन्नत के सुन्दर घरों में तुमको बसाएगा। यह तुम्हारी बड़ी सफलता तथा समृद्धि है ?

पवित्र हदीस में है कि हुज़ूर ने एक दिन व्याख्यान दिया उसमें फरमाया:—

"अल्लाह पर पूर्ण विश्वास रखना और दीन के लिये प्रयत्न करना सर्वश्रेष्ठ कर्म है"

एक और हदीस में है कि—

"जिस बन्दे के पाँव पर खुदा के मार्ग में चलने के कारण धूल लगी यह असम्भव है कि नर्क की आग फिर उसको छू सके"

एक और हदीस में है कि :—

तुममें से किसी व्यक्ति का खुदा की राह में (अर्थात् अल्लाह के दीन को कोशिश और उसकी सहायता और रक्षा में) खड़ा होना और भाग लेना अपने घर के कोने में रहकर सत्तर साल नमाज़ पढ़ने से अच्छा है।

अल्लाह तआला हम सब को इस योग्य बनाये कि हम भी दीन की कोशिश और सहायता और रक्षा का यह सबाब (प्रतिफल) प्राप्त कर सकें।

चौदहवां पाठ

शहादत की श्रेष्ठता और शहीदों का उच्चपद

सच्चे दीन अर्थात् इस्लाम पर स्थिर रहने के कारण यदि अल्लाह के किसी बन्दे या बन्दी का वध कर दिया जाय अथवा दीन के प्रयत्न और रक्षा में किसी भाग्यवान् के प्राण चले जायँ तो दीन की विशेष भाषा में उसको "शहीद" कहते हैं और अल्लाह के यहाँ ऐसे लोगों का बहुत बड़ा पद है। ऐसे लोगों के विषय में पवित्र क़ुरआन में कहा गया है कि इनको कदापि मरा हुआ न समझो वरन् शहीद हो जाने के पश्चात् अल्लाह की ओर से इनको विशेष जीवन मिलता है और इन पर अनेकानेक नेमतों की वर्षा होती रहती है।

व+ला + तह+सबन + नल+लज़ी+ न+ क़ुतिलू+फ़ी+ सबीलिल्लाहि + अम + वातन + बल + अहयाउन +इन+द+ रब्बिहिम+युर+ज़क़ू न+ (सूरए आले इम रान+रुकू १७)

وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتًا بَلْ اَحْيَاۤءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُوْنَ

जो लोग अल्लाह की राह में (अर्थात् दीन के रास्ते में) मारे जायँ उनको कदापि मरा हुआ न समझो वरन वह जीवित हैं अपने परवर्दिगार के पास उनको भिन्ने-भिन्न नेमतें दी जाती हैं।

शहीदों पर अल्लाह तआला का कैसा-कैसा प्यार होगा और उनको कैसे-कैसे पारितोषिक मिलेंगे, इसका अनुमान हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इस हदीस से किया जा सकता है :—

"जन्नतियों में से कोई व्यक्ति भी यह न चाहेगा कि उसको फिर दुनिया में लौटाया जाय यद्यपि उनसे कहा जाय कि तुमको सम्पूर्ण दुनिया दे दी जायगी परन्तु शहीद इसकी इच्छा करेंगे कि एक बार नहीं उनको दस बार फिर दुनिया में भेजा जाय ताकि प्रत्येक बार वह अल्लाह के मार्ग में शहीद होकर आएँ। उनकी यह इच्छा शहादत के उच्च पद और उसके विशेष पारितोषिक को देख कर होगी।"

शहादत की इच्छा और उसकी चेष्टा में स्वयं रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की यह दशा थी कि एक हदीस में फ़रमाया :—

"शपथ उसकी जिसके वश में मेरी जान है कि मेरा जी चाहता है कि मैं अल्लाह की राह में वध किया जाऊँ फिर मुझे ज़िन्दा कर दिया जाय और फिर मैं वध किया जाऊँ फिर मुझे जीवन प्रदान किया जाय और फिर मैं

वध किया जाऊँ।"

एक हदीस में है:—

शहीद को अल्लाह तआला की ओर से छः पारितोषिक मिलते हैं! एक यह कि उसको तुरन्त ही मुक्ति प्रदान कर दी जाती है और उसको जन्नत में मिलने वाला उसका महल व स्थान दिखा दिया जाता है। दूसरे यह कि क़ब्र के दण्ड से उसको बचा दिया जाता है। तीसरे यह कि क़ियामत के दिन की अत्यन्त घबराहट और व्याकुलता से उसको शांति दी जायगी जिससे वहां सब व्याकुल होंगे (सिवा उसके जिसको अल्लाह चाहे) चौथें यह कि कियामत में उसके सिर पर आदर तथा सम्मान एक ऐसा ताज रखा जायगा जिस का संसार और जो कुछ भी ससार में है उससे उत्तम होगा। पाँचवें यह कि जन्नत की हूरों (बेवियाही सुन्दर जवान स्त्रियाँ) में से ७२ उसको विवाह में दी जायँगी। छठे यह कि उसके नातेदारों में से ७० के विषय में उसकी सिफ़ारिश स्वीकार की जायगी।"

एक हदीस में है।

"शहीद होनेवाले के समस्त पाप क्षमा कर दिये जाते हैं। अलबत्ता यदि किसी का क़रजा उसके ऊपर होगा तो उसका भार लदा रहेगा।"

और याद रहे कि प्रतिफल और श्रेष्ठता इसी पर निर्भर नहीं है कि दीन की राह में आदमी मार ही डाला जाय वरन्

यदि दीन के कारण किसी ईमान वाले को सताया गया, निरादर किया गया, मारा पीटा गया अथवा उसका धन लूटा गया या किसी और प्रकार की हानि उसको पहूँचाई गई तो इस सबका भी अल्लाह तआला के यहाँ बहुत बड़ा प्रतिफल मिलेगा और अल्लाह तआला ऐसे लोगों को इतने बड़े पद देगा कि बड़े बड़े सयंमी तथा तपस्वी इन पर ईर्षा करेंगे। जिस प्रकार लौकिक राज्यों में उन सिपाहियों का बड़ा सम्मान होता है और उन्हे बड़े बड़ें पारितोषिक और पदवियाँ दी जाती हैं जो अपने राज्यों की सेवा तथा सहानुभूति में चोटें खाएँ, मारे पीटे जायँ, घायल हों और फिर भी राजभक्त रहें, इसी प्रकार अल्लाह के यहाँ उन बन्दों का विशेष सम्मान है जो अल्लाह के दीन पर चलने और दीन पर स्थिर रहने के अपराध में या दीन की उन्नति और समृद्धि के लिये प्रयत्न करने के संबंध में मारे पीटे जायँ अथवा अपमानित किये जायँ या दूसरे प्रकार की हानियां उठाएँ। कियामत के दिन जब ऐसे लोगों को विशेष पारितोषिक बटेंगे और अल्लाह तआला विशेष प्रतिफल और सम्मान से उनका आदर करेगा तो दूसरे लोग पछताएँगे कि क्या अच्छा होता कि दुनिया में हमारे साथ भी ऐसा ही किया गया होता, दीन के लिये हम अपमानित किये गये होते, मारे पीटे गये होते, हमारे शरीरों को घायल किया गया होता ताकि इस अवसर पर यही प्रतिफल और पारितोषिक हमको भी मिलते।

ऐ अल्लाह यदि हमारे लिये कभी ऐसी परीक्षाएँ होनहार हों तो हमको स्थिर रखना और अपनी दया और सहायता से वंचित न फ़रमाना।

पन्द्रहवाँ पाठ

मृत्यु के पश्चात्

बरज़ख़, क़ियामत, आख़िरत

इतनी बात तो सब जानते और मानते हैं कि जो इस दुनिया में आया है उसको किसी न किसी दिन अवश्य मरना है। परन्तु अपने आप यह बात किसी को भी ज्ञात नहीं और न कोई इसको जान सकता है कि मरने के पश्चात् क्या होता है और क्या होगा : यह बात केवल अल्लाह ही को ज्ञात है और उसके बतलाने से पैग़म्बरों को ज्ञात होती है और पैग़म्बरों के बतलाने से हम जैसे साधारण व्यक्तियों को भी ज्ञात होती है। अल्लाह के प्रत्येक पैग़म्बर ने अपने अपने समय में अपनी जाति को और अपनी उम्मत को भली भाँति बतलाया और जितलाया था कि मरने के पश्चात् किन किन परिस्थितियों से तुमको गुज़रना होगा और दुनिया में किये हुए तुम्हारे कर्मों का प्रतिफल और दण्ड तुमको प्रत्येक स्थान में किस प्रकार मिलेगा। अल्लाह के पैग़म्बर हमारे सरदार हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम चूंकि ख़ुदा के अन्तिम नबी और रसूल हैं और उनके पश्चात् अब क़ियामत तक कोई पैग़म्बर आनेवाला नहीं है अत:

आपने मरने के पश्चात् की समस्त अवस्थाओं का वर्णन विस्तृत रूप से किया है। यदि उस सबको एकत्रित किया जाय तो एक बहुत बड़ा ग्रन्थ तैयार हो सकता है। पवित्र क़ुरआन में और हुज़ूर की हदीसों में जो कुछ इस सम्बन्ध में बयान किया गया है उसका संक्षिप्त सारांश यह है कि:—

मरने के पश्चात् तीन मंज़िलें आनेवाली हैं। पहली मंज़िल मरने के समय से लेकर क़ियामत आने तक की है। इसको "आलमे बर्ज़ख" कहते हैं (बीच की अवधि)। मरने के पश्चात् आदमी का शरीर धरती में तोप दिया जाये चाहे नदी में बहा दिया जाय चाहे जलाकर राख कर दिया जाये परन्तु उसकी आत्मा किसी दशा में मिटती नहीं। केवल इतना होता है कि वह हमारी इस दुनिया से स्थानान्तरित होकर एक दूसरे संसार में चली जाती है। वहाँ अल्लाह के फ़रिश्ते दीन धर्म के विषय में उससे कुछ प्रश्न पूछते हैं। यदि वह सच्चा ईमान वाला है तो शुद्ध उत्तर देता है जिस पर फ़रिश्ते उसको शुभ समाचार सुना देते हैं कि तू क़ियामत तक चैन और सुख से रह। और यदि वह ईमानवाला नहीं होता वरन् काफ़िर (इस्लाम को न माननेवाला) या नाम का मुसलमान मुनाफ़िक़ (बाहर कुछ भीतर कुछ) होता है तो उसी समय से कड़े दण्ड और दुख में डाल दिया जाता है जिसका क्रम क़ियामत तक जारी रहता है। यही बर्ज़ख की मंज़िल है जिसकी अवधि मरने के समय से लेकर क़ियामत तक की है। इसके पश्चात् दूसरी मंज़िल क़ियामत और हश्र की है। क़ियामत का अर्थ यह है कि एक समय ऐसा आएगा कि

अल्लाह की आज्ञा से यह सारी दुनिया एकदम मिटा दी जायगी (अर्थात् जिस प्रकार प्रबल प्रकार के भूचालों से क्षेत्र के क्षेत्र समाप्त हो जाते हैं उसी प्रकार उस समय सारी दुनिया नष्ट भ्रष्ट हो जायगी और समस्त वस्तुओं पर एकबारगी मृत्यु छा जायगी)—फिर एक लम्बा समय व्यतीत होने पर अल्लाह तआला जब चाहेगा सब आदमियों को फिर जीवित करेगा। उस समय सारी दुनिया के अगले पिछले सब आदमी दोबारा ज़िन्दा हो जायंगे और उनके सांसारिक जीवन का पूरा हिसाब होगा। इस जांच और हिसाब में अल्लाह के जो बन्दे मुक्ति और जन्नत के अधिकारी निकलेंगे उनके लिये जन्नत की आज्ञा दे दी जायगी। और जो अत्याचारी और अपराधी अल्लाह के दन्ड और नर्क के अधिकारी होंगे उनके लिये नर्क की आज्ञा सुना दी जायगी। यह मंजिल मरने के पश्चात् की दूसरी मंजिल है जिसका नाम क़ियामत और हश्र है।

इसके पश्चात् जन्नती हमेशा के लिए जन्नत में चले जायंगे जहां केवल सुख और चैन होगा और ऐसे सुख तथा आनन्द होंगे जो इस दुनिया में किसी ने देखे सुने न होंगे और दोज़खी नर्क में डाल दिये जायंगे जहाँ इनको अनेक प्रकार से दण्ड और दुख होंगे। अल्लाह हम सबको उससे अपने शरण में रखे। यह दोजख और जन्नत ही मरने के पश्चात् की तीसरी और अन्तिम मंज़िल है और फिर लोग हमेशा हमेशा अपने कर्मों के अनुसार जन्नत या दोज़ख़ ही में रहेंगे। इस तीसरी और अन्तिम मंज़िल का नाम आख़िरत है।

मरने के पश्चात् के विषय में अल्लाह के पैग़म्बरों ने और

विशेष कर अन्तिम पैग़म्बर हमारे सरदार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जो कुछ बतलाया है और पवित्र क़ुरआन और हदीस में जो कुछ बतलाया गया है उसका सारांश यही है, जो ऊपर लिखा गया। अब कुछ आयतें और हदीसें भी सुन लीजिये।

कुल्लु + न फ़ + सिन + ज़ाय + क़तुल + मौति + व + इन + नमा तु + वफ़ + फ़ौ + न + उजू + रकुम + यउ + मल + क़िया + मह + (सूरए आले इम + रान + रुकु १९)

كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ وَإِنَّمَا تُوَفَّوْنَ أُجُورَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ

'प्रत्येक प्राणी को मौत का स्वाद चखना है और तुम्हारे कर्मों के फल क़ियामत के दिन पूरे पूरे दिये जायँगे।

कुल्लु + नफ़सिन + ज़ाईक़तुल + मौति + सुम्मा + इलई + ना + तुर + जऊन (अनकबूतरुक ६)

كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ثُمَّ إِلَيْنَا تُرْجَعُونَ

प्रत्येक प्राणी की मौत को स्वाद अवश्य ही चखना है और फिर तुम सब हमारी ओर लौटोगे।

क़ियामत और उसके भयंकर होने का वर्णन पवित्र क़ुरआन में सैकड़ों स्थानों पर किया गया है। कुछ आयतें हम यहाँ भी नक़ल करते हैं।

या+अइयु+हन्ना+सुत+तक़ू+रब+बकुम+इन+न+ज़ल+ज़+ल+तस्सा+अति+शइ+उन+अज़ीम+यौ+म+तरौनहा+तज़+हलु+कुल्लु+मुर+ज़ि+अतिन+अम्मा+अर+ज़अत+व+ल+ज़उ+कुल+लु+ज़ाति+हम+लिन+हम+लहा+व+तरन्ना+स+सुकारा+व+माहुम+बिसु+कारा+व+ला+किन+न+अज़ा+वल्लाहि+शदीद+(अल हज्ज' रुकू १)

يَاأَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمْ إِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ شَيْءٌ عَظِيمٌ ۝ يَوْمَ تَرَوْنَهَا تَذْهَلُ كُلُّ مُرْضِعَةٍ عَمَّا أَرْضَعَتْ وَتَضَعُ كُلُّ ذَاتِ حَمْلٍ حَمْلَهَا وَتَرَى النَّاسَ سُكَارَىٰ وَمَا هُمْ بِسُكَارَىٰ وَلَٰكِنَّ عَذَابَ اللَّهِ شَدِيدٌ ۝

"ऐ लोगो अपने रब (परवर्दिगार) से डरो। क़ियामत का भूचाल बड़ी भयंकर वस्तु है जिस दिन तुम उसे देखोगे उस दिन प्रत्येक दूध पिलाने वाली माँ अपने दूध पीते प्यारे बच्चे को भूल जायगी। और गर्भवालियों के गर्भ गिर जायगे। और तुम देखोगे सब लोगों को नशे की सी दशा में और वास्तव में वह नशे में न होंगे बरन् अल्लाह का अज़ाब (दण्ड) अति प्रचण्ड है (बस उसके भय से लोग मूर्छित हो जायंगे।)

और सूरए मुज़्ज़मिल में क़ियामत ही के विषय में बतलाया गया है कि :—

यउ+म+तर+जुफ़ुल+अर+ज़ु+वल+जिबालु+व+कानतिल+जिबालु कसीबम+महीला+

يَوْمَ تَرْجُفُ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ وَكَانَتِ الْجِبَالُ كَثِيبًا مَّهِيلًا ۝

"जब धरतियों और पहाड़ों पर कपकपाहट होगी और पर्वत बहती हुई रेत के समान हो जायगे ।"

और इसी सूरे में क़ियामत ही के बारे में कहा गया है ।

यौ+मइ+यज+अलुल+विल+दा+न+शीबा ।

يَوْمًا يَّجْعَلُ الْوِلْدَانَ شِيبًا

वह दिन बच्चों को बूढ़ा बना देगा ।

और सूरए "अबस" में कहा गया है ।

फ़इज़ा+जा+अतिस्साख़+ख़ह+यौ+म+याफ़िर+ रुल+ मरउ+मिन+अख़ीहि+व+उम्मिही+व+अबीहि+व+साहि+ बातिही+व बनीहि+लिकुल्लिम+रिइम+मिनहुम यौ+मइज़िन + शानुइं + युग़+ नीह+वुजूहुइं+यउमइज़िम+मुसफ़िरतुन+ ज़ाहिकतुन + मुसतबशिरह+ववुजूहुइं+यउमइज़िन + अलैहा+ ग़+ब+रतुन+तर+हक़ु+हा+क+त+रह (सूरए अबस)

فَإِذَا جَاءَتِ الصَّاخَّةُ ۝ يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ أَخِيهِ ۝ وَأُمِّهِ وَأَبِيهِ ۝ وَصَاحِبَتِهِ وَبَنِيهِ ۝ لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ يَوْمَئِذٍ شَأْنٌ يُغْنِيهِ ۝ وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ مُّسْفِرَةٌ ۝ ضَاحِكَةٌ مُّسْتَبْشِرَةٌ ۝ وَوُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ عَلَيْهَا غَبَرَةٌ ۝ تَرْهَقُهَا قَتَرَةٌ ۝

जब आयेगी कानों के परदे फाड़ने वाली वह वाणी (अर्थात् जिस समय क़ियामत का नरसिंघा फूंका जायगा)

उस दिन भागेगा आदमी अपने भाई से और अपनी माता और अपने पिता से और अपनी पत्नी और अपनी सन्तान से। उनमें से प्रत्येक के लिए उस दिन (फ़िक्र) होगी जो उसको देसरों से बे परवाह बना देगी (अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति अपनी चिन्ता में ऐसा डूबा होगा कि माता पिता, आल औलाद और बहेन भाई की बिल्कुल परवाह न करेगा वरन् उनसे भागेगा) बहुत से चेहरे उस दिन चमकते होंगे हँसते हुए प्रसन्नता से खिले हुए और बहुत से मुख उस दिन धूल में अटे होंगे और उन पर सियाही छाई होगी।

क़ियामत के दिन खुदा के सामने सब मनुष्य उपस्थित होंगे कोई भी कहीं छुप नहीं सकेगा सूरए "अलहाक्क़ह" में कहा गया है।

यउ+मइजि न +तू+रज़ू+नं+ला+तख+फ़ा+मिन+कुम +खाफ़ियह+

يَوْمَئِذٍ تُعْرَضُونَ لَا تَخْفَىٰ مِنكُمْ خَافِيَةٌ ○

उस दिन तुम सब खुदा के सामने उपस्थित किये जाओगे तुममें से कोई छुपने वाला छुप नहीं सकेगा।

और सूरए कहफ़ में कहा गया है:—

व + योम + नु + सैंयिरुल+जिबा+ल व+ नरल+अर+ ज बारि+ज़+तौं + व + हशर + नाहुमफ़+लम+नुग़ादिर+ मिनहुम+अ + ह + दा व+ उरिज़ू +अला + रब्बि + क+ सफ़्फ़ा न + क़द + जीतुमना क + मा ख + लक़नाकुम औव

+ ल मर + रतिन बल ज़अम्तुम लन + नजअल + लकुम + मौ+ इदा व+ वु+ ज़िअलकिताबु फ़+ तरल+ मुज+ रिमी + न +मुश + फ़िक़ी + न+ मिम्मा+ फ़ीहि+ व+ यक़ूलू+ न+ या+ वै +ल + तना+ मा + लिहा+ ज़ल + किताबिला + युग़ादिरु+ सग़ी + रतनों + व + ला + कबी + रतन+ इल्ला + अह + साहा + व + व+ जदू+ मा + अमिलू+ हाज़िरा+ वला+ यज़+ लिमु+ रब्बु+ क+ अ + ह + दा+ (अल्कहफ़+ रुकू ६)

وَيَوْمَ نُسَيِّرُ الْجِبَالَ وَتَرَى الْأَرْضَ بَارِزَةً وَّحَشَرْنٰهُمْ فَلَمْ نُغَادِرْ مِنْهُمْ أَحَدًا ۝ وَعُرِضُوْا عَلٰى رَبِّكَ صَفًّا لَقَدْ جِئْتُمُوْنَا كَمَا خَلَقْنٰكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ بَلْ زَعَمْتُمْ أَلَّنْ نَّجْعَلَ لَكُمْ مَّوْعِدًا ۝ وَوُضِعَ الْكِتٰبُ فَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ مُشْفِقِيْنَ مِمَّا فِيْهِ وَيَقُوْلُوْنَ يٰوَيْلَتَنَا مَالِ هٰذَا الْكِتٰبِ لَا يُغَادِرُ صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً إِلَّا أَحْصٰىهَا وَوَجَدُوْا مَا عَمِلُوْا حَاضِرًا وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ أَحَدًا ۝

उस दिन हम पहाड़ों को हटा देंगे [अर्थात् अपने स्थान पर स्थिर न रह सकेंगे वरन वह गिर जायँगे और चूर-चूर हो जायँगे] और तुम देखोगे पृथ्वी को खुली हुई [अर्थात् न उसमें नगर रहेंगे न बस्तियाँ, न वाटिकाएँ वर्‌न सारी भूमि एक खुला मैदान हो जायगी] और फिर हम समस्त आदमियों को पुनः जीवित करेंगे और उनमें से एक को भी न छोड़ेंगे और वह सब पंक्तियों-पंक्तियों में अपने रब [परवर्दिगार के सामने उपस्थित किये जायँगे। [और उनसे कहा जायगा, देखो] तुम दोबारा ज़िन्दा होकर हमारे सामने आ गये। जैसा कि

हमने पहली बार तुमको पैदा किया था वरन् तुम यह समझ रहे थे कि हम तुम्हारे लिए कोई निर्धारित समय नहीं लायँगे और उनका आमालनामा [कर्म पत्र] [जिसमें उनके सब अच्छे बुरे कर्मों की व्याख्या होगी] उनके सामने रख दिया जायगा और तुम देखोगे अपराधियों को डरते हुए उस आमालनामे से कहते होंगे हाय हमारा दुर्भाग्य ! इस कर्मपत्र कीं दशा आश्चर्यजनक है न इसने हमारा कोई छोटा कर्म छोड़ा है न बड़ा सब ही को बतलाता है और जो कुछ उन्होंने दुनिया में किया था उसे सब लिखा पायेंगे और तुम्हारा पालनहार किसी पर अत्याचार नहीं करेगा ।

क़ियामत में आदमी के हाथ पाँव और उसके समस्त अंग उसके कर्मों की गवाही देंगे । सूरए "यासीन" में बताया गया है ।

अल + यौ + म + नख़्तिमु + अला+अफ़वाहिहिम+व+ तुकल्लिमुना+ऐदीहिम व+तश + हदु + अर+जुलुहुम+बिमा+ कानू यक+सिबून+[या+सीन रूक: ४]

اَلْيَوْمَ نَخْتِمُ عَلٰٓى اَفْوَاهِهِمْ وَتُكَلِّمُنَآ اَيْدِيْهِمْ وَتَشْهَدُ اَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ

आज के दिन हम उनके मुख पर मुहर लगा देंगे और उनके हाथ पाँव बोलेंगे और गवाही देंगे उसकी जो वह किया करते थे ।

सारांश यह है कि क़ियामत में जो कुछ होगा पवित्र क़ुरआन ने बड़े विस्तार से उस सबको वर्णन किया है—अर्थात् पहले भूचालों

और धमाकों का होना, फिर सकल संसार का मिट जाना, यहां तक कि पर्वतों का भी चूर-चूर हो जाना फिर, समस्त मनुष्यों का जीवित किया जाना, फिर हिसाब के लिये हश्र के मैदान में उपस्थित होना, और वहां प्रत्येक व्यक्ति के सामने उसके कर्मों का आना और स्वयं मनुष्य के अंगों का उसके विरुद्ध गवाही देना। फिर प्रतिफल अथवा दण्ड अथवा क्षमा का निर्णय होना और उसके पश्चात् लोगों का जन्नत अथवा दोज़ख में जाना......यह सब बातें पवित्र क़ुरआन की कुछ सूरतों में तो इतने विस्तार से वर्णन की गई हैं कि उनके पढ़ने से क़ियामत की रुप-रेखा आँखों के सामने खिंच जाती है जैसा एक हदीस में भी आया है कि:—

> "जो व्यक्ति चाहे कि क़ियामत का दृश्य इस प्रकार देखे कि मानो वह उसकी आंखों के सामने है तो वह पवित्र क़ुरआन की निम्न सूरतें पढ़ें

"इज़शशम्सु कूव्विरत", इज़स्समाउनफ़तरत'

إِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ إِذَا السَّمَاءُ انْفَطَرَتْ

और इज़स्समाउनशक्क़त

إِذَا السَّمَاءُ انْشَقَّتْ

अब हम वर्ज़ख और क़ियामत के बारे में कुछ हदीसें भी लिखते हैं। हज़रत अब्दुल्लाह सुपुत्र उमर (अल्लाह दोनों से राज़ी हो) का बयान है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा:—

"तुम में से कोई जब मर जाता है तो उसको जो स्थान कियामत के पश्चात् जन्नत अथवा दोज़ख (नर्क) में अपने कर्मों के अनुसार मिलनेवाला होता है वह प्रत्येक दिन प्रातःकाल और सायंकाल उपस्थित किया जाता है और उससे कहा जाता है कि यह है तेरा ठिकाना जहाँ तुझे पहुँचना है।"

एक और हदीस में है कि:—

"रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक बार व्याख्यान में क़ब्र (अर्थात् आलमे बर्ज़ख़) की जाँच और वहाँ का समाचार सुनाया तो समस्त मुसलमान जो उपस्थित थे चीख़ उठे।"

बहुत सी हदीसों में क़ब्र का वर्णन, क़ब्र के प्रश्नोत्तर और फिर वहाँ के दण्ड का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है। यहाँ हम संक्षेप के कारण केवल यही दो हदीसें अङ्कित करते हैं। अब कुछ हदीसें क़ियामत के विषय में और सुन लीजिये। एक हदीस में है रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क़ियामत का वर्णन करते हुए कहा:—

"जब अल्लाह की आज्ञानुसार क़ियामत का प्रथम सूर (नरसिंहा) फूंका जायगा तो समस्त प्राणी मूर्च्छित और बेजान होकर गिर जायँगे—फिर जब दूसरी बार सूर फूंका जायगा तो सब ज़िन्दा होकर खड़े हो जायँगे फिर आज्ञा होगी कि तुम सब अपने रब के सम्मुख उपस्थित होने के लिए चलो। और फिर फ़रिश्तों को आज्ञा

होगी कि इनको ठहराकर खड़ा करो यहाँ उनसे उनके जीवन के सम्बन्ध में पूछ होगी"

एक और हदीस में है कि:—

"एक सहाबी (सतसंगी) ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा हे अल्लाह के रसूल अल्लाह तआला अपनी सृष्टि को दोबारा कैसे जीवित करेगा और क्या इस दुनिया में इसका कोई चिन्ह और उदाहरण है ? आपने फ़रमाया क्या कभी ऐसा नहीं हुआ कि तुम अपने देश की किसी भूमि पर ऐसी दशा में गुजरे हो कि वह सूखी, हरियाली से वंचित हो और फिर दोबारा ऐसी दशा में उस पर तुम्हारा गुज़र हुआ हो कि वह हरी भरी लहलहा रही हो (सहाबी कहते हैं कि) मैंने निवेदन किया कि हाँ ऐसा हुआ है। आपने कहा कि बस दोबारा जीवित करने का यह चिन्ह और उदाहरण है। ऐसी ही अल्लाह तआला मुरदों को दोबारा जीवित करेगा।"

एक और हदीस में है कि:—

यौ+मइज़िन+तुहद्दिसु+अख़बा+रहा

يَوْمَىِٕذٍ تُحَدِّثُ اَخْبَارَهَا

"रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पवित्र कुर-आन की आयत पढ़ी कि (क़ियामत के दिन पृथ्वी अपने सब समाचार बयान करेगी) फिर आपने फ़रमाया

तुम समझे इसका क्या अर्थ है ? सहाबा ने निवेदन किया अल्लाह और उसके रसूल को ही अधिक ज्ञान हैं। आपने फ़रमाया कि इसका अर्थ यह है कि क़ियामत के दिन पृथ्वी अल्लाह के प्रत्येक बन्दे और बन्दी पर गवाही देगी उन कर्मों की जो उन्होंने पृथ्वी पर किये होंगे अर्थात् अल्लाह की आज्ञा से पृथ्वी उस दिन बोलेगी और बतलाएगी कि अमुक बन्दे ने अथवा अमुक बन्दी ने अमुक दिवस में मेरे ऊपर यह कर्म किया था।"

एक और हदीस में है कि:—

आपने क़ियामत का वर्णन करते हुए फ़रमाया कि अल्लाह तआला क़ियामत के दिन बन्दे से फ़रमाएगा कि आज तू स्वयं ही अपने ऊपर गवाह है और मेरे लिखने वाले फ़रिश्ते भी उपस्थित हैं और बस यही गवाहियां काफ़ी हैं फिर ऐसा होगा कि अल्लाह की आज्ञा से बन्दे के मुख पर मुहर लग जायगी वह ज़बान से कुछ न बोल सकेगा और उसके दूसरे अंगों (हाथ पाँव आदि) को आज्ञा होगी कि तुम बोलो फिर वह उसके कर्मों का सारा समाचार सुनाएँगे।

एक और हदीस का सारांश है कि:—

एक व्यक्ति रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित हुआ और उसने निवेदन किया। हे अल्लाह के रसूल मेरे पास कुछ दास हैं जो कभी कभी

दुष्टता और अपकार करते हैं कभी मुझसे झूठ बोलते हैं कभी धन मार लेते हैं और मैं इन अपराधों पर कभी उन पर अप्रसन्न होता हूं, बुरा भला कहता हूं और कभी मार भी देता हूं तो क़ियामत में इसका क्या परिणाम होगा। आपने फ़रमाया अल्लाह तआला क़ियामत में ठीक ठीक न्याय करेगा यदि तुम्हारा दण्ड उनके अपराधों के अनुसार बिल्कुल उचित हो तो न तुम्हें कुछ मिलेगा और न कुछ देना पड़ेगा। और यदि तुम्हारे दण्ड उनके अपराधों से कम होंगे तो तुम्हारा अधिक और अतिरिक्त भाग दिलाया जायगा और यदि तुम्हारा दण्ड उनके अपराध से अधिक होगा तो तुमसे उसका बदला तुम्हारे उन दासों को दिलवाया जायगा। हदीस में है कि यह सुनकर वह पूछने वाला व्यक्ति रोने और चिल्लाने लगा और उसने निवेदन किया "हे अल्लाह के रसूल फिर तो मेरे लिये यही अच्छा है कि मैं उनको अलग कर दूँ। मैं आपको गवाह करता हूँ कि मैंने उन सबको स्वतन्त्र कर दिया!

इसी हदीस में यह भी है कि:—

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस व्यक्ति को पवित्र कुरआन की यह आयत सुनाई

व+न+ज़उ+मवाज़ी+नलक़िस+त+लि+यौमिल+क़ियामति+फ़ला+तुज़+लमु+नफ़+सुन+शैओं+वइनका + न

+मिस+क़ा+ल+हब्बतिम+मिन+ख़र+दलिन + अतैना +
बिहा+व+कफ़ा+बिना+हासिबीन+

وَنَضَعُ الْمَوَازِيْنَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْـًٔا ۭ وَاِنْ كَانَ
مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ اَتَيْنَا بِهَا ۭ وَكَفٰى بِنَا حٰسِبِيْنَ ۝

इस आयत से तात्पर्य यह है कि अल्लाह तआला फ़रमाते हैं—

"हम क़ियामत के दिन न्याय की तराज़ू लटकाएंगे और किसी के साथ वहाँ कोई अन्याय न होगा और यदि किसी का कोई कर्म अथवा हक़ राई के दाने के बराबर भी होगा तो हम उसको उपस्थित करेंगे और हम हिसाब लेने वाले काफ़ी हैं।

अल्लाह तआला हमको तौफ़ीक़ (सहायता) दें कि मरने के पश्चात् और क़ियामत के सम्बन्ध में पवित्र कुरआन ने और रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जो बातें हमको बतलाई हैं हम उनसे असावधान न रहें।

सोलहवां पाठ

जन्नत और दोज़ख़

पिछले पाठ में बतलाया जा चुका है कि क़ियामत का दिन निर्णय का दिन होगा। फिर जो मोमिन होंगे और दुनिया में जिनके कर्म भी बहुत अच्छे रहें होंगे और किसी दन्ड और पीड़ा के अधिकारी न होंगे वह तो क़ियामत की अवधि में भी अल्लाह के अर्श की छाया में और बड़े आराम से रहेंगे और अति शीघ्र जन्नत में भेज दिये जांयगे और जो ऐसे होंगे कि कुछ दण्ड पाकर क्षमा किये जाये वह क़ियामत और हशर के दिन के कुछ कष्ट उठाकर अधिक से अधिक कुछ अवधि तक दोज़ख़ में अपने पापों का दण्ड भोग कर क्षमा कर दिये जायंगे। जिनमें कण मात्र भी ईमान होगा वह कभी न कभी जन्नत में पहुंच ही जायँगे। और दोज़ख़ मे हमेशा हमेशा के लिये केवल वही रह जायँगे जो दुनिया से कुफ्र और शिर्क का पाप लाद कर ले गये होंगे। सरांश यह कि जन्नत, ईमान पुराय और भक्ति का प्रतिफल है और दोज़ख़ कुफ्रशिर्क और भक्ति हीनता तथा अवज्ञा का दण्ड है जन्नत की नेमतों और सुखों और दोज़ख़ के दुखों और कष्टों का वर्णन पवित्र क़ुरआन और हदीसों में विस्तार पूर्वक किया गया है। कुछ आयतें और हदीसें हम यहां भी अंकित करते हैं।

पवित्र क़ुरआन में है:—

लिल्लज़ी + नत्तक़ू + इन + द + रब्बिहिम + जन्नातुन + तजरी + मिन + तहतिहलअनहारु + ख़ालिदी + न + फ़ीहा + वअज़वाजुम + मुतह + ह + रतुं + वरिज़वानुममिनल्लाह + वल्लाहु बसीरुमबिल-इबाद + (सूरएआले इमरान रुक: २)

لِلَّذِيْنَ اتَّقَوْا عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَاَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ وَّرِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ ۗ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ

परहेज़गारों (संयमी पुरुषों) के लिये उनके रब के पास वह जन्नतें (अर्थात् ऐसी वाटिकाएँ) हैं जिनके नीचे नहरें बहती है वह उन ही में रहेंगे और पवित्र सुथरी स्त्रियां हैं और अल्लाह की रज़ामन्दी है और अल्लाह अपने सब बन्दों को भली भांति देखता है (किसी का हाल छुपा नहीं है)

पवित्र कुरआन में है:—

इन + नअस्हाबल + जन्नतिलयौ + म + फ़ी + शुगुलिन + फ़ाकिहून + हुम + वअज़वाजुहुम + फी ज़िलालिन + अलल + अराइकि + मुत्तकिऊन + लहुम + फ़ीहा + फ़ाकि + हतुं + व + लहुम्मा + यद + दऊन + सलामुन + क़ौलम + मिर + रब्बिर + रहीम + (सूरए यासीन : रुकू ४)

إِنَّ أَصْحَابَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ فِي شُغُلٍ فَاكِهُونَ ۝ هُمْ وَأَزْوَاجُهُمْ فِي ظِلَالٍ عَلَى الْأَرَائِكِ مُتَّكِئُونَ ۝ لَهُمْ فِيهَا فَاكِهَةٌ وَلَهُمْ مَا يَدَّعُونَ ۝ سَلَامٌ قَوْلًا مِنْ رَبٍّ رَحِيمٍ

जन्नतवाले उस दिन अपने-अपने आनन्दयम धन्धों में प्रफुल्ल होंगे वह और उनकी स्त्रियां छाये में मसहरियों पर तकिया लगाए होंगी। उनके लिए वहां विभिन्न प्रकार के मेवे होंगे ओर जो कुछ मांगेंगे उनको मिलेगा। दयालुतावाले परवर्दिगार की ओर से उनको सलाम पहुंचाया जायगा।

और यह भी पवित्र कु़रआन में है:—

वफ़ीहामातश+तहीहिलअनफ़ुसु+व+त+लज़्ज़ुल+आयुनु+वअन्तुमफ़ीहा ख़ालिदून (सूरए ज़ुख़ रुफ़)

وَفِيهَا مَا تَشْتَهِيهِ الْأَنْفُسُ وَتَلَذُّ الْأَعْيُنُ وَأَنْتُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝

और जन्नत में वह सब कुछ है जिसको लोगों के जी चाहते हैं और आँखें जिससे स्वाद लेती हैं और (हे मेरे अच्छे बन्दो) तुम हमेशा इसी जन्नत में रहोगे।

और सूरए मुहम्मद में जन्नत का समाचार इस प्रकार बयान किया गया है।

म+सलुल + जन्नतिल्लती+वुइदल +मुत्तक़ून+फ़ीहाअन+ + हारुम + मिम्माइन ग़ैरि आसिनिवँ + वअनहारुम + मिल्ल+

बनिल्लम+य+तग़ैयर+तामुहू+व+अन+ हारुम+मिन+ख़+मरिल+लज़्+ज़तिल+लिश शरिबीन+वअन+हारुम+मिन+अ+सलिम+मुसफ़+फ़ा+व+लहुम+फ़ीहा+मिन+कुल्लिस+स मराति+व+मग़फि+रतुम+मिर+रब्बिहिम+

(सूरए मुहम्मदः रूकूः२)

مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِي وُعِدَ الْمُتَّقُونَ فِيهَا أَنْهَارٌ مِّن مَّاءٍ غَيْرِ آسِنٍ وَأَنْهَارٌ مِّن لَّبَنٍ لَّمْ يَتَغَيَّرْ طَعْمُهُ وَأَنْهَارٌ مِّنْ خَمْرٍ لَّذَّةٍ لِّلشَّارِبِينَ وَأَنْهَارٌ مِّنْ عَسَلٍ مُّصَفًّى وَلَهُمْ فِيهَا مِن كُلِّ الثَّمَرَاتِ وَمَغْفِرَةٌ مِّن رَّبِّهِمْ

वह जन्नत जिसका परहेज़गारों को वचन दिया गया है उसका समाचार यह है कि उसमें बहुत सी नहरें है पानी की जिसमें ज़रा भी परिवर्तन नहीं होगा और बहुत सी नहरें हैं दूध की जिसका स्वाद तनिक भी बदला हुआ न होगा और बहुत सी नहरें हैं पवित्र और हलाहल शराब की जो बड़ी स्वादिष्ट हैं पीनेवालों के लिये और बहुत सी नहरे हैं स्वच्छ किये हुए शहद की और उन के वास्ते उस जन्नत में हर प्रकार के फल हैं और कृपा है उनके परवर्दिगार की।

और सूरए हज्र में जन्नत का एक गुण यह बयान किया।

ला+यमस्सुहुम+फ़ीहा+न+सबुन+

لَا يَمَسُّهُمْ فِيهَا نَصَبٌ

जन्नत वालों को वहां किसी प्रकार का कोई कष्ट नहीं छू सकेगा।

अर्थात् जन्नत में केवल आनन्द ही आनन्द और चैन ही चैन होगा। किसी प्रकार की कोई पीड़ा और शोक की कोई बात वहाँ न होगी।

यह तो जन्नत और जन्नतियों का संक्षेप में वर्णन हुआ अब दोज़ख और दोज़खियों का भी कुछ समाचार पवित्र कुरआन ही से सुन लीजिए। सूरए मूमिनून में कहा गया है।

वमन+खफ़+फ़त+मवाज़ीनुहू+फ़+उलाइकल्लज़ी+न+ख़सिरू+अन+फ़ु+सहुम+फ़ी+जहन्न+म+ख़ालिदून+तल+फ़हु+वुजू+ह+हुमुन्नारु+वहुम+फ़ीहा+कालिहून+(सूरतुल मुमिनून रुकू: ६)

وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَٰئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ فِي جَهَنَّمَ خَالِدُونَ ۝ تَلْفَحُ وُجُوهَهُمُ النَّارُ وَهُمْ فِيهَا كَالِحُونَ ۝

> और जिसका पल्ला हलका होगा सो यह वह लोग होंगे जिन्होंने (कुफ्र तथा शिर्क अथवा दुष्टता धारण करके) स्वयं अपना घाटा किया तो यह नर्क में रहेंगे उनके चेहरों को आग झुलसती होगी और उनके मुह उसमें बिगड़े हुए होंगे।

और सूरए कहफ़ में फ़रमाया गया है।

इन्ना+आतदना+लिज्ज़ालिमी+न+नारन+अहा+त+बिहिम+सुरादिकुहा वई+यस तग़ीसू+युग़ासू+बिमाइन कल मुह+लि+यशविल वुजूह+(सूरए कहफ़ रुकू: ४)

إِنَّا أَعْتَدْنَا لِلظَّٰلِمِينَ نَارًا أَحَاطَ بِهِمْ سُرَادِقُهَا ۚ وَإِن يَسْتَغِيثُوا۟ يُغَاثُوا۟
بِمَآءٍ كَٱلْمُهْلِ يَشْوِى ٱلْوُجُوهَ

हमने अत्याचारियों[1] के लिये नर्क तैयार की है उसकी कनातें (आग की) उन्हें घेरे हुए हैं और जब वह प्यास से चिल्लाएँगे तो उसके उत्तर में उनको पानी दिया जायगा तेल की गाद जैसा और इतना जलता और खौलता हुआ कि भून डाले मुंह को।

और सूरए हज में कहा गया है कि :—

फ़ल्लज़ी + न + क + फ़रू + कुत्तिअत्त + लहुम + सियाबुम + मिन + ना + री + युसब्बु मिन + फ़ौकि + रुऊसिहिमुल + हमीम + युस + हरु + बही माफी बुतूनिहिम + वलजुलूद + व + लहुम + मक़ा + मिउ + मिन + हदीद कुल्लमा अरादू + अई + यख़ + रुजू + मिन + हा + मिन + ग़म्मिन + उईदू + फ़ीहा + व + ज़ूक़ू + अज़ाबल + हरीक़ + (सूरतुल हज रुकूः २)

فَٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ قُطِّعَتْ لَهُمْ ثِيَابٌ مِّن نَّارٍ يُصَبُّ مِن فَوْقِ رُءُوسِهِمُ ٱلْحَمِيمُ
يُصْهَرُ بِهِۦ مَا فِى بُطُونِهِمْ وَٱلْجُلُودُ ۝ وَلَهُم مَّقَٰمِعُ مِنْ حَدِيدٍ ۝ كُلَّمَآ
أَرَادُوٓا۟ أَن يَخْرُجُوا۟ مِنْهَا مِنْ غَمٍّ أُعِيدُوا۟ فِيهَا وَذُوقُوا۟ عَذَابَ ٱلْحَرِيقِ ۝

जिन लोगों ने कुफ़्र किया उनके लिये आग के कपड़े

---

१ क़ुरआन की भाषा में सबसे घोर अत्याचार कुफ़्र और शिर्क है और वास्तविक अत्याचारी कुफ़्र और शिर्क करने वाले हैं।

कतरे जायँगे और उनके सिर के ऊपर बहुत गर्म पानी डाला जायगा उससे उनकी खालें और पेट के अन्दर की भी सब वस्तुयें गल जायगी और उनके लिये लोहे की गदा होगी वहाँ के कष्ट और कठोरपन के कारण वह जब उससे निकलने की इच्छा करेंगे तो फिर उसी में ढकेल दिये जायँगे और कहा जायगा कि यहीं जलने का दण्ड चखते रहो।

और सूरए दुख़ान में है :—

इन+न+श+ज + र+ तज्जक्कू मि तआमुल असीम+कल +मुह + लि + यग़्ली+ फ़िल+बुतून+क+ग़लयिल+हमीम+ खुज़ूहु+फ़ातिलूहु+इला + सवाइल+जहीम+सुम+म+सुब्बु+ फ़ौ+क़+रासिही+मिन+अज़ाबिल हमीम (अद्दुख़ान+रुकू: ३)

إِنَّ شَجَرَتَ الزَّقُّومِ ۝ طَعَامُ الْأَثِيمِ ۝ كَالْمُهْلِ ۚ يَغْلِي فِي الْبُطُونِ ۝ كَغَلْيِ الْحَمِيمِ ۝ خُذُوهُ فَاعْتِلُوهُ إِلَىٰ سَوَاءِ الْجَحِيمِ ۝ ثُمَّ صُبُّوا فَوْقَ رَأْسِهِ مِنْ عَذَابِ الْحَمِيمِ ۝

निःसन्देह थूहड़ का पेड बड़े पापियों (काफ़िरों और मुशरिकों) का भोजन होगा जो अपनी कुरूपता और घिनौनेपन में तेल की तलछट की भाँति होगा और वह पेटों में ऐसा खौलेगा जैसे तेज़ गर्म पानी खौलता है। और फ़रिश्तों को आज्ञा दी जायगी कि इसको पकड़ो फिर घसीटते हुए नर्क के बीचो बीच तक ले जाओ फिर

उसके सर पर अत्यन्त कष्ट देनेवाला जलता हुआ पानी डालो।

और सूरए इब्राहीम में दोज़खी आदमी के बारे में कहा गया है कि

वयुसका+मिम्माइन+सदीद+य+त+जर+रउहू+वला+यकादु+युसीग़ुहू + वयातीहिल +मौतु+मिन+कुल्लि+मकानिव + वमाहुव बिमैयित + वमिवं + व + राइही+अज़ाबुनग़लीज़+ (सूरए इब्राहीम रुकूः ३)

وَيُسْقٰى مِنْ مَّآءٍ صَدِيْدٍ ۙ يَّتَجَرَّعُهٗ وَلَا يَكَادُ يُسِيْغُهٗ وَيَاْتِيْهِ الْمَوْتُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَّ مَا هُوَ بِمَيِّتٍ ۭ وَمِنْ وَّرَآىِٕهٖ عَذَابٌ غَلِيْظٌ

इसको ऐसा पानी पीने को दिया जायगा जो कि पीप लहू होगा जिसको वह घूंट घूंट करके पियेगा और गले से उसको वह सुगमता पूर्वक न उतार सकेगा और प्रत्येक ओर से उस पर मृत्यु की पहुंच होगी और वह मरेगा भी नहीं और उसको कड़े दण्ड का सामना होगा।

और सूरऐ निसाअ में है।

इन्नल+लज़ी+न + क+ फ़रु+बि, आयातिना+सौ+फ़+नुसलीहिमनारा+कुल्लमा+नज़ि-जत + जुलुदुहुम+बद्दलनाहुम+जुलूदन+ग़ं+रहा+लियं+ जूक़ूलअज़ाब+(सूरए निसा)

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِنَا سَوْفَ نُصْلِيْهِمْ نَارًا ۭ كُلَّمَا نَضِجَتْ جُلُوْدُھُمْ بَدَّلْنٰھُمْ جُلُوْدًا غَيْرَھَا لِيَذُوْقُوا الْعَذَابَ

जो लोग हमारी आयतों का इन्कार करते हैं और हमारी आज्ञाओं का उल्लंघन करते हैं हम उनको निःसंदेह दोज़ख़ की आग में डालेंगे जब उनकी खालें जल भुन जायंगी और पक जायँगी तो हम उनकी जगह और खालें बदल देंगे ताकि वह दण्ड का स्वाद पूर्णतः चखें ।

पवित्र क़ुरआन की सैकड़ों आयतों में दोज़ख़ के प्रचड दण्ड का इससे कहीं अधिक विस्तार पूर्वक वर्णन किया गया है यहाँ हम इन्हीं थोड़ी सी आयतों के वर्णन पर समाप्त करते हैं।

अब जन्नत और दोज़ख़ के बारे में कुछ हदीसे भी सुन लीजिये। एक हदीस में आया है कि हुज़ूर ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला फरमाते हैं कि :—

"मैं ने अपने मज्जन बन्दों के लिये (जन्नत में) ऐसी ऐसी वस्तुए तैय्यार की हैं जिन को न किसी आंख ने देखा है न किसी कान ने सुना है और न किसी मनुष्य के हृदय में उनका विचार ही उपस्थित हुआ है ।"

निःसन्देह जन्नतियों को जो शुद्ध और स्वादिष्ट भोजन मिलेगा। जो फल प्रदान किये जायँगे, और जो अत्यन्त सुथरी और सुखदायी पीने की वस्तुएं मिलेंगी और पहनने के लिये जो उच्च कोटि के सुन्दर वस्त्र दिये जायंगे और जो विशाल सुन्दर आनन्द भवन और मनोहर वाटिकाएँ प्रदान की जायंगी और जन्नत की सुन्दर हूरें दी जायेंगी और इन सब के अतिरिक्त भी स्वाद और विश्राम तथा आनन्द और प्रसन्नता आदि के जो सामान प्रदान किये जायंगे जैसाकि इस हदीस में वर्णर किया गया वास्तव

में केवल अल्लाह ही उनको जानता है अलबत्ता हम इन सब पर विश्वास रखते हैं।

एक हदीस में है कि :—

जब जन्नती जन्नत में पहुँच जायेंगे तो अल्लाह की ओर से एक पुकारने वाला पुकारेगा कि अब तुम सदैव स्वस्थ रहो, कोई रोग तुम्हारे निकट नहीं आएगा। अब तुम सदैव जीवित रहो। तुम्हारे लिये अब मृत्यु नहीं। तुम सदैव जवान रहो तुम अब बूढ़े होनेवाले नहीं। अब तुम सदैव सुख आनन्द में रहो। कोई क्लेश, कष्ट और शोक तुम्हारे निकट न आएगा।"

सब से बड़ी नेमत जो जन्नत में पहुच जाने के पश्चात् जन्नतियों को मिलेगी वह अल्लाह तआला के दर्शन होंगे। हदीस शरीफ़ में है कि:—

'जब जन्नती लोग जन्नत में पहुँच जायेंगे तो अल्लाह तआला उनसे फ़रमाएँगे क्या तुम्हारी इच्छा है कि जो नेमते तुमको दी गई हैं उनसे अधिक कोई और वस्तु भी मैं तुमको प्रदान करूँ? वह निवेदन करेंगे कि हे स्वामी आपने हमारे चेहरे रोशन किये। हमको नर्क से मुक्त किया और बैकुण्ठ प्रदान किया (जिसमें सब कुछ है अब हम और क्या माँगें) हुज़ूर फ़रमाते है कि फिर परदा उठा दिया जायगा और उस समय वह अल्लाह को बे परदा देखेंगे और फिर जन्नत और उसकी समस्त नेमतें जो अब तक उनको प्राप्त हो चुकी थीं उन सबसे उत्तम

नेमत उनके लिये अल्लाह के दर्शनों की नेमत होगी।

अल्लाह तआला हमको भी यह नेमतें अपनी कृपा और करुणाशीलता से प्रदान करे।

एक हदीस में है कि हुज़ूर ने जन्नत के आनन्द और दोज़ख़ के कष्ट का वर्णन करते हुए फ़रमाया :—

"क़ियामत के दिन एक ऐसे व्यक्ति को लाया जायगा जो दुनिया में सबसे अधिक सुख और आनन्द और ठाट बाट से रहा होगा परन्तु अभाग्यवश वह नर्क का पात्र सिद्ध होगा तो उसको दोज़ख़ की आग में एक डोब देकर तुरन्त निकाल लिया जायगा फिर उससे पूछा जायगा कि कभी तू सुख और आनन्द में भी रहा था। वह कहेगा कि हे परवर्दिगार तेरी शपथ मैंने कभी कोई सुख नहीं देखा। और एक दूसरे आदमी को लाया जायगा जो दुनिया में सबसे अधिक दुखों और कष्टों में रहा होगा परन्तु वह भाग्यवान् वैकुण्ठ का अधिकारी सिद्ध होगा। फिर उसी प्रकार उसको भी बैकुण्ठ की हवा एक क्षण भर खिलाकर तुरन्त वैकुण्ठ से निकाल लिया जायगा और पूछा जायगा कि तू कभी किसी दुख पीड़ा और कष्ट में रहा था? वह निवेदन करेगा नहीं हे मेरे परवर्दिगार तेरी शपथ मुझे कभी कोई दुख नहीं पहुंचा और मैंने कभी कोई कष्ट नहीं झेला।"

वास्तव में बैकुण्ठ में अल्लाह तआला ने ऐसे ही सुख तथा आनन्द का प्रबन्ध किया है कि दुनिया में पूर्ण अवस्था दुखों और

कष्टो में रहनेवाला भी एक क्षण के लिये जन्नत में पहुंचने के पश्चात् अपनी जीवन भर की कठिनाइयों को भूल जायगा और नर्क ऐसे ही कष्टों का घर है कि दुनिया में पूर्ण अवस्था सुख और आनन्द से रहनेवाला मनुष्य भी एक क्षण के लिये नर्क में वास करके वरन् केवल उसकी गर्म दुर्गन्ध भरी लपट पाकर यही अनुभव करेगा कि उसने कभी सुख और आनन्द का मुंह नहीं देखा।

दोज़ख़ के दण्ड की कठोरता का अनुमान केवल इस एक हदीस से किया जा सकता है कि :—

नर्क में सबसे कम दंड जिस मनुष्य को होगा वह यह होगा कि उसके पाँव की जूतियां आग की होंगी जिसके प्रभाव से उसका मस्तिष्क इस प्रकार खौलेगा जिस प्रकार चूल्हे पर रखी हांडी पका करती है।"

दोज़ख़ियों को खाने पीने के लिये जो कुछ दिया जायगा उसका थोड़ा सा वर्णन अभी पवित्र क़ुरआन की आयतों में गुज़र चुका है। इस सम्बन्ध में दो हदीसें भी सुन लीजिये।

एक हदीस में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया :—

नर्कवालों को बदबूदार पीप (ग़स्साक) पीनी पड़ेगी, यदि उसका एक डोल भर कर दुनिया में बहा दिया जाय तो सारी दुनिया उसकी दुर्गंध से भर जायगी।"

एक और हदीस में है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम ने उस ज़क्कूम (थूहड़) का वर्णन करते हुए जो दोज़ख़ियों को खाना

होगा फ़रमाया कि:—

"यदि ज़क्कूम की एक बूंद इस दुनिया में टपक जाय तो सारी दुनिया में जो खाने पीने की वस्तुएं हैं सब नष्ट हो जायँ फिर सोचो कि उसपर क्या गुज़रेगी जिसको कि यही ज़क्कूम खाना पड़ेगा।"

हे अल्लाह तू हमको और समस्त ईमानवालों को नर्क के प्रत्येक छोटे बड़े दण्ड से अपनी शरण में रखिये।

भाइयो, बर्ज़ख और कियामत और नर्क और वैकुण्ठ के सम्बन्ध में अल्लाप तआला की पुस्तक पवित्र कुरआन ने और उसके रसूल हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जो कुछ हमको बतलाया है (जिसमें से कुछ यहाँ इन दो पाठों में हमने बयान किया है) इसमें कणमात्र भी सन्देह नहीं शपथ है पवित्र अल्लाह के नाम की कि सब बातें बिल्कुल इसी प्रकार है और मरने के पश्चात् जो व्यक्ति जिस चीज़ का अधिकारी सिद्ध होगा वह उसको इसी प्रकार देख लेगा।

पवित्र कुरआन में और हदीसों में कियामत और वैकुण्ठ और नर्क का वर्णन इतने विस्तार से और सैकड़ों बार इसीलिए किया गया है कि दोज़ख के दुखों औरकष्टों से बचने और जन्नत को प्राप्त करने का प्रयत्न करने से हम असावधान न हों!

भाइयों यह दुनिया केवल कुछ ही दिनों की है एक न एक दिन हम सबको निःसंन्देह मरना है और कियामत निःसंदेह आनेवाली है और हम सब को अपने कर्मों का हिसाब देने के लिए अल्लाह के सामने निःसन्देह खड़ा होना है। और फिर इसके

पश्चात् हमारा स्थायी और सदैव का ठिकाना जन्नत अथवा नर्क होगा।

अभी अवसर है कि पिछले पापों से पश्चाताप करके और भविष्य के लिए अपने जीवन को सुधार कर नर्क से बचने और जन्नत प्राप्त करने का प्रबन्ध और प्रयत्न कर लें।

यदि खुदा न करे जीवन यों ही अचेतना में व्यतीत हो गया तो मरने के पश्चात् पछतावे और दोज़ख़ के दण्ड के अतिरिक्त और कुछ प्राप्त न कर सकेंगे।

अल्लाहुम + म + इन्ना + नस + अलुकल + जन्न + त + वमा + क़र्र + बइलैहा + मिन + क़ौलिन + औ + अ + म + लिन + व + नऊज़ुबि + क + मिनन्नारिवमा + क़र्र + बइलैहा + मिन + क़ौलिन + औ + अ + म + लिन +

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْئَلُكَ الْجَنَّةَ وَمَا قربَ اليها من قول وعمل، ونعوذ بك

من النار وما قرب إليها من قول وعمل

हे अल्लाह! हम तुझसे भिक्षा माँगते हैं जन्नत और ऐसी बात और ऐसे काम का जो उससे निकट कर दे। तेरी शरण चाहते हैं दोज़ख़ और उस बात और उस काम से जो उससे निकट करदे।

सत्तरहवां पाठ

ज़िक्रुल्लाह

(अल्लाह का स्मरण, उसका भजन, और उसका जाप)

चूंकि इस्लाम की शिक्षा और उसकी मांग यह है (बल्कि कहना चाहिये कि इस्लाम वास्तव में नाम ही इस का है) कि अल्लाह के बन्दे अपना सम्पूर्ण जीवन अल्लाह की आज्ञाओं के अनुसार व्यतीत करें प्रत्येक दशा और प्रत्येक अवस्था में वह अल्लाह की आज्ञाओं का पालन करें और चूंकि यह बात पूर्णतः जब ही प्राप्त हो सकती हैं जबकि बन्दे को हर समय अल्लाह का ध्यान रहे और उसके हृदय में अल्लाह की बड़ाई और उस का स्नेह पूर्णतः बैठ जाय अतः इस्लाम की एक विशेष शिक्षा यह है कि बन्दे अधिकता के साथ अल्लाह की याद रखें और उसके नाम का जाप करते रहें और उसकी तसबीह (पवित्रता बखानना) व तक़दीस (सुथराई का वर्णन करना) और हम्द (प्रशंसा करना) और सना (गुण बखानना) से अपनी ज़बानें तर रखें। हृदय में अल्लाह का स्नेह और उसकी बड़ाई उत्पन्न करने का यह एक विशेष साधन और परखा परखाया नुसख़ा है। यह एक प्राकृतिक बात है कि मनुष्य जिस किसी की बड़ाई के ध्यान में हर समय डूबा

रहे और जिसके सौन्दर्य के गीत दिन रात गाता रहेगा तो हृदय में उसकी बड़ाई और उस का प्रेम अवश्य उत्पन्न हो जायगा और लगातार बढ़ता रहेगा।

सारांश यह है कि यह एक सत्यता है कि स्मरण की अधिकता प्रेमदीप को जलाती भी है और उसकी लौ को भड़काती भी है और यह भी एक हकीकत है कि पूर्ण आज्ञापालन का वह जीवन जिसका नाम इसलाम है वह केवल प्रेम ही से उत्पन्न हो सकता है केवल प्रीत ही वह वस्तु है जो सच्चे प्रेमी को प्रिय का पूर्णत: आज्ञाकारी बना देती है।

प्रेम क्या है दासता है प्रिय की

इस लिये पवित्र कुरआन में अल्लाह के भजन, स्मरण और जाप की अधिकता की आज्ञा बड़ी दृढ़ता पूर्वक दी गई है और रसूलुल्लाहि सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी इसकी बड़ी श्रेष्ठता बयान की है। उदाहरणार्थ सूरए "अहज़ाब" में कहा गया है।

या+अय्यु हल्लज़ी + न + आ + मनु + ज़+कुरुल्ला+ह+ ज़िकरन+कसीरौं + व + सब्बिहूहु +बुक+रतौं+व+असीला+ (अह+ज़ाब+रुकू : ६)

يَآ اَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوا اللّٰهَ ذِكْرًا كَثِيْرًا ۝ وَّسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ۝

हे ईमानवालो अल्लाह की याद करो बहुत और उसकी पाकी बयान करो प्रातः काल और सायंकाल।

और सूरए जुमुअह में है:—

वज़्+कुरुल्ला+ह+कसीरल + लअल्लकुम तुफ़+लिहूना+ (जुमअह रुकू: २]

وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ

और याद करो अल्लाह को अधिक ताकि तुम सफलता प्राप्त करो।

विशेषकर दो वस्तुएं ऐसी हैं जिनमें व्यग्र और लीन होकर अथवा उनके नशे में मस्त होकर आदमी अल्लाह को भूल जाता है। एक—धन सम्पत्ति—दूसरे—बीवी बच्चे अतएव इन दोनों वस्तुओं का नाम लेकर साफ़ साफ़ मुसलमानों को चेतावनी दी गई है।

सूरए "मुनाफ़िक़ून" में है:—

या + ऐयुहल्लज़ी + न + आ + मनू + लातुलहिकुम + अम+ वालुकुम + वला + औलादुकुमअन + ज़िक + रिल्लाहि + व + मैंय+य+फअल ज़ालि+क+ फ़उलाइ+क+हुमुल+ख़ासिरून+

يَآأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُلْهِكُمْ اَمْوَالُكُمْ وَلَآ اَوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ○

हे ईमान वालो तुमको तुम्हारे धन और सम्पत्ति और तुम्हारी सन्तान अल्लाह की याद से असावधान न करदे और जो ऐसा करेंगे वही टोटे और घाटे में रहने वाले होंगे।

इसलाम में पांच समय की नमाज़ अनिवार्य है और वह निःसंदेह अल्लाह की याद है बल्कि उच्चकोटि की याद है। परन्तु किसी ईमान वाले के लिये उचित नहीं है कि वह केवल नमाज़ की याद को ही काफ़ी समझे और नमाज़ के बाहर अल्लाह की याद और उसके जाप और भजन से बिल्कुल अचिन्तित तथा असावधान रहे[1]।

इसलाम का खुला हुआ आदेश यह है कि नमाज़ के अतिरिक्त भी तुम जिस परिस्थिति में हो अल्लाह से असावधान न हो। सूरए निसाअ में है।

फ़इफ़ा+क़ज़ैतुमुस्सला+त+फ़ज़्+कुरुल+ला+ह+क़ियामौं व+कुऊदौं+व+अला जुनूबिकुम

فَإِذَا قَضَيْتُمُ الصَّلٰوةَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ قِيٰمًا وَّقُعُوْدًا وَّعَلٰى جُنُوْبِكُمْ

और जब तुम पढ़ चुको नमाज़ तो याद करो अल्लाह को खड़े और बैठे और लेटे।

यहां तक कि जो लोग खुदा की राह में जिहाद के लिये निकले हुए हों उन्हें भी दृढ़तापूर्वक आज्ञा दी गई है कि वह अल्लाह की याद से असावधान न हों वरन् अधिकता के साथ उसका भजन करते रहें और उसकी याद रखें।

१—इसका यह अर्थ नहीं है कि जिस प्रकार अपने नियत समय पर नमाज़ अनिवार्य (फ़र्ज़) है उसी प्रकार प्रत्येक समय अल्लाह की याद में रहना अनिवार्य है वरन् अर्थ केवल यह है कि मोमिन को अल्लाह से असावधान न रहना चाहिये।

सूरए "अनफ़ाल में है [या+अय्युहल्लजी+ न+आ+मनू+ इजा+लक़ीतुम+फ़िअतन+फ़सबुतूवज + कुरुल्ला+ह+कसीरल +लअल्लकुम+तु+फ लिहन+

يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا لَقِيتُمْ فِئَةً فَاثْبُتُوا وَاذْكُرُوا اللَّهَ كَثِيرًا لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝

हे ईमानवालो, जब तुम्हारा सामना हो किसी सेना से तो दृढ़तापूर्वक जम जाओ और अल्लाह को बहुत याद करो ताकि तुम सफल हो जाओ।

इस आयत से भी ज्ञात हुआ और ऊपर सूरए "जुमुअह" की जिस आयत का अनुकरण हो चुका है।

वज+कुरुल्ला + ह + कसीरल्लअल्लकुम + तुफ़+लिहून +

و اذكروا الله كثيراً لعلكم تفلحون

(और याद करो अल्लाह को अधिक ताकि तुम सफलता प्राप्त करो)

उससे भी ज्ञात हुआ था कि ईमानवालों की सफलता में अल्लाह की याद की अधिकता का विशेष प्रभाव है और सूरए "मुनाफ़िक़ून" की जो आयत ऊपर अनुकरण की गई उससे भी ज्ञात हो चुका है कि अल्लाह की याद से असावधान रहनेवाले असफल और हानि में रह जाने वाले हैं और सूरए "राद" की एक आयत में अल्लाह की याद का एक यह प्रभाव वर्णन हुआ है कि इससे शान्ति और सन्तोष प्राप्त होता है।

अला+बिज़िक+रिल्लाहि तत+मइन्नुल+क़लूब+

أَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوْبُ

याद रखो अल्लाह की, याद ही से शान्ति पाते हैं हृदय (अर्थात् ईमानवाली आत्माएं।)

पवित्र कुरआन की इन आयतों के अतिरिक्त रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की कुछ हदीसें भी सुन लीजिये।

एक हदीस में है:—

रसूलुल्लाहि सल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा गया कि क़ियामत के दिन कौन लोग अल्लाह के बन्दों में से अधिक ऊंचे पदों पर होंगे? आपने फ़रमाया अल्लाह का ज़िक्र (याद, भजन, जाप) करने वाले। चाहे वह पुरुष हों अथवा स्त्रियां।

सहीह मुसलिम 'और सहीह' बुखारी में हज़रत अबूमूसा (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) से वर्णन है कि रसूलुल्लाहि सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि:—

अल्लाह को याद करने वाले का उदाहरण और याद न करने वाले का उदाहरण जीवित और मृत जैसा है (अर्थात याद करने वाला जीवित है और न याद करने वाला मृत वरन् मुरदार है।)

और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर का वृत्तान्त है कि हुज़ूर ने फ़रमाया:—

हर वस्तु के लिये एक स्वच्छ करने वाला होता है और

दिलों को स्वच्छ करने वाला अल्लाह का ज़िक्र (याद, जाप, भजन) है और अल्लाह के दण्ड से मुक्त करने वाली कोई वस्तु भी अल्लाह के ज़िक्र से अधिक प्रभावशील नहीं ।

ज़िक्र का वास्तविक अर्थ ।

यहां यह बात भली भांति समझ लेनी चाहिये कि ज़िक्र का वास्तविक अर्थ यह है कि मनुष्य अल्लाह से असावधान न हो वह जिस दशा और जिस धन्धे में हो इसको अल्लाह का और उसकी आज्ञाओं का ध्यान हो। इसके लिये यद्यपि यह आवश्यक नहीं है कि प्रत्येक समय और प्रत्येक परिस्थित में वह ज़बान से भी ज़िक्र (जाप, भजन) करे। परन्तु यह सत्यता है कि अल्लाह के जिन बन्दों की यह दशा होती है उनकी ज़बानें भी अल्लाह के ज़िक्र (जाप) से तर रहती हैं। और यह दशा (कि प्रत्येक समय अल्लाह का और उसकी आज्ञाओं का ध्यान रहे और असावधानी न होने पाए) सामान्य रुप से उन्हीं व्यक्तियों की होती है जो ज़बान द्वारा ज़िक्र की अधिकता करके हृदय और मस्तिष्क में याद और ध्यान की दशा स्थिर कर लेते हैं। और अल्लाह से अपने हार्दिक सम्बन्ध को घनिष्ट कर लेते हैं इसलिये ज़बान द्वारा ज़िक्र की अधिकता प्रत्येक दशा में आवश्यक है। इस काल के कुछ पढ़े लिखे लोगों को यह घोर मिथ्याबोध है कि वह ज़बान से अल्लाह के ज़िक्र की अधिकता को व्यर्थ समझते हैं निःसंदेह रसूलुलाहि सल्लल्लाह अलैहि व सल्लम की हदीसों में साफ़ साफ़

इसका निर्देश है यौर हुजूर ने इसकी बड़ी श्रेष्टताएं वर्णन की हैं। हजरत अब्दुल्लाह बिन बुस्र (सुपुत्र बुस्र) का वृत्तान्त है कि एक व्यक्ति हुजूर की सेवा में उपस्थित हुआ और उसने निवेदन किया:—

हे अल्लाह के रसूल, इसलाम के आदेश बहुत हैं आप मुझको कोई ऐसी बात बता दीजिये जिसको मैं दृढ़ता पूर्वक ग्रहण कर लूं ? हुजूर ने फरमाया तुम्हारी ज़बान सदैव अल्लाह के जिक्र (जाप] से तर रहा करे।

एक "हदीसे कुदसी"१ में है जो हजरत अबू हुरैरह का वृत्तान्त है कि

"हक तआला का पवित्र कथन है कि बन्दा जब मुझे याद करता है और मेरे जिक्र से उसके होंठ चलते हैं तो मैं उसके साथ होता हूं।"

रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सिखाए हुए कुछ विशेष (जाप)

जो आयतें और हदीसें अब तक लिखी गईं उनसे अल्लाह के जिक्र का महत्व और श्रेष्टता ज्ञात हो चुकी और ऊपर यह भी बतलाया जा चुका है कि अल्लाह के जिक्र की अधिकता से अल्लाह का प्रेम उत्पन्न होता है और बढ़ता है। अब हमको और आपको

---

१ वह प्रवचन जो वास्तव में खुदा का हो (कुर्आन के अतिरिक्त) परन्तु मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुख से हो।

पवित्र रसूल के सिखाए हुए और पसन्द किए हुए जिक्र के विशेष वाक्य ज्ञात कर लेना चाहिए।

अफ़ज़लुज़्ज़िक्र (सर्व श्रेष्ठ जाप)

हज़रत जाबिर का वृत्तान्त है कि पवित्र रसूल का कथन है कि सब जिक्रों में श्रेष्ठ "ला+इला+ह+इल्लल्लाह" का जिक्र है।

एक दूसरी हदीस में है जो हज़रत अबूहुरैरह (अल्लाह उनसे राज़ी हो) का वृत्तान्त है कि रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया।

"जब कोई बन्दा दिल की गहराई से "ला+इला+ह+इल्लल्लाहु" कहता है तो इस वाक्य के लिये आकाश के द्वार खुल जाते हैं यहाँ तक यह वाक्य सीधा अर्श तक पहुंचता है शर्त यह है कि वह बन्दा बड़े पापों से बचे।"

और एक दूसरी हदीस में है कि रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बयान फ़रमाया कि:—

"एक बार हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने (उन पर सलाम हो) अल्लाह तआला से निवेदन किया कि मुझे कोई जाप बतलाया जाय जिसके द्वारा मैं आप का जिक्र (जाप) किया करूं। अल्लाह तआला की ओर से उत्तर मिला कि "ला + इला+ह+इल्लल्लाह" के द्वारा मेरा जिक्र किया करो। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने निवेदन

किया कि यह जिक्र (जाप) तो सभी करते हैं मैं आप से कोई विशेष वाक्य ज्ञात करना चाहता हूं। उत्तर मिला कि हे मूसा यदि सातों आकाश और समस्त आकाशों की सृष्टि और सातों पृथ्वियां तराजू के एक पलड़े में रखी जांय और "ला + इला+ह+इल्लल्लह" दूसरे पलड़े में तो "ला+इला+ह+इल्लल्लाह" वाला पलड़ा ही झुक जायगा"

वास्तव में "ला+इला+ह + इल्लल्लाह" की शान ऐसी ही है परन्तु लोग इसको केवल एक हलका सा शब्द समझते हैं। इस तुच्छ ने अल्लाह के एक संत और सच्चे भक्त से सुना। एक विशेष दशा में इस सेवक ही पर दया दृष्टि डालते हुए फ़रमाया।

यदि कोई व्यक्ति जिसके अधिकार में दुनिया के ख़ज़ाने हों मुझसे यह कहे कि यह सारे ख़ज़ाने तुम ले लो और अपना कहा हुआ एक बार का ला+इला+ह+इल्लल्लाह इसके बदले में दे दो तो यह फ़क़ीर इस पर सहमत न होगा।

कोई अनजान सम्भव है कि इसको अतिशयोक्ति (मुबालिग़ा) समझे परन्तु सच्ची बात यह है कि ला+इला+ह+इल्लल्लाह की अल्लाह की दृष्टि में जो बड़ाई और मूल्य है, यदि अल्लाह तआला अपने किसी भक्त को इसका विश्वास प्रदान कर दे, तो उसकी दशा यही होगी कि वह सारी दुनिया के ख़ज़ानों के बदले में एक बार का भी ला+इला+ह+इल्लल्लाह देने पर तैयार न होगा।

कलिमए तमजीद अथवा तृतीय कलिमह ।

हज़रत सुमरा सपुत्र जन्दब (अल्लाह उनसे राजी हो) द्वारा वृत्तान्त किया गया है कि रसूलुल्लहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:—

समस्त बोलों में श्रेष्ठ बोल और समस्त मन्त्रों में श्रेष्ठ मंत्र यह चार हैं।

सुब + हानल्लाहि वल+हम्दु+लिल्लाहि वला+इला+ह+इल्लल्लाहु वल्लाहु+अकबर

سُبْحَانَ اللّٰہِ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ وَلَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاللّٰہُ اَکْبَرُ

और हज़रत अबू हुरैरह द्वारा वृतान्त है कि रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि यह वाक्य:—

सुब+हानल्लाहि + वल+ हम्दु+ लिललहि+वला+इला+ह+इल्लल्लाहु+वल्लाहु+अक+बर

मुझको इस सकल संसार से अधिक प्रिय है जिस पर सूर्य प्रकाशित होता है।

वास्तव में यह वाक्य अत्यन्त सम्पूर्ण वाक्य है और अल्लाह तआला की प्रशंसा के समस्त रूप और प्रत्येक भाव इसमें आ जाते हैं। कुछ हदीसों में अल्लाहु अकबर के पश्चात लाहौ+ल+वला+क़ूव+त+इल्ला+बिल्लाह भी आया है हमारे एक बड़े संत इस वाक्य की संक्षिप्त व्याख्या इस प्रकार किया करते थे।

सुबहानल्लाह—पवित्र है अल्लाह प्रत्येक दोष और त्रुटि

से और उन समस्त बातों से जो उसकी शान के योग्य नहीं। अल हम्दु लिल्लाह—और समस्त गुण और कमाल की सारी विभूतियां उसमें पाई जाती हैं अतएव सारी प्रशंसाएं उसी के लिए हैं। अलहम्दुलिल्लाह और जब उसकी शान यह है कि प्रत्येक अनुचित बात से वह पवित्र है और गुण और परिपूर्ण विभूतियां सब उसमें एकत्रित हैं तो वही हमारा पूज्य और प्रिय है। ला—इला—ह—इल्लल्लाह—हम उसके केवल उसी के तुच्छ बन्दे हैं और वह बहुत ही बड़ा है। अल्लाहु अकबर—हम किसी प्रकार उसकी आराधना का हक़ अदा नहीं कर सकते और उस ऊंचे दरबार तक हमारी पहुंच नहीं हो सकती हां यह कि वही हमारी सहायता करे ला+हौ+ल+वला++कूव+त+इल्ला बिल्लाह।

तसबीहाते फ़ातिमह अर्थात् बीबी फ़ातिमह (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) का जाप।

प्रसिद्ध हदीस है कि:—

हज़रत फ़ातिमह (अल्लाह उन से राज़ी हो) अपने घर का पूरा काम काज स्वयं करती थीं। यहां तक कि स्वयं ही पानी भी भरा करती थीं। और स्वय ही चक्की पीसती थीं। एक बार उन्होंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रार्थना की कि इन कार्यों के लिये उन्हें कोई

दासी दे दी जाय, तो हुज़ूर ने उनसे फ़रमाया कि मैं तुम्हें दासी से अच्छी वस्तु बताता हूं और वह यह है कि तुम प्रत्येक नमाज़ के पश्चात और सोते समय तेंतीस बार सुबहानल्लाह, तेंतीस बार अलहम्दुलिल्लाह और चौंतीस बार अल्लाहु अकबर कह लिया करो। यह तुम्हारे लिये दासी से कई गुना अच्छा है।

एक दूसरी हदीस में इन वाक्यों की श्रेष्ठता और इनका गुण यह वर्णन किया गया है कि:—

"जो व्यक्ति प्रत्येक नमाज़ के पश्चात् तेंतीस बार सुबहान-ल्लाह तेंतीस बार अलहम्दुलिल्लाह चौंतीस बार अल्लाहु अकबर पढ़ा करे और अन्त में एक बार यह पढ़ लिया करे। ला + इला+ह + इल्लल्लाहु+वह्+दहू+ला+ शरी+क+लहू+लहुल + मुलकु+व+लहुल+हम्दु+ वहु+व+अला+कुल्लि+शैइन+क़दीर।

तो उसके समस्त अपराध क्षमा कर दिये जायंगे यद्यपि समुद्र के झाग के समान क्यों न हों।"

सुबहानल्लाहि व बिहमदिही:—

हज़रत अबू हुरैरा ही का एक दूसरा वर्णन है कि रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:—

"दो वाक्य हैं, ज़बान पर अत्यन्त हलके कर्म के तराज़ू पर अत्यन्त भारी और अल्लाह को अत्यन्त प्यारे (१) सुबहानल्लाहि व बिहमदिही। (२) सुबहानल्लाहिल अज़ीम।

यद्यपि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अल्लाह के ज़िक्र के लिये और भी बहुत से वाक्य बयान किये गये हैं परन्तु हमने जो थोड़े से वाक्य ऊपर अंकित किये हैं यदि अल्लाह का कोई बन्दा उन्हीं को अथवा उनमें से कुछ को अपना जाप बना ले तो काफ़ी है। ज़िक्र के सम्बन्ध में एक बात और भी विचारनीय है कि जहाँ तक परलोक के बदले और प्रतिफल का सम्बन्ध है उसके लिये कोई विशेष नियम और विधि नहीं है। अल्लाह के जो बन्दे ज़िक्र का जो वाक्य भी पूर्ण विश्वास और प्रतिफल की इच्छा से जिस समय और जिस मात्रा औरसंख्या में पढ़ेंगे खुदा की दया से वह उसके पूरे बदले और प्रतिफल के अधिकारी होंगे परन्तु गुरु जन हृदय में कोई विशेष प्रभाव उत्पन्न करने के लिये उदाहरणार्थ अल्लाह तआला का स्नेह बढ़ाने के लिये अथवा हृदय में चेतना और जागरण की दशा उत्पन्न करने के लिये अथवा किसी आत्मिक या हार्दिक रोग की दवा के लिये विशेष रीति से जो ज़िक्र बताते हैं उसमें उस संख्या और नियम की पाबन्दी आवश्यक है जो वह बतलाएँ क्योंकि जिस उद्देश्य से वह ज़िक्र किया जाता है, उस उद्देश्य की पूर्ति उसी रीति से होती है उसका स्पष्ट उदाहरण यह है कि यदि कोई व्यक्ति केवल प्रतिफल प्राप्त करने के लिये अलहम्दु शरीफ़ अथवा पवित्र कुरआन की किसी अन्य सूरत का पाठ करे तो इसमें कोई अड़चन और हानि नहीं है कि वह एक बार प्रातःकाल पाठ करले एक बार दोपहर को एक बार ज़ुहर के समय और एक बार सायंकाल और इसी प्रकार दो चार बार रात में परन्तु यदि वह इस सूरत को कंठस्थ करना भी चाहता है तो इसको लगातार बिना किसी अवकाश के बीसों बार

एक ही बैठक में पाठ करना पड़ेगा बिना इसके वह क़ंठाग्र नहीं कर सकता। बस यही अन्तर है इस साधारण ज़िक्र में जो केवल सवाब (प्रतिफल) के लिये किया जाता है और उस विशेष ज़िक्र में जो गरुवर भक्ति धारण करने वालों को औषधि और उपाय के रूप में बताते हैं। बहुत से लोगों को ज़िक्र के इन प्रकारों का अन्तर ज्ञात न होने के कारण ज्ञानात्मक और आचार शास्त्रीय उलझनें होती है इसलिये यह, बात संक्षिप्त रूप से यहाँ अंकित कर दी गई।

पवित्र क़ुरआन का पाठ[१] :—

पवित्र क़ुरआन का पाठ भी अल्लाह का ज़िक्र है वरन् उच्च

---

१ आज कल के कुछ नवीन शिक्षा पाए हुए महाशयों का विचार है और जिस को वह पूर्ण शक्ति से फैलाते हैं कि अर्थ समझे बिना पवित्र क़ुरआन का पाठ बिलकुल व्यर्थ है। यह बेचारे शायद यह समझते हैं कि जिस प्रकार विधान अथवा नीतिशास्त्र की दूसरी पुस्तकें होती हैं उसी प्रकार की एक पुस्तक पवित्र क़ुरआन भी है और जैसे किसी वैधानिक अथवा नैतिक ज्ञान सम्बन्धी पुस्तक को उसे न समझने वाले का पढ़ना बिलकुल व्यर्थ है इसी प्रकार ऐसे लोगों का पवित्र क़ुरआन का पाठ करना भी व्यर्थ और फ़ुज़ूल है जो पवित्र क़ुरआन के अर्थ नहीं समझते। पवित्र क़ुरआन अन्य पुस्तकों से भिन्न है। इस पवित्र पुस्तक की विशेषता यह है कि यह पवित्र अल्लाह की पुस्तक हैं। इस लिये शिष्टाचार और प्रेम के साथ इसका केवल पाठ भी अल्लाह तआला के साथ प्रेम और दासता के सम्बन्ध को प्रकट करने वाला एक कार्य है। इस लिए यह एक पृथक

(शेष पेज २०४ पर)

श्रेणी का जिक्र है। एक हदीस में है। रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया :—

अल्लाह तआला के कथन की श्रेष्ठता दूसरे कथनों पर ऐसी ही है जैसे अल्लाह की श्रेष्ठता उसकी सृष्टि पर।

एक दूसरी हदीस में है जो हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (अब्दुल्लाह सुपुत्र मसऊद) का वृत्तान्त है कि रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लाहु ने फ़रमाया।

"जो व्यक्ति अल्लाह की पुस्तक (पवित्र कुरआन) का एक अक्षर पढ़े उसके लिये एक नेकी है और उस एक नेकी का मान दस नेकियों के बराबर है।

आराधना है। यदि पवित्र क़ुरआन का प्रयोजन केवल समझना ही होता एक एक नमाज़ में चार चार बार सूरए फ़ातिहा पढ़ने की आज्ञा न होती। क्योंकि अर्थ समझने के लिये तो एक बार का पाठ काफ़ी होता। इस प्रकार की मिथ्या बोध वास्तव में उन लोगों को होता है जो अल्लाह तआला को दुनिया के राजाधिकारियों के समान केवल एक हाकिम समझते हैं और उसके प्रिय और पूज्य होने की शान से अपरिचित हैं अथवा यों कहा जाय कि जिन लोगों ने केवल मानसिक रूप से खुदा को जाना और माना है और हृदय द्वारा मानना अभी उनको पूर्ण रूप से प्राप्त नहीं हुआ। इस के साथ यह भी दृष्टि में रहे कि कुरआन का जो वास्तविक उद्देश्य है अर्थात् पथ प्रदर्शन और उपदेश वह समझने ही पर निर्भर है। इसलिये इसको समझना और विचारपूर्वक सुबोध पाठ करना भक्ति और भाग्यशीलता की उच्च श्रेणी और श्रेष्ठ स्थान है। इस विषय में यही संतुलित तथा सत्ययुक्त निर्णय है।

परन्तु बहुतेरे मनुष्य ज्ञान नहीं रखते।

फिर फ़रमाया कि मैं यह नहीं कहता हूं कि अलिफ़ लाम मीम एक अक्षर है वरन् इसका अलिफ़ एक अक्षर है लाम दूसरा अक्षर है और मीम तीसरा अक्षर है।

एक और हदीस में है जो कि हज़रत अबू उमामह (अल्लाह उनसे राज़ी हो) का वृत्तान्त है कि रसूलुल्लाहि सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि :—

"लोगो कुरआन पढ़ा करो। क़ियामत के दिन कुरआन उनकी सुफ़ारिश करेगा जो कुरआन पढ़नेवाले होंगे।

ज़िक्र के सम्बन्ध में कुछ शब्द:—

(१)

ज़िक्र करते करते अल्लाह के जिन दासों, भक्तों के हृदय में ज़िक्र बस गया है और उनके जीवन का अंश बन गया है उनको तो ज़िक्र के लिये किसी विशेष पाबन्दी तथा प्रबन्ध की आवश्यकता नहीं होती परन्तु हम जैसे सामान्य व्यक्ति यदि ज़िक्र के द्वारा अल्लाह तआला से अपना सम्बन्ध बढ़ाना और ज़िक्र की बरकतें और उसके लाभ प्राप्त करना चाहें तो उनके लिये आवश्यक है कि वह अपनी परिस्थितियों के अनुसार ज़िक्र की कुछ संख्या और उसका समय नियुक्त करलें। इसी प्रकार पवित्र कुरआन के पाठ के लिये भी समय नियुक्त करलें।

(२)

जिस मंत्र द्वारा अल्लाह का ज़िक्र किया जाय, यथा सम्भव उसके अर्थ का भी ध्यान रखा जाय और अल्लाह तआला के प्रेम और वैभव के ज्ञान के साथ ज़िक्र किया जाये और इसका विश्वास

रखा जाय कि अल्लाह तआला मेरे पास और मेरे साथ हैं और मेरे प्रत्येक शब्द को सुन रहे है।

(३)

ज़िक्र के लिये वज़ू (अल्पस्नान) शर्त नहीं है इसलिये वज़ू न होने की दशा में भी बे झिझक ज़िक्र किया जा सकता है इनशा अल्लाह (यदि अल्लाह ने चाहा) जिस सवाब [प्रतिफल] के लिये वचन दिया गया है वह पूरा पूरा मिलेगा परन्तु वज़ू के साथ ज़िक्र का प्रभाव और उसकी नूरानियत [तेज प्रकाश] बहुत बढ़ जाती है।

(४)

ऊपर कहा जा चुका है कि ज़िक्र के समस्त मंत्रों में कलिमए तमजीद [तीसरा कलिमह]

सुब + हा + नूल्लाह + वल + हम्दु + लिल्लाह + वला + इला + ह + इल्लल्लाहु + वल्लाहु अक + बर बहुत परिपूर्ण मंत्र है यदि इसको अपना विर्द [जाप] बना लिया जाय तो इसमें सब कुछ है और अपने अधिकतर बड़ो को देखा है कि वह समान रूप से इच्छुकों को स्थाई जाप के लिये यही मंत्र. और उसके साथ इसतिग़फ़ार और दरूद शरीफ़ बतलाते हैं इसतिग़फार और दरूद शरीफ़ का वर्णन अभी एक पाठ आगे आ रहा है।

अल्लाह तआला हम सबकी सहायता करे कि उसके जाप से हमारे हृदय परिपूर्ण और हमारी ज़बानें तर रहें और उसकी ज्योति तथा उसका प्रभाव और उसकी बरकतें तथा लाभ हमें नसीब हों।

अठरहवाँ पाठ

दुआ (प्रार्थना)

जब यह बात मानी हुई और निश्चित है कि इस दुनिया का सारा कारखाना अल्लाह ही की आज्ञा से चल रहा है और सब कुछ उसी के अधिकार और शक्ति में है तो प्रत्येक छोटी तथा बड़ी आवश्यकता में अल्लाह से प्रार्थना करना बिलकुल प्राकृतिक बात है इसी लिये प्रत्येक धर्म के मानने वाले अपनी आवश्यकताओं में अल्लाह तआला से प्रार्थना करते हैं परन्तु इसलाम में इसकी शिक्षा और आज्ञा विशेष रूप से दी गई है। पवित्र क़ुरआन में एक स्थान पर फ़रमाया गया है :

वक़ा+ल+रब्बुकुमुद+ऊनी अस्तजिब+लकुम+

وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُونِيْٓ اَسْتَجِبْ لَكُمْ

और फ़रमाया तुम्हारे परवर्दिगार ने कहा कि मुझसे प्रार्थना करो मैं स्वीकार करूँगा।

दूसरे स्थान पर है :—

क़ुल मा+याबउ+बिकुम+रब्बी लौला+दुआउकुम

قُلْ مَا يَعْبَؤُا بِكُمْ رَبِّيْ لَوْلَا دُعَآؤُكُمْ

कह दो, क्या परवाह तुम्हारी मेरे रब को यदि न हों तुम्हारी प्रार्थनाएँ।

फिर प्रार्थना की आज्ञा के साथ यह भी सन्तोष दिया गया है कि अल्लाह तआला अपने दासों से बहुत निकट है। वह उनकी प्रार्थनाओं को सुनता और स्वीकार करता है। फ़रमाया गया है :—

वइज़ा + स+अ + ल + क+ इबादी+अन्नी+फ़इन्नी+क़रीब+उजीबु+दा+वतद्दइ+इज़+दआन+

وَاِذَا سَاَلَكَ عِبَادِىْ عَنِّىْ فَاِنِّىْ قَرِيْبٌ اُجِيْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ

और हे रसूल जब तुम से मेरे बन्दे मेरे सम्बन्ध में पूछें (तो उन्हें बताओ) कि मैं उनसे निकट हूं। पुकारनेवाला जब मुझे पुकारे तो मैं उसकी पुकार सुनता हूं।

रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमको यह भी बतलाया है कि अपनी आवश्यकताएं अल्लाह तआला से माँगना और प्रार्थना करना उच्च कोटि की आराधना है वरन् इबादत (पूजा) की आत्मा तथा सार है। पवित्र हदीस में है :—

"प्रार्थना पूजा है।" (और एक वृत्तान्त में है कि प्रार्थना) पूजा का तत्व और सत्त है।

एक दूसरी हदीस में है :—

"अल्लाह की दृष्टि में प्रार्थना से अधिक किसी वस्तु का स्थान नहीं"

और इसीलिये अल्लाह तआला उस व्यक्ति से अप्रसन्न होते हैं जो अपनी आवश्यकताएँ उससे न मांगे : एक हदीस में है :—

"अल्लाह तआला उस दास से अप्रसन्न होता है जो अपनी

कामनाएँ और आवश्यकताएँ उससे नहीं माँगता ।"

सुबहानल्लाह (पवित्र है अल्लाह) क्या शान है अल्लाह की ! दुनिया में कोई व्यक्ति यदि अपने किसी घनिष्ट मित्र अथवा अपने किसी सगे नातेदार और प्रिय से बारम्बार अपनी आवश्यकताओं को माँगे तो वह उससे तंग आकर क्रोधित हो जाता है परन्तु पवित्र अल्लाह अपने दासों पर ऐसा कृपालु तथा दयालु है कि वह न माँगने पर क्रुद्ध और अप्रसन्न होता है ।

एक और हदीस में है ।

"जिस व्यक्ति के लिये प्रार्थना के द्वार खुल गये (अर्थात् अल्लाह की ओर से जिसको प्रार्थना की इच्छा और क्षमता प्रदान हो गई और वास्तविक प्रार्थना करना जिसको आ गया) तो उसके लिये अल्लाह की दया के पट खुल गये ।"

अल्लाह से प्रार्थना करना जिस प्रकार अपनी इच्छा को प्राप्त करने का एक साधन है इसी प्रकार प्रार्थना करना एक उच्च श्रेणी की इबादत (पूजा) भी है । जिससे अल्लाह तआला अत्यन्त प्रसन्न और राज़ी होता है और रहमत (दयालुता) के द्वार खोल देता है । यह लाभ प्रत्येक प्रार्थना का है चाहे वह किसी सांसारिक प्रयोजन से की जाय अथवा धार्मिक उद्देश्य से । परन्तु शर्त यह है कि किसी बुरे और नियम विरुद्ध कार्य के लिये न हो । नियम विरुद्ध कार्य के लिये प्रार्थना करना भी नियम विरुद्ध और पाप है।

यहाँ एक बात यह भी याद रखने की है कि प्रार्थना जितनी हृदय की गहराई से और अपने को जितना भी तुच्छ और बेबस समझकर अल्लाह की शक्ति तथा रहमत (दयालुता) के जितने भी विश्वास के साथ की जायगी उतनी ही उसके स्वीकार होने की अधिक आशा

होगा। जो प्रार्थना हृदय की गहराई से न की जाय वरन् केवल परंपरागत ज़बान ही से कर ली जाय वह वास्तव में प्रार्थना ही नहीं होती।

पवित्र हदीस में है कि :—

"अल्लाह तआला वह प्रार्थना स्वीकार नहीं करता जो हृदय की अचेतना के साथ की जाय"

यद्यपि अल्लाह तआला प्रत्येक समय की प्रार्थना को सुनता है परन्तु हदीसों से ज्ञात होता है कि कुछ विशेष अवसर ऐसे हैं जिनमें प्रार्थना अधिक स्वीकार होती है, उदाहरणार्थ फ़र्ज़ (अनिवार्य) नमाज़ों के पश्चात्, रात के अन्तिम भाग में, रोज़े के इफ़तार (खोलना) के समय या ऐसे ही किसी और नेक कार्य के पश्चात या यात्रा के समय विशेष कर जब यात्रा धमार्थ और अल्लाह की प्रसन्नता के लिये हो। यह भी याद रखना चाहिये कि प्रार्थना के स्वीकार होने के लिये मनुष्य का परहेज़गार होना या वली होना शर्त नहीं है यद्यपि इसमें सन्देह नहीं कि अल्लाह के प्रिय और नेक बन्दों की प्रार्थनाएँ अधिक स्वीकार होती हैं परन्तु ऐसा नहीं है कि सामान्य लोगों और पापियों की प्रार्थनाएँ सुनी ही न जाती हों इसलिये किसी को इस विचार से प्रार्थना त्यागना न चाहिये कि हम पापियों की प्रार्थना से क्या होगा—अल्लाह दयालु कृपालु जिस प्रकार अपने पापी दासों को खिलाता पिलाता है उसी प्रकार उनकी प्रार्थनाएँ भी सुनता है अतः अल्लाह से प्रार्थना सबको करनी चाहिये। अभी बतलाया जा चुका है कि प्रार्थना स्वयं एक पूजा है अतः प्रार्थना करनेवाले को सवाब (प्रतिफल) तो मिलेगा ही।

यदि कुछ बार प्रार्थना करने से मनोरथ सफल न हो तो भी

निराश होकर प्रार्थना त्याग न देना चाहिये। अल्लाह् तआला हमारी इच्छा के आधीन नहीं हैं। कभी कभी उसका सर्वाधिकार यह चाहता है कि प्रार्थना देर (विलम्ब) से स्वीकार की जाय और दास का उपकार और भला भी इसी में होता है परन्तु बन्दा अपनी सीमित जानकारी अथवा अज्ञानता के कारण इसको जानता नहीं इसलिये जल्दी मचाता है और निराश होकर प्रार्थना करना त्याग देता है। बन्दे को चाहिये कि अपनी आवश्यकताओं के लिये अल्लाह् तआला से प्रार्थना करता ही रहे। मालूम नहीं अल्लाह् तआला किस दिन और किस घड़ी सुन ले।

रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने प्रार्थना के सम्बन्ध मे एक बात यह भी बताई है कि :—

"प्रार्थना नष्ट और व्यर्थ कभी नहीं होती परन्तु उसके स्वीकार होने के रूप विभिन्न होते हैं। कभी ऐसा होता है कि बन्दा जिस वस्तु की प्रार्थना करता है उसको वही मिल जाती है और कभी ऐसा होता है कि अल्लाह् तआला उस बन्दे को वह वस्तु देना अच्छा नही समझते अतः वह तो मिलती नहीं परन्तु उसके स्थान पर कोई और अच्छी वस्तु उसको प्रदान की जाती है अथवा कोई आने वाली आपत्ति टाल दी जाती है। या उस प्रार्थना को उसके अपराधों का पापनाशक बना दिया जाता है (परन्तु बन्दे को इस भेद का ज्ञान नहीं होता अतः वह समझता है कि मेरी प्रार्थना व्यर्थ हो गई।) और कभी ऐसा होता है कि अल्लाह् तआला प्रार्थना को परलोक के भन्डार में सुरक्षित कर देता है अर्थात् बन्दा जिस

प्रयोजन से प्रार्थना करता है वह अल्लाह तआला उसको इस संसार में नहीं देता परन्तु उसकी उस प्रार्थना के बदले में परलोक का बहुय बड़ा सवाब (प्रतिफल) उसके लिए लिख दिया जाता है।

एक हदीस में है कि :—

कुछ लोग जिनकी बहुत सी प्रार्थनाएं दुनिया में स्वीकार नहीं हुई थी जब परलोक में पहुँच कर अपनी उन प्रार्थनाओं के बदले में मिले हुये प्रतिफल और नेमतों के भंडार देखेंगे तो शोक से कहेंगे कि क्या अच्छा होता कि हमारी कोई प्रार्थना दुनिया में कभी स्वीकार न हुई होती और सबका बदला हमको यहीं मिलता।

सारांश यह है कि अल्लाह तआला पर ईमान रखने वाले प्रत्येक बन्दे को अल्लाह के सर्वशक्तिमान होंने और उसके करुणाशील होने पर पूर्ण विश्वास रखना चाहिये और प्रार्थना के स्वीकार हो जाने की पूर्ण आशा रखते हुए अपनी प्रत्येक आवश्यकता के लिये अल्लाह तआला से दुआ (प्रार्थना) करनी चाहिये ओर पूर्ण विश्वास रखना चाहिये कि प्रार्थना कदापि व्यर्थ नहीं होगी।

जहां तक बन पड़े प्रार्थना ऐसे अच्छे शब्दों में करनी चाहिये जिनसे अपनी तुच्छता और बेबसी और अल्लाह तआला की बड़ाई और उसका वैभव प्रकट हो। पवित्र क़ुरआन में हमको बहुत सी प्रार्थनाए बतलाई गई हैं और उनके अतिरिक्त हदीसों में भी पवित्र रसूल की सैंकड़ो प्रार्थनाएं आई है। सबसे अच्छी प्रार्थनाएं कुरआन व हदीस की ही प्रार्थनाए हैं। उनमे चालीस संक्षिप्त तथा व्यापी प्रार्थनाए इस पुस्तक के अन्त मे अंकित हैं।

उन्तीसवां पाठ

दुरूद शरीफ़

वास्तव में दुरूद शरीफ़ भी एक प्रार्थना है जो हम बन्दे अल्लाह तआला से पवित्र रसूल के प्रति करते हैं यह एक तथ्य है कि अल्लाह तआला के पश्चात् सबसे अधिक उपकार हमारे ऊपर पवित्र रसूल ही का है। आपने कठिन से कठिन कष्ट उठाकर अल्लाह के पवित्र पथ प्रदर्शन का हमको बोध कराया यदि आप अल्लाह के मार्ग में यह कष्ट न उठाते तो दीन का प्रकाश हम तक न पहुँच सकता और हम कुफ्र और शिर्क के अन्धकार में पड़े रह जाते और मरने के पश्चात् सदैव के लिये नर्क में जाते। धर्म और विश्वास की सम्पत्ति इस दुनिया की सबसे बड़ी नेमत है और यह हमको हूज़ूर द्वारा मिली है इस लिये अल्लाह तआला के पश्चात् हुज़ूर ही हमारे सबसे बड़े उपकारक हैं। हम आप के इस उपकार का कोई बदला नहीं दे सकते। अधिक से अधिक जो कुछ हम कर सकते हैं वह यह है कि अल्लाह तआला से हम आपके प्रति प्रार्थना करें और इस प्रकार अपने उपकृत और कृतज्ञ होने को सिद्ध करें। हमारी ओर से हुज़ूर की शान के योग्य यही प्रार्थना हो सकती है कि अल्लाह तआला आपको अपनी विशेष रहमतें (दयालुता) और बरकतें प्रदान करे और आपका पद उच्च से उच्चतर करे। बस इसी प्रकार की प्रार्थना को दुरूद शरीफ़ कहते हैं।

पवित्र क़ुरआन में बहुत स्पष्ट रूप से और बड़े रुचिकर ढंग से हमको इसकी आज्ञा दी गई है। फ़रमाया गया है:-

इन्नल्ला+ह+व+मलाइ+क+तहू + युसल्लू+न+ अलन्न-बीयि + या + ऐयुहल्लज़ी+न+आ+मनू+सल्लू+अलैहि व+सल्लिमू+तसलीमा

إِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ۝

अल्लाह और उसके फ़रिश्ते रह्मत भेजते हैं नबी पर, हे ईमानवालो तुम उन पर दुरूद भेजो और सलाम प्रस्तुत करो।

इस आयत में पहले तो यह बयान किया गया कि अल्लाह तआला अपने नबी का स्वयं आदर और सम्मान करता है और उन पर दयालुता और करुणाशीलता की दृष्टि रखता है और उसके फ़रिश्तों का भी व्यवहार आप के साथ यही है कि वह आपका आदर और सम्मान करते हैं और अल्लाह तआला से आपके लिये रह्मत की प्रार्थना करते रहते है। इसके पश्चात हम ईमान लाने वालों को आज्ञा दी गई है कि तुम भी उनके लिये अल्लाह तआला से रह्मतें उतारने की प्रार्थना करो और उन पर सलाम भेजो। हमको आज्ञा देने से पूर्व ही बतला दिया गया है कि जिस कार्य का तुम को आदेश दिया जा रहा है वह कार्य अल्लाह तआला को विशेष रूप से प्रिय है और फ़रिश्तों का विशेष धन्धा है। यह जानने के पश्चात कौन मुसलमान होगा जो इसको अपना जाप न बनाए।

दुरूद शरीफ़ की प्रतिष्ठाओं के सम्बन्ध में बहुत सी हदीसें आई हैं जिनमें से दो चार यहाँ भी अंकित की जाती हैं—

अति प्रसिद्ध हदीस में है कि:—

"जो व्यक्ति मुझपर एक बार दुरूद भेजे अल्लाह तआला उसपर दस बार रहमतें भेजता है।"

एक और वृतान्त में इतना और भी है कि:—

उसके दस अपराध भी क्षमा किये जाते हैं और दस दर्जे भी ऊँचे कर दिये जाते हैं।

एक और हदीस में है कि:—

"अल्लाह के बहुत से फ़रिश्ते हैं जिनका विशेष कार्य यही है कि वह पृथ्वी पर फिरते रहते हैं और मेरा जो उम्मती मुझपर दुरूद और सलाम भेजे वह उसको मुझ तक पहुँचाते हैं।

सुबहानल्लाह ! कितनी बड़ी दौलत है कि हमारा दुरूद व सलाम फ़रिश्तों द्वारा हुज़ूर को पहुँचता है और इस बहाने से हमारा नाम भी वहाँ पहुँच जाता है।

एक और हदीस में है :—

"क़ियामत में मुझ से सब से अधिक निकट वह व्यक्ति होगा जो मुझ पर दुरूद अधिक भेजता होगा।"

एक और हदीस में है:—

"वह व्यक्ति बड़ा कंजूस है जिस के सामने मेरा ज़िक्र हो और वह उस समय भी मुझ पर दुरूद न भेजे।"

एक और हदीस में आया है कि :—

"उस व्यक्ति की नाक मिट्टी से लिथड़ जाय (अर्थात वह व्यक्ति अपमानित हो) जिसके सामने मेरा ज़िक्र आए —और वह मुझपर दुरूद न भेजे।"

सारांश यह है कि हुज़ूर पर दुरूद भेजना हमारे ऊपर अनिवार्य है और हमारी बड़ी भाग्यशीलता है और दुनिया एवं परलोक में हमारे लिये असंख्य रहमतों और बरकतों का साधन है।

दुरूद के शब्दः—

कुछ साहबा (सतसंगियों) ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रश्न किया था कि हम हुज़ूर पर दुरूद किस प्रकार भेजें तो हुज़ूर ने उनको दुरूदे इबराहीमी की शिक्षा दी जो नमाज़ में पढ़ा जाता है और इस पुस्तक के दूसरे पाठ में नमाज़ के वर्णन में गुज़र भी चुका है। उसी के लगभग और उससे कुछ संक्षिप्त एक और दुरूद शरीफ़ भी हुज़ूर ने सिखाया है।
हदीस में उसके शब्द यह हैं।

अल्लाहुम्म+सल्लि+अला+मुहम्मदि निन्नबी यिल+उम्मी+वअज़वाजिही + उम्महातिलमूमिनी न + वज़ुर्रीयतिही + वअह+लि+बैतिही कमा+सल्लै + त+ अला+ आलि+इबराही+म+इन्न+क+हमीदुम्मजीद+

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ نِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَاَزْوَاجِهٖ اُمَّهَاتِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ
ذُرِّيَّتِهٖ وَاَهْلِ بَيْتِهٖ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى اٰلِ اِبْرٰهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ

हे मेरे अल्लाह नबीये उम्मी (वह नबी जिसने किसी से पढ़ा नहीं जिसने माता के पेट से ही ज्ञान, बोध और बुद्धि से परिपूर्ण जन्म लिया) हज़रत मुहम्मद सल्ललाहु अलैहि व सल्लम पर और आपकी पवित्र पत्नियों पर

जो मुसलमानों की माताएँ हैं और आपकी सन्तान पर और आप के घर वालों पर रहमतें भेजिये जैसे कि आपने रहमतें भेजीं हजरत इब्राहीम के घराने पर। आप प्रशंसनीय है और वैभव वाले हैं।

जब कभी हम हुज़ूर के शुभ नाम का उच्चारण करें और आपके सम्बन्ध में बोलें या दूसरे से सुनें तो आप पर दुरुद शरीफ़ अवश्य पढ़ना चाहिए और ऐसे अवसर के लिए "सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम" अथवा "अलैहिस्सलातु वस्सलाम" काफ़ी है।

दुरुदशरीफ़ जाप के रूप में:—

कुछ विशेष रुचि और साहस रखने वाले बन्दे तो प्रतिदिन कई कई हजार बार दुरूद शरीफ़ का जाप नित्य कर्म के रूप में करते हैं परन्तु हम जैसे साहसहीन यदि प्रातःकाल और सायंकाल प्रेम और आदर की भावना के साथ केवल सौ ही सौ बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लिया करें तो इनशा अल्लाह (खुदा ने चाहा तो) इतना कुछ पायेंगे और हुज़ूर सल्ललाहु अलै हि वसल्लम की दया दृष्टि उन पर ऐसी कुछ होगी कि इस दुनिया में उसका कोई अनुमान ही नहीं किया जा सकता। जो सज्जन संक्षिप्त दुरूद शरीफ़ पढ़ना चाहें वह यह संक्षिप्त दुरूद शरीफ कंठाग्र कर लें।

अल्लाहुम्म सलिलअला + मुहम्मदि निम्नबी यिल उम्मी वआलिही+

(ऐ खुदा नबी उम्मी हजरत मुहम्मद पर और उनके घर वालों पर रहमतें भेज)

बीसवां पाठ

तौबह व इसतिग़फ़ार (पापों से पश्चाताप और क्षमा की प्रार्थना)

अल्लाह तआला ने अपने नबियों और रसूलों को इसलिये भेजा और अपनी पुस्तकें इसलिये उतारीं कि मनुष्यों को अपना बुरा भला और पाप व पुण्य सब ज्ञात हो जाय और वह बुरी बातों और गुनाह (पाप) के कामों से बचें और नेकी और पुण्य के मार्ग पर चलकर अल्लाह की प्रसन्नता और मरने के पश्चात् वाले जीवन अर्थात् परलोक में मुक्ति प्राप्त कर सकें। तो जिन लोगों ने अल्लाह के नबियों, रसूलों और अल्लाह की उतारी हुई पुस्तकों को नहीं माना और ईमान नहीं लाए उनका मामला तो यह है कि उनका पूर्ण जीवन आज्ञा उल्लंघन और राजद्रोह का जीवन है और अल्लाह के उतारे हुए पथ प्रदर्शन से वह बिलकुल पृथक हैं अतः वह जब तक उसके भेजे हुए नबियों और रसूलों पर और उसकी उतारी हुई पुस्तकों पर और विशेष कर इस अन्तिम युग के अन्तिम पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम पर और उनकी लाई हुई ख़ुदा की अन्तिम पुस्तक पवित्र कुरआन पर ईमान न लाएं और उसके पथ प्रदर्शन को स्वीकार न करें वह अल्लाह की प्रसन्नता और मरने के पश्चात् वाले जीवन में सफलता और

मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकते क्योंकि अल्लाह का उसके नबियो का और उसकी पुस्तकों का इन्कार ऐसा अपराध नहीं जो क्षमा किया जाने योग्य हो। अल्लाह के प्रत्येक पैग़म्बर ने अपने अपने समय में इस बात की बहुत खुली हुई घोषणा की है। कुफ्र और शिर्क वालों को मुक्ति प्राप्त करने के लिये यह आवश्यक है कि वह सबसे पहले शिर्क तथा कुफ्र से तौबह (पश्चाताप) प्रकट करके क्षमा की प्रार्थना करें और ईमान तथा तौहीद (अल्लाह को एक मानना) को अपना सिद्धांत बनाए इसके बिना मुक्ति सम्भव नहीं। परन्तु जो लोग नबियों और रसूलों पर ईमान ले आते हैं और उनके पथ प्रदर्शन पर चलना स्वीकार करके चलने का प्रण कर लेते हैं वह भी कभी कभी शैतान (पिशाच) के बहकाने से या अपने मन की बुरी इच्छा से गुनाह के कार्य कर बैठते हैं। ऐसे सब पापियों के लिए अल्लाह तआला ने तौबह व इसतिग़फार के पट खुले हुए रखे हैं। तौबह व इसतिग़फ़ार से अभिप्राय यह है कि जब बन्दे से अल्लाह की आज्ञा उलंघन और पाप का कोई कार्य हो जाय तो वह इस पर लज्जित और दुखी हो और भविष्य में उस पाप से बचने का प्रण करें और अल्लाह से अपने किये हुए पाप के लिये क्षमा की प्रार्थना करें। पवित्र कुरआन और हदीस में बतलाया गया है कि बस इतना करने से अल्लाह उस बन्दे से राज़ी हो जाता है और उसका पाप क्षमा कर दिया जाता है।

याद रखना चाहिए कि तौबह केवल ज़बान से नहीं होती वरन् दिल से पाश्चाताप और दुख और उदासीनता का होना आवश्यक है और भविष्य में फिर कभी उस पाप के न करने का

अपनी ओर से प्रण होना भी आवश्यक है जिसकी पूर्ति की प्रार्थना भी अल्लाह से करनी चाहिए। तौबह का दृष्टान्त बिलकुल ऐसा ही है कि कोई आदमी क्रोध अथवा शोक की दशा में आत्महत्या की इच्छा से विष खा ले और जब उसके प्रभाव से आंतें कटनेलगे और बहुत कष्ट होने लगे तो उसे अपनी इस मूर्खता पर दुःख और और शोक हो और वह दवा के लिये पीड़ित हो ओर वैद्य, हकीम और डाक्टर जो औषधि बताए वही पिये उस समय उसके हृदय का निर्णय निश्चित रुप से यही होगा कि यदि मेरे प्राण अबकी बच गये तो भविष्य में कदापि ऐसा कर्म नहीं करूँगा ! बस पाप से तौबह करने वाले के हृदय की दशा भी ऐसी होनी चाहिये अर्थात अल्लाह तआला की अप्रसन्नता और परलोक के दण्ड को सोच कर उसको अपने पाप करने पर भली भांति शोक और दुःख हो। और भविष्य के लिये उस समय उसके हृदय का निर्णय यही हो कि अब कभी ऐसा नहीं करूँगा और जो हो चुका उसके लिये अल्लाह तआला से क्षमा प्रदान करने की प्रार्थना हो।

यदि अल्लाह तआला किसी मात्रा में यह बात प्रदान करें तो विश्वास रखना चाहिये कि पाप का प्रभाव बिलकुल मिट गया और अल्लाह की रहमत (दयालुता) का द्वार खुल गया। ऐसी तौबह के पश्चात पापी पाप के प्रभाव से पूर्ण रूप से पवित्र और स्वच्छ हो जाता है वरन् अल्लाह तआला को पहले से अधिक प्रिय हो जाता है और कभी कभी तो पाप के पश्चात सच्ची तौबह के द्वारा बन्दा उस श्रेणी पर पहुँच जाता है जिस पर सैकड़ों वर्ष की पूजा और तपस्या से भी पहुँचना कठिन होता है। यहां तक जो

कुछ लिखा गया यह सब आयतो और हदीसों की व्याख्या है अब कुछ आयतें और हदीसें भी तौबह व इस्तिग़फ़ार के सम्बन्ध में लिखी जाती हैं।

सूरए तहरीम में है:—

या + ऐमुहल्लजी + न + आ + मनू + तूबू इ लल्लाहि + तौब-तन्नसूहा + असा + रब्बुकुम + ऐंयुकफ़्फ़ + फ़ि + र + अनकुम + सैयि-आतिकुम + वयुद + ख़ि + लकुम + जन्नातिन + तजरीमिन + तहति-हल अनहार (तहरीम रुकू: ३)

يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا تُوبُوا إِلَى اللَّهِ تَوْبَةً نَّصُوحًا عَسَىٰ رَبُّكُمْ أَن يُكَفِّرَ عَنكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَيُدْخِلَكُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ

हे ईमान वालो तौबह करो अल्लाह से सच्ची तौबह आशा है कि तुम्हारा स्वामी (इस तौबह के पश्चात्) मिटा देगा तुम्हारे पाप और दाखिल करेगा तुमको जन्नत के उन बाग़ीचों में जिनके नीचे नहरें बहती हैं।

और सूरए माइदह में पापी और अपराधी बन्दों के सम्बन्ध में फ़रमाया गया है :

अ + फ़ला + यतूबू + न + इलल्लाहि व + यस तग़फ़िरू + नहू वल्लाहु गफ़ू + र्रहीम (सुरए माइदह रुकू: १०)

أَفَلَا يَتُوبُونَ إِلَى اللَّهِ وَيَسْتَغْفِرُونَهُ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝

वह अल्लाह से तौबह क्यों नहीं करते और क्षमा क्यों नहीं मांगते और अल्लाह तो बड़ा क्षमा करने वाला करुणाशील है।

और सूरए, अनआम में कैसा प्यारा कथन है:—

वइज़ा जाअकल्लज़ी+न+यूमिनू+न+बिआयातिना फ़क़ुल+सलामुन+अलैकुम+कत+ब+रब्बुकुम अला+ नफ़+सिहिर्रह+मह+त+अन्नहू+मन+अ + म+ल+मिनकुम+सूअमबिजहा+लतिन+सुम्म+ता+ब+मिम+बादही+वअस+ल+ह+फइन्नहू+ग़फ़ूरुर्रहीम (सूरए अनआम रुकू: ६)

وَإِذَا جَآءَكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِآيٰتِنَا فَقُلْ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ كَتَبَ رَبُّكُمْ عَلٰى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ لا أَنَّهُ مَنْ عَمِلَ مِنْكُمْ سُوٓءًا بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابَ مِنْ بَعْدِهٖ وَأَصْلَحَ فَأَنَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝

और हे नबी जब तुम्हारी सेवा में उपस्थित हों हमारे वह बन्दे जो विश्वास रखते है हमारी आयतों पर तो तुम कहो उनसे सलाम हो तुम पर, तुम्हारे रब ने निश्चय किया है अपने आप पर दया करना—जो कोई तुम में से अपराध का कार्य करे भूल कर फिर तौबह करले उसके पश्चात और सुधार ले अपनी जीवन व्यवस्था तो अल्लाह क्षमा करने वाला बड़ा दयालु है।

अल्लाह तआला की दयालुता की शान पर प्राण बलिदान! उन्होंने क्षमा का द्वार खोल कर हम जैसे पापियों की समस्या सरल कर दी नहीं तो हमारा कहां ठिकाना था। इन आयतों के पश्चात् रसूलल्लाहि सल्लाहि अलैहि व सल्लम की कुछ हदीसें भी सुन लीजिए।

मुसलिम शरीफ़ में एक लम्बी हदीस क़ुदसी है उसका एक टुकड़ा

यह है :—

"अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि हे मेरे बन्दो तुम दिन रात अपराध करते हो और मैं समस्त पाप क्षमा कर सकता हूं अतः तुम मुझसे क्षमा और मुक्ति मागो मैं तुम्हें क्षमा कर दूंगा।"

एक हदीस में है कि:—

"अल्लाह तआला प्रत्येक रात्रि को अपनी दया और क्षमा का हाथ बढ़ाता है कि दिन के पापी तौबह कर लें और प्रत्येक दिन को हाथ बढाता है रात के गुनाह (पाप) करनेवाले तौबह कर लें और अल्लाह का यह व्यवहार उस समय तक जारी रहेगा जब तक कि क़ियामत के समीप सूर्य पश्चिम की ओर से उदय हो।

एक हदीस में है कि:—

"अल्लाह के एक बन्दे ने कोई पाप किया फिर अल्लाह के द्वार पर प्रार्थना की कि हे मेरे पालनहार मैंने अवगुण किया मुझे क्षमा प्रदान कर दीजिये तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि मेरा बन्दा जानता है कि उसका कोई रब है जो पापों पर पकड़ भी सकता है और क्षमा भी कर सकता है मैने अपने बन्दे का अपराध क्षमा कर दिया फिर जब तक अल्लाह ने चाहा वह पाप से रुका रहा और फिर किसी समय अपराध कर बैठा और फिर अल्लाह से प्रार्थना की मेरे स्वामी मुझसे पाप हो गया आप उसको क्षमा कर दीजिये तो अल्लाह तआला ने

फिर फ़रमाया मेरा बन्दा जानता है कि उसका कोई स्वामी है जो पाप क्षमा भी करता है और पकड़ भी सकता है मैंने अपने बन्दे का अपराध क्षमा कर दिया—फिर जब तक अल्लाह ने चाहा बन्दा रुका रहा और किसी समय फिर कोई पाप कर बैठा और फिर अल्लाह से प्रार्थना की हे मेरे प्रभु मुझ से और पाप हो गया आप मुझे क्षमा कर दीजिये तो अल्लाह ताआला ने फिर फ़रमाया कि मेरे बन्दे को विश्वास है कि उसका कोई प्रभु और स्वामी है जो पाप क्षमा भी करता है और दण्ड भी दे सकता है मैंने अपने बन्दे को क्षमा कर दिया वह जो चाहे करे"

एक हदीस में है:—

"गुनाह से तौबह करनेवाला बिलकुल उस आदमी की भाँति हो जाता है जिसने वह पाप किया ही न हो"

इन हदीसों में अल्लाह के क्षमा प्रदान करने की शान और उसकी दया का बयान है। ऐसी हदीसों को सुनकर पापों पर ढीट हो जाना अर्थात् तौबह और क्षमा के भरोसे पर पाप और अधिक करने लगना मोमिन का कर्तव्य नहीं है। क्षमा और दया की इन आयतों और हदीसों से तो अल्लाह के साथ प्रेम बढ़ना चाहिये और यह उपदेश लेना चाहिये कि ऐसे दयालु तथा करुणाशील स्वामी की आज्ञा उल्लंघन तो बड़ी ही नीचता है। ज़रा सोचो कि यदि किसी सेवक का स्वामी उसके साथ बहुत ही दया और उपकार का व्यवहार करे तो क्या उस सेवक को और भी अधिक शेर होकर उसकी आज्ञा उल्लंघन करना चाहिये?

वास्तव में इन आयतों और हदीसों का उद्देश्य तो केवल यह है कि किसी मोमिन बन्दे से यदि पाप हो जाय तो वह अल्लाह की दयालुता से निराश न हो वरन् तौबह करके उस पाप के धब्बे धो डाले और अल्लाह से क्षमा की प्रार्थना करे अल्लाह तआला अपनी दया से उसको क्षमा कर देंगे। और क्रोध और अप्रसन्नता के स्थान पर उससे और भी अधिक प्रसन्न होंगे।

एक हदीस में है:—

"बन्दा जब पाप करने के पश्चात अल्लाह तआला की ओर लौटता है और सच्चे दिलसे तौबह करता है तो अल्लाह तआला उसकी तौबह से उस आदमी की अपेक्षा कहीं अधिक प्रसन्न होता है जिसकी सवारी का पशु किसी लम्बे चौड़े मरुस्थल में उससे छूट कर भाग जाय और उसी पर उसके खाने पीने की सामग्री लदी हुई हो और वह अपने भागे हुए पशु से निराश होकर मृत्यु की राह देखता हुआ किसी वृक्ष के छाये में लेट जाय फिर उसी परिस्थिति में वह अचानक देखे कि उसका वह पशु पूर्ण सामग्री सहित सामने खड़ा है और वह उसके पकड़ ले और फिर बड़ी प्रसन्नता और असीम आनन्द में उसकी ज़बान से निकल जाय कि हे अल्लाह बस तू मेरा बन्दा और मैं तेरा रब हूँ[1] ? तो हुज़ूर फ़रमाते हैं कि जितनी प्रसन्नता उसको अपनी सवारी का पशु फिर से पाकर

१. अर्थ यह है कि उस बन्दे को इतनी अधिक प्रसन्नता हो कि हर्षोन्माद में उनकी ज़बान बहक जाय और जो बात कहना चाहेउसका उलटा निकल जाय।

होगी अल्लाह तआला को अपने पापी बन्दे की तौबह से उस से भी अधिक प्रसन्नता होती है।"

इन आयतों और हदीसों का बोध हो जाने के पश्चात् भी जो व्यक्ति पापों से तौबह करके अल्लाह की रज़ामन्दी और दया प्राप्त न करे वह निःसन्देह बड़ा ही अभागा है।

बहुत से लोग इस विचार से तौबह में शीघ्रता नहीं करते कि अभी क्या है अभी तो हमारी आयु कुछ अधिक नहीं है और अभी तो हम स्वस्थ हैं। मरने से पूर्व कभी तौबह कर लेंगे। भाइयो हमारे तुम्हारे शत्रु शैतान का यह बहुत बड़ा धोका है। वह जिस प्रकार स्वयं अल्लाह की दया से दूर और नर्क का पात्र हो गया उसी प्रकार हमको भी अपने साथ रखना चाहता है। किसी को ज्ञान नहीं कि उसकी मृत्यु कब आ पहुँचेगी अतः प्रत्येक दिवस को यही समझो कि सम्भव है आज ही का दिन हकारे जीवन का अन्तिम दिवस हो। अतः जब कोई अपराध हो जाय तो अति शीघ्र उससे तौबह कर लेना ही बुद्धिमानी हैं। पवित्र कुरआन में साफ़ साफ़ फ़रमा दिया गया हैं।

इन्नमत्तौ बतु+अल+ल्लाहि+लिल्लज़ी+न+यामलूनस्सूअ+बिजहालतिन+सुम्म+यतूबू+न + मिन +क़रीबिन+फ़उलाइ+क+यतूबुल्लाहु अलैहिम व+कानल्लाहु अलीमन हकीमा+वलैस-तित्तौ+बतुलिल्ल ज़ी+न + यामलूनस्सैयिआति+हत्ता इज़ा+ह+ज़+र+अ+ह+द+हुमुल+ मौतु+क़ा +ल इन्नी तुब+तुल आ+न+व+लल्लज़ी+न+यमूतू + न+वहुम कुफ्फ़ार+उलाइ

+क+आतदना लहुम+ अज़ाबन + अलीमा + (अन्निसा+अ+रुकूः ३)

إِنَّمَا التَّوْبَةُ عَلَى اللَّهِ لِلَّذِينَ يَعْمَلُونَ السُّوءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ يَتُوبُونَ مِن قَرِيبٍ فَأُولَٰئِكَ يَتُوبُ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ۝ وَلَيْسَتِ التَّوْبَةُ لِلَّذِينَ يَعْمَلُونَ السَّيِّئَاتِ حَتَّىٰ إِذَا حَضَرَ أَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ إِنِّي تُبْتُ الْآنَ وَلَا الَّذِينَ يَمُوتُونَ وَهُمْ كُفَّارٌ أُولَٰئِكَ أَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا

केवल उन लोगों की तौबह का स्वीकार करना अल्लाह ने कृपापूर्वक प्रमाणित किया है जो मूर्खता से पाप कर बैठते हैं और फिर शीघ्र ही तौबह कर लेते हैं तो उनको अल्लाह क्षमा करता है और उनकी तौबह स्वीकार करता है और अल्लाह सर्वज्ञानी तथा बुद्धि वाला है। और उन लोगों की कुछ तौबह नहीं जो ढिटाई से लगातार पाप के कार्य करते रहते हैं यहाँ तक कि जब उनमें से किसी के बिलकुल सामने मृत्यु आ जाती है तो वह कहता है कि अब मैंने तौबह की (तो ऐसों की तौबह स्वीकार नहीं) और न उनकी तौबह स्वीकार होगी जो कुफ़्र की दशा में मरते हैं। उन सबके लिये हमने तैयार किया है कठोर दण्ड।

जो साँस चलती है उसको हम दिग़ग़ समझें और तौबह करने में और अपना सुधार करने में बिलकुल देर न करें। मालूम नहीं मौत किस समय आ पहुँचे और उस समय हमको तौबह की तौफ़ीक़ भी मिले या न मिले।

भाइयो हमने और आपने अपनी अवस्था में सकड़ों को मरते देखा है और हमारा आपका सामान्य अनुभव भी यही है कि जो जिस दशा में जीवन व्यतीत करता है उसी दशा में उसकी मृत्यु भी होती है। अर्थात् ऐसा नहीं होता कि एक व्यक्ति जन्मभर तो अल्लाह को भूला हुआ रहे उसकी आज्ञाओं को ठुकराता रहे परन्तु मृत्यु से एक दो दिन पूर्व वह अचानक तौबह करके वली हो जाय अतः जो व्यक्ति चाहता है कि उसकी मृत्यु आज्ञाकारों, सज्जनों तथा भक्तों जैसी हो उसके लिये आवश्यक है कि वह अपना जीवन भी ऐसा व्यतीत करे। अल्लाह की दया से आशा है कि उसका अन्त अवश्य अच्छा होगा और क़ियामत में अच्छों के साथ उसका हिसाब होगा।

तौबह के सम्बन्ध में एक आवश्यक बात

बन्दा यदि किसी पाप से तौबह कर ले और फिर उससे वही पाप हो जाय तो भी अल्लाह को दया से कदापि निराश न हो वरन् पुनः तौबह कर ले और फिर टूटे तो फिर तौबह करले। इस प्रकार यदि सैंकड़ों सहस्त्रों बार भी उसकी तौबह टूटे तो भी निराश न हो जब भी वह सच्चे दिल से तौबह करेगा अल्लाह तआला का प्रण है कि वह उसकी तौबह स्वीकार करलेंगे और उसको क्षमा करते रहेंगे। अल्लाह तआला की रहमत और जन्नत का विस्तार असीम है।

तौबह व इसतिग़फ़ार के वाक्य

तौबह और इसतिग़फ़ार का जो वास्तविक परिचय ऊपर दिया

गया है यह तो आपने इसी से समझ लिया होगा कि बन्दा जिस भाषा में और जिन शब्दों में भी अल्लाह से तौबह करे और क्षमा याचना करे अल्लाह तआला उसका सुनने वाला और उसको स्वीकार करनेवाला है परन्तु रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने सहाबए किराम (श्रेष्ठ सतसंगियों) को तौबह व इसतिग़फ़ार के कुछ विशेष वाक्यों की भी शिक्षा दी थी और हुज़ूर उनको स्वयं भी पढ़ा करते थे। निःसंदेह वह वाक्य बहुत ही बरकत वाले और बहुत स्वीकार होने वाले और अल्लाह को अत्यन्त प्यारे हैं। उनमें से कुछ हम यहां भी अंकित करते हैं। आप इनको कंठाग्र कर लीजिये और इनके द्वारा तौबह व इसतिग़फ़ार किया कीजिये।

अस + तग़ + फ़िरुल्लाहल्लज़ी + ला + इल + ह + इल्ला + हुवल + हैयुल + कैयूमु वअतूबु इलैहि +

أَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الَّذِیْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ وَاَتُوْبُ اِلَیْهِ

मैं क्षमा और मुक्ति मांगता हूं उस अल्लाह से जिसके अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं वह सदैव जीवित रहनेवाला तथा सृष्टि को थामने वाला है और मैं तौबह करता हूं उसकी ओर।

पवित्र हदीस में है कि—

जो व्यक्ति अल्लाह से इस वाक्य के द्वारा तौबह व इसतिग़फ़ार करेगा अल्लाह तआला उसके पाप क्षमा कर देगा यद्यपि उसने जिहाद (धार्मिक युद्ध) के युद्ध क्षेत्र से भागने ही का अपराध किया हो। जो अल्लाह की

दृष्टि में बहुत बड़ा पाप है।

एक और हदीस में है कि:—

"जो व्यक्ति रात को सोते समय तीन बार इस वाक्य के द्वारा अल्लाह से तौबह व इसतिग़फ़ार करे तो अल्लाह तआला उसके सब पाप क्षमा कर देगा चाहे वह समुद्र के झाग के बराबर क्यों न हों।

(२)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कभी-कभी केवल अस तग़ फ़िरुल्लाह (मैं अल्लाह से क्षमा माँगता हूँ) अस तग़ फ़िरुल्लाह (मैं अल्लाह से क्षमा माँगता हूँ) भी पढ़ा करते थे। यह बहुत संक्षिप्त इसतिग़फ़ार है। इसको हर समय ज़बान पर जारी रहने की आदत डाल लेनी चाहिये।

पश्चाताप का वह वाक्य जो सर्व श्रेष्ठ है (सर्वश्रेष्ठ इसतिग़फ़ार)

हदीस शरीफ़ में है कि सय्यदुल इसतिग़फ़ार यह है:—

अल्लाहुम्म+अन+त+रब्बी+ला+इला+ह+इल्ला+अन+त+ख़लक़+तनी+व+अ+ना+अब+दु+क+व+अ+ना+अला+अह+दि+क+ववादि+क+मस+ततातु+अऊज़ु बि+क+मिन+शर्रि+मा+सनातु+अबूउ+ल+क+बिनी+मति+क+अलै+य+व अबूउ+बि ज़म्बी+फग़+फ़िर+ली इन्नहू+ला+यग़+फ़िरुज़्ज़ुनू+ब+इल्ला+अन+त

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّیْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ خَلَقْتَنِیْ وَاَنَا عَبْدُكَ وَاَنَا عَلٰی عَهْدِكَ
وَوَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ اَبُوْءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ
عَلَیَّ وَاَبُوْءُ بِذَنْبِیْ فَاغْفِرْلِیْ فَاِنَّهٗ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ

"हे अल्लाह तू मेरा पालनहार है। तेरे अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं। तूने मुझे पैदा किया है और मैं तेरा बन्दा हूँ और जहाँ तक मुझसे हो सका मैं तेरे प्रण और प्रतिज्ञा पर स्थिर हूं मैंने जो बुरे काम किये मैं उनकी बुराई से तेरी शरण का इच्छुक हूं मैं अपने ऊपर तेरे उपकारों को स्वीकार करता हूं और पापों का भी अंगीकार हूं अतः तू मुझे क्षमा कर दे। पापों को तेरे अतिरिक्त कोई क्षमा नहीं कर सकता।"

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया :—

"जो बन्दा इस वाक्य के द्वारा इसके विषय के ध्यान और विश्वास के साथ दिन में अल्लाह तआला से क्षमा माँगे और उस दिन वह रात के आरम्भ होने से पूर्व मर जाय तो जन्नत ही में जायगा और जो बन्दा इसी प्रकार इस वाक्य के विषय के ध्यान और विश्वास के साथ रात में इस वाक्य के द्वारा अपने पापों की क्षमा माँगे और प्रातःकाल होने से पूर्व उसी रात में मर जाय तो वह जन्नती होगा।

यहाँ इसतिग़फ़ार के केवल तीन वाक्यों का अनुकरण किया

गया जिनको कंठाग्र कर लेना कुछ भी कठिन नहीं है।

पवित्र हदीस में है कि:—

"शुभ समाचार हो और बधाई हो उस व्यक्ति को जिसके कर्मपत्र (आमालनामह) में इसतिग़फ़ार अधिकता के साथ अंकित हो।"

एक दूसरी हदीस में है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाया:—

"जो बन्दा इसतिग़फ़ार को अंगीकार कर ले (अर्थात् अल्लाह तआला से अपने गुनाहों की नित्य क्षमा मांगता रहे) उसको अल्लाह तआला हर मुश्किल से नजात देंगे और उसकी हर परेशानी तथा चिन्ता को दूर फ़रमाएंगे औरउसको (अपने गैब के भण्डार से) इस प्रकार रोज़ी देंगे जिस का स्वयं ख्वाब ख्याल न होगा।"

ख़ातिमह (अन्तिम शब्द)

अल्लाह की प्रसन्नता और जन्नत [बैकुण्ठ] प्राप्त करने का सामान्य पाठ्यक्रम

इस छोटी सी पुस्तिका के बीस पाठों में जो कुछ आ गया है उसके अनुसार जीवन व्यतीत करना अल्लाह की प्रसन्नता और जन्नत प्राप्त करने के लिए इनशा अल्लाह बिल्कुल काफ़ी है। अन्त में उचित जान पड़ता है कि थोड़ी ही सी पंक्तियों में उसका सारांश और तत्व प्रस्तुत कर दिया जाय।

इस्लाम की सर्व प्रथम शिक्षा और अल्लाह की प्रसन्नता और जन्नत प्राप्त होने की पहली शर्त यह है कि कलिमए ल+इला+ह+इ+इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाहि । पर आदमी ईमान लए अर्थात विश्वास को दृढ़ करे जिसका विस्तृत वर्णन प्रथम पाठ में किया जा चुका है) फिर आवश्यकतानुसार धर्म के निर्देश जानने और सीखने की चिन्ता करे फिर प्रयत्न करें कि अल्लाह के 'फ़राइज़' (अनिवार्य कार्य) और बन्दों के अधिकार और शिष्टाचार और स्वभाव के बारे में इसलाम की जो शिक्षाएं और अल्लाह तआला के जो आदेश हैं (जिनका विस्तार पिछले पाठों में किया जा चुका है) उनका आज्ञा पालन हो और जब कभी कोई आज्ञा उल्लंघन और त्रुटि हो जाय तो सच्चे दिल से अल्लाह से तौबह करे और क्षमा माँगे और भविष्य के लिये अपने सुधार का प्रयत्न करे और यदि

किसी बन्दे के प्रति अपराध हो जाय और उस पर कोई अत्याचार हो जाय तो उससे क्षमा माँगे अथवा उसका बदला देकर हिसाब चुकता करे।

इसी प्रकार प्रयत्न करे कि दुनिया की प्रत्येक वस्तु की अपेक्षा अधिक हम अल्लाह का अल्लाह के रसूल का और उसके दीन का हो और हर परिस्थिति में पूर्ण दृढ़ता के साथ दीन पर स्थिर रहे और दीन की ओर आमन्त्रित करने और दीन की सेवा करने में अवश्य कुछ समय लगाये। यह बहुत बड़ी भाग्यशीलता और पैगाम्बरों की विशेष सम्पत्ति है और विशेष कर इस युग में इसका मूल्य अन्य पुण्य के कार्यों से उच्चतर है और इसके प्रभाव से स्वयं अपना सम्बन्ध भी दीन से और अल्लाह व रसूल से बढ़ता है।

पुण्य के कार्यों में यदि कोई विशेष अड़चन न हो तो तहज्जुद की नमाज की आदत डालने का प्रयत्न करे (तहज्जुद की नमाज़ आधी रात के पश्चात से प्रातःकाल के उदय तक दो से बारह रकात तक पढ़ी जाती है) तहज्जुद की बरकतें असंख्य और असीम हैं।

समस्त पापों से और विशेषकर "महापापों" से बचता रहे। (बड़े पापों को कबीरह गुनाह कहते हैं) जैसे व्यभिचार, चोरी, झूठ, मदिरा पान व्यवहार में बेईमानी आदि।

प्रतिदिन का कुछ जिक्र भी नियुक्त करलें यदि अधिक समय न मिलता हो तो कम से कम इतना ही करे कि प्रातःकाल और सायंकाल सौ-सौ बार कलिमए तमजीद

सुब+हानल्लाह+वल+हम्दु+लिल्लाह+वला+इला+ह+

इल्लल्लाहु + वल्लाहु + अक + बर

अथवा केवल सुब हा नल्लाहि व बिहम दिही पढ़ लिया करें।

और इसतिग़फ़ार[१] और दुरूद शरीफ़[२] सौ-सौ बार पढ़ लिया करें।

कुछ पवित्र कुरआन का पाठ भी प्रति दिन के लिये नियुक्त करलें और पूरे शिष्टाचार और अल्लाह की बड़ाई को ध्यान में रख कर पाठ किया करें। प्रत्येक फ़र्ज़ (अनिवार्य) नमाज़ के पश्चात और सोते समय फ़ातिमह की तसबीह[३] पढ़ा करें।

जो लोग इससे अधिक करना चाहें वह अल्लाह के किसी ऐसे भक्त से सुझाव प्राप्त करलें जो इसका योग्य हो—और अन्तिम बात इस सम्बन्ध में यह है कि अल्लाह के "सालेह" प्रिय तथा सज्जन बन्दों से सम्बन्ध तथा प्रेम और उनका सत्संग इस मार्ग में पारस है यदि यह प्राप्त हो जाय तो शेष वस्तुयें आप से आप उत्पन्न हो जाती हैं। अल्लाह तौफ़ीक़ दे (सहायता करे)

पतिंगों से सत्संग कर। सम्भव है कि तू जलना सीख ले और जले हुवों के साथ हो जाने से सम्भव है कि तू भी जलने लगे।

१. अस + तग़ + फ़िरुल्लाहल्लज़ी + ला + इला + ह + इल्ला + हुवल + हैयुल + कैयूमु + व + अतूबु + इलैह + अथवा केवल अस + तग़ + फ़िरुल्लाह

२. अल्ल + हुम्म + सल्लि अला + सैयिदना + मुहम्मदे + निन + नबी + यिल + उम्मी + व + आलिही

३. तसबीहे फ़ातिमह:—सुबहानल्लाह ३३ बार, अलहम्दुलिल्लाह ३३ बार, अल्लाहु अकबर ६४ बार।

नित्य जाप योग्य

पवित्र कुरआन और हदीस के चालीस मंत्र

यह वही चालीस प्रार्थनाएं हैं जिनका संकेत अट्ठारहवें पाठ के अन्त में किया गया है।

बिस मिल्ला हिर रह मानिर रहीम

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

आरम्भ अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त दयालु और बड़ा करुणाशील है :

(१)

अल हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आ लमीन अर रह मानिर रहीम मालिकि यौमिद्दीन ईय्या क नाबुदु व ईय्या क नसतईन इह दिनस्सिरा तल मुस तकी म सिरा तल्लज़ी न अन अम त अलैहिम ग़ैरिल मग़ ज़ूबि अलैहिम वलज़ ज़ाल लीन—(आमीन)।

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ ۙ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۙ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ؕ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ؕ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۙ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ ۬ۙ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَ لَا الضَّآلِّیۡنَ ○ اٰمین

समस्त प्रशंसाएं अल्लाह ही के लिये हैं—जो समस्त संसार

का रब (पालनहार) है। बहुत रहमतवाला और बड़ा करुणाशील है। कियामत के दिन का स्वामी है। हे अल्लाह, हम आप ही की पूजा करते हैं और केवल आपसे ही सहायता चाहते हैं। आप हमको सीधे मार्ग पर चलाइये। उन लोगों का मार्ग जिनको आपने पारितोषिक प्रदान किये। उनका नहीं, जिन पर आप का क्रोध हुआ। न उनका जो मार्ग से बहक गये। हे प्रभु! हमारी यह प्रार्थना स्वीकार कर लीजिये।

(२)

रब्बना आतिना फ़िद्दुन+या+ह+स+न तौं + वफ़िल+आखि़ रति+ह+स+न तौं व क़िना अज़ा बन्नार।

رَبَّنَآ اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَةً وَّ فِی الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ

हे हमारे पालनहार! हमको दुनिया में भी भलाई दीजिये और परलोक में भी भलाई प्रदान कीजिये और नर्क के दंड से हमको बचाइये।

(३)

रब्बना+इन्नना आमन्ना+फ़ग़+फ़िर+लना+ज़ुनू+बना+व+क़िना+अज़ा+बन्नार।

رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَ قِنَا عَذَابَ النَّارِ

हे प्रभु, हमने दृढ़ विश्वास धारण किया, अतएव आप

हमारे समस्त पाप क्षमा कर दे और नर्क के दंड से हमको बचाइये।

(४)

रब्ब नग फ़िर लना जुनू + बना + वइस + रा + फ़ना + फ़ी अम + रिना + व + सब्बित + अक़ + दा + मना + वन + सुर + ना + अलल + कौमिल + काफ़िरीन।

رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَإِسْرَافَنَا فِيْ أَمْرِنَا وَثَبِّتْ أَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ

हे हमारे पालनहार ! हमारे पाप क्षमा कर दीजिये और हम से हमारे कार्यों में जो अशुद्धियां और जो अत्याचार हो गये उनको क्षमा कर दीजिये और सत्य पर हमारे पग स्थिर कर दीजिये और कुफ्र करने वालों के मुकाबिले में हमारी सहायता कीजिये।

(५)

रब्बना + इन्नना + समिना + मुना + दियँ + युनादी लिल + ईमानि अन + आमिनू + बिरब्बिकुम + फ़आमन्ना + रब्बना + फ़ग़फ़िर + लना + जुनू + बना + व + कफ़्फ़िर + अन्ना + सैयिआतिना + व + तवफ़्फ़ना + मअल अब + रार + रब्बना + वआतिना + मा + वअत्तना अला + रुसुलि + क + वला तुख + ज़िना + योमल + क़ियामह + इन्न + क + ला + तुख + लिफ़ुल मीआद +

رَبَّنَا إِنَّنَا سَمِعْنَا مُنَادِيًا يُّنَادِيْ لِلْإِيْمَانِ أَنْ اٰمِنُوْا بِرَبِّكُمْ فَاٰمَنَّا ۖ رَبَّنَا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَكَفِّرْ عَنَّا سَيِّاٰتِنَا وَتَوَفَّنَا مَعَ الْأَبْرَارِ ۝ رَبَّنَا وَاٰتِنَا مَا وَعَدْتَّنَا عَلٰى رُسُلِكَ وَلَا تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۗ إِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ

हे हमारे रब! हमने एक पुकारने वाले को ईमान का बुलावा देते हुए सुना (कि लोगो अपने पालनहार पर ईमान लाओ) तो हम इमान ले आए अतः हे हमारे पालनहार हमारे पाप क्षमा कर दीजिये और हमारे अवगुण मिटा दीजिये और अपने सच्चे भक्तों के साथ हमारा अन्त कीजिये। प्रभु ! हमको वह सब कुछ प्रदान कीजिए जिसका अपने पैग़म्बरों द्वारा आपने वचन दिया और क़ियामत के दिन हमको अपमानित न कीजिये। आपके वचन के प्रतिकूल नहीं होता।

(६)

रब्बना+ज़लम+ना अन + फ़ु + सना + वइल्लम+तग़+ फ़िर + लना + व+तर + हम +ना+ल+न+कूनन्न+मिनल ख़ासिरीन+

رَبَّنَا ظَلَمْنَآ أَنفُسَنَا وَإِن لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُونَنَّ مِنَ الْخَٰسِرِينَ

हे हमारे पालनहार आपकी आज्ञा उल्लघन करके हमने अपने ही ऊपर बड़ा अत्याचार किया है यदि आपने हमको क्षमा न किया तो हम असफल और नष्ट ही हो जायँगे ।

(७)

रब्बना + ला + तजअल + ना +फ़ित+नतल+लिल+ क़ौमिज्ज़लालिमीन + व + नज्जिना + बि+रह+मति+क+ मिनल+क़ौमिल काफ़िरीन+

رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝ وَنَجِّنَا بِرَحْمَتِكَ مِنَ الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ

हे हमारे रब (पालनहार) आप हमको अत्याचारी जाति के अत्याचार और अन्याय का अभ्यास पट्ट न बनाइये और अपनी दयालुता की भिक्षा समझकर हमको काफिरों की जाति के अत्याचार से मुक्त कीजिये।

(८)

फ़ाति+रस्समावाति+वल+अर्ज़ि अन+त+वलीयी फ़िद्दु-नया वल आ ख़िरति तवफ़्फ़नी + मुसलिमों व + अल+ हिक़नी +बिस्सालिहीन

فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اَنْتَ وَلِیّٖ فِی الدُّنْیَا وَالْاٰخِرَةِ تَوَفَّنِیْ مُسْلِمًا وَّاَلْحِقْنِیْ بِالصّٰلِحِیْنَ ۝

हे पृथ्वी तथा आकाश के रचनेवाले! दुनिया और आख़िरत (परलोक) में केवल आप ही मेरे नाथ हैं इस्लाम पर मेरा अन्त कीजिये और अपने सच्चे भक्तों के साथ मुझको सम्मिलित कर लीजिये।

(९)

रब्बिज+अल+नी+मुक़ी मस्सलाति व+मिन +ज़ुर्री+यती रब्बना+व+तक़ब्बल दुआइ + रब्बनग़ +फ़िरली+वलि+वालि दै+य+वलिल+मूमिनी+न+यौ+म+यकूमुल +हिसाब+

رَبِّ اجْعَلْنِيْ مُقِيْمَ الصَّلٰوةِ وَمِنْ ذُرِّيَّتِيْ رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَآءِ ۝ رَبَّنَا اغْفِرْلِيْ وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ يَوْمَ يَقُوْمُ الْحِسَابُ ۝

हे मेरे पालनहार मुझको और मेरी सन्तान को नमाज़ का स्थापित करनेवाला बना दीजिये। हे स्वामी ! हमारी प्रार्थना को स्वीकार कर लीजिये। मेरे प्रभु! मुझ को और मेरे माता पिता को और समस्त ईमानवालोंको क्षमा प्रदान कर दीजिये जिस दिन कि हिसाब किताब हो।

(१०)

रब्बिर+हम+हुमा+कमा+रब्ब+यानी+सग़ीरा

رَبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيٰنِيْ صَغِيْرًا

मेरे पालनहार ! मेरे माता पिता पर दया कीजिये जैसा कि उन्होंने मुझे प्यार से पाला जब कि मैं नन्हा सा था।

(११)

रब्बि+ज़िद+नी+इलमा

رَبِّ زِدْنِيْ عِلْمًا

मेरे पालनहार मेरे ज्ञान मे बृद्धि और बरकत प्रदान कीजिये।

(१२)

रब्बिग़फ़िर+वर+हम वअन+त+ख़ैरर्राहिमीन+

رَّبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَأَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ

हे मेरे पालनहार क्षमा प्रदान कीजिये और दया कीजिये आप सबसे अच्छे दया करने वाले हैं।

(१३)

रब्बि + औज़ेनी + अन + अश+कु+र+नेम+तकल्लती अन+अम+त+अलै+य+व अला + वालिदैइ+य+वअन अ+म+ल+सालिहन+तरज़ाहु+वअस+लिह+ली+ फ़ी+ज़ुर्रीयती इन्नी तुब्तु इलै+क+वइन्नी मिनल मुस+लिमीन +

رَبِّ أَوْزِعْنِيْٓ أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِيْٓ أَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلٰى وَالِدَيَّ وَأَنْ أَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضٰهُ وَأَصْلِحْ لِيْ فِيْ ذُرِّيَّتِيْ ۚ إِنِّيْ تُبْتُ إِلَيْكَ وَإِنِّيْ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ۝

हे मेरे पालनहार आपने मुझको और मेरे माता पिता को जो नेमतें प्रदान कीं मुझे वह भाग्यशीलता प्रदान कीजिये कि मैं उनके लिये आपका कृतज्ञ होकर आपको धन्यवाद दूं और ऐसे कर्म करूँ जिनसे आप प्रसन्न हों और मेरे प्रति मेरी सन्तान में भी योग्यता और नेकी दीजिये। मैंने आपके द्वार पर पाश्चात्ताप प्रकट किया और मैं आप के आज्ञाकारियों में हूं।

(१४)

रब्बनग+फ़िर+लनाव्लि इख+वा निनल्लज़ी + न+स+बक़ूना + बिल ईमानि वला+तजअल फ़ी क़ुलूबिना गिललल्लिलज़ी

+न+आ+मनू+रब्बना इन्न+क+रऊफ़ुर्रहीम

رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِإِخْوَانِنَا الَّذِينَ سَبَقُونَا بِالْإِيمَانِ وَلَا تَجْعَلْ
فِي قُلُوبِنَا غِلًّا لِلَّذِينَ آمَنُوا رَبَّنَا إِنَّكَ رَءُوفٌ رَحِيمٌ

हे हमारे पालनहार ! हमको क्षमा प्रदान कीजिये और हमारे उन भाइयों को भी मुक्त कीजिये जो ईमान सहित हमसे पूर्व आगे गये और स्वच्छ रखिये हमारे हृदय को ईमानवालों के प्रति ईर्षा से । हे नाथ आप बड़े दयालु और बड़े करुणा वाले हैं ।

(१५)

रब्बना+अत+मिम + लना+नू+रना+वग़+फ़िर+लना +इन्न+क+अला+कुल्लि शैइन क़दीर+

رَبَّنَا أَتْمِمْ لَنَا نُورَنَا وَاغْفِرْ لَنَا إِنَّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

हे पालनहार हमारे हेतु ज्योति की पूर्ति पूर्णरूप से कर दीजिये और हमको क्षमा प्रदान कीजिये । आप हर प्रकार की शक्ति रखनेवाले है ।

(१६)

या+ हैयु या कैयूमु बिरह मति + क+अस+तग़ीसु+अस+ लिह+ली+शानी+कुल्लह

يَا حَيُّ يَا قَيُّومُ بِرَحْمَتِكَ أَسْتَغِيثُ أَصْلِحْ لِي شَأْنِي كُلَّهُ

हे सदैव जीवित रहनेवाले और हे पूर्ण सृष्टि के थामने वाले ! आपकी दयालुता के द्वार पर मेरी बिनती है आप मेरी हर अवस्था सुधार दीजिये।

(१७)

अल्लाहुम्म+असलिह्+ली+दीनि यल्लज़ी+हुव इस्मतु अम्री +वअस+लिह्+ली+दुन+यायल्लती+फ़ी हा म+आशी+व+ अस+लिह्+ली+आख़ि+रतियल्लती+फ़ीहा+मआदी+वज अलिल हया+त+ज़िया+द+तनली फी कुल्लि ख़ैरिउ वज+ अलिल+मौ+त+रा+ह+तनली+मिन+कुल्लि शर्रि+

اَللّٰهُمَّ اَصْلِحْ لِیْ دِیْنِیَ الَّذِیْ هُوَ عِصْمَةُ اَمْرِیْ وَاَصْلِحْ لِیْ دُنْیَایَ الَّتِیْ
فِیْهَا مَعَاشِیْ وَاَصْلِحْ لِیْ آخِرَتِیَ الَّتِیْ فِیْهَا مَعَادِیْ وَاجْعَلِ الْحَیَاةَ
زِیَادَةً لِّیْ فِیْ کُلِّ خَیْرٍ وَّاجْعَلِ الْمَوْتَ رَاحَةً لِّیْ مِنْ کُلِّ شَرٍّ۔

हे अल्लाह ! मेरे दीन का सुधार कीजिये जिससे मेरा सब कुछ है। और मेरी दुनिया का सुधार कर दीकिये जिससे मेरे जीवन का ठाठ है और मेरी आख़िरत सवार दीजिये जहाँ मुझे लौट कर जाना है और जहाँ मुझे सदैव वास करना है और मेरे जीवन को प्रत्येक भलाई और गुण में बृद्धि का साधन बना दीजिये और मृत्यु को प्रत्येक बुराई और अवगुण से मुक्ति का साधन बना दीजिये।

[१८]

अल्लाहुम्म इन्नी+अस+अलु + कल+अफ.+व+वल+आ फ़ि.य+त+फ़ि.द्दुनया वल आख़ि.+रह+

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِی الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ

हे अल्लाह मैं आपसे पापों की क्षमा मांगता हूं और दुनिया और परलोक में शान्ति मांगता हूं।

[१६]

अल्लाहुम्म+इन्नी+असअलु कल+हुदा+वत्तुक़ा+वल अफ़ा फ़.+वल+ग़िना+

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ الْهُدٰی وَالتُّقٰی وَالْعَفَافَ وَالْغِنٰی

हे अल्लाह ! मैं आप से मांगता हूं पथ प्रदर्शन और पर-हेजगारी और लज्जा सम्बन्धी बातों से संरक्षण और निर्धनता से शरण।

[२०]

अल्लाहुम्म+इन्नी+असअलु+क+रिज़क़न+तय्यिबों+व+इलमन+नाफ़ि ओं+व+अ+म+लम+मु+त+क़ब्बला

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ عِلْمًا نَافِعًا وَّرِزْقًا طَيِّبًا وَّعَمَلًا مُّتَقَبَّلًا

हे अल्लाह ! मैं आप से मांगता हूं पवित्र जीविका और लाभदायक विद्या और स्वीकार होने योग्य कर्म।

[२१]

अल्लाहुम्मफ़+तह+लना + अबवा +ब+रह+मति+क+
व+सह+हिल्लना। अब+वा+ब+रिज़+क़ि+क

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ لَنَا اَبْوَابَ رَحْمَتِكَ وَسَهِّلْ لَنَا اَبْوَابَ رِزْقِكَ

हे अल्लाह ! हमारे लिये अपनी दयालुता के द्वार खोल दीजिये और हमारी जीविका के मार्ग हमारे लिये सरल कर दीजिये।

[२२]

अल्लाहुम्मक+फ़िनी + बि+हलालि+ क+अन+हरामि+
क+व+ अग़+निनी + बि+फ़ज़+लि +क+अम्मन+सिवा+
क+

اَللّٰهُمَّ اكْفِنِىْ بِحَلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ وَاَغْنِنِىْ بِفَضْلِكَ عَمَّنْ سِوَاكَ

हे अल्लाह ! अपनी वैध की हुई वस्तुओं को मेरे लिये पूर्ण कर दीजिये और हराम (अवैध) से मेरी रक्षा कीजिये और अपने अतिरिक्त आप मुझको हर एक से निःस्पृह कर दीजिये।

[२३]

अल्लाहुम्म+वफ़+फ़िक़+नी+लिमा+तुहिब्बु+व+ तर+
ज़+वजअल आख़ि+रती+ख़ैरम+मिनल+ऊला+

اَللّٰهُمَّ وَفِّقْنِىْ لِمَا تُحِبُّ وَتَرْضٰى وَاجْعَلْ اٰخِرَتِىْ خَيْرًا مِّنَ الْاُوْلٰى

अल्लाह! मुझको उन बातों की सामर्थ्य दीजिये जो आप को प्रिय और पसंद हैं और परलोक को मेरे लिये दुनिया की अपेक्षा अच्छा बनाइये।

[२४]

अल्लाहुम्म+अल+हिम+नी रुश+दी+व+क़िनी+शर+र+नफ़+सी

اَللّٰهُمَّ اَلْهِمْنِیْ رُشْدِیْ وَقِنِیْ شَرَّ نَفْسِیْ

हे अल्लाह! भलाई और शुद्ध जीवन की बातें मेरे दिल में डाल दीजिये और मन की लालसाओं से मुझे सुरक्षित कर दीजिये।

[२५]

अल्लाहुम्म+अ+इन्नी+अला+जिक+रि+क+व+शुक+रि+क+व+हुस+नि+इबा+दति+क+

اَللّٰهُمَّ اَعِنِّیْ عَلٰی ذِکْرِكَ وَشُکْرِكَ وَحُسْنِ عِبَادَتِكَ

हे अल्लाह! अपनी याद और कृतज्ञता और स्वच्छ और सुन्दर पूजा के सम्बन्ध में मेरी सहायता कीजिये और मुझको अपनी याद करने वाला और अपना कृतज्ञ और अपना अच्छा पुजारी और उपासक बना दीजिये।

[२६]

या+मुक़ल+लिबल+क़ु लुबि + सब्बित+क़ल+बी+अला+दीनि+क+

يَا مُقَلِّبَ الْقُلُوْبِ ثَبِّتْ قَلْبِيْ عَلٰى دِيْنِكَ

हे दिलों के फेरने वाले ! मेरे हृदय को अपने दीन (धर्म) पर दृढ़ता पूर्वक स्थिर रखिये ।

[२७]

अल्लाहुम्म + अह + यिनी + मुस + लि + मन + व + अमित + नी + मुस + लिमा +

اَللّٰهُمَّ اَحْيِنِيْ مُسْلِمًا وَّ اَمِتْنِيْ مُسْلِمًا

हे अल्लाह मुझे मुसलमान जीवित रखिये और इसलाम ही पर मेरी मृत्यु हो !

(२८)

अल्लाहुम्म + इन्नी + अस + अलु + क + हुब्ब + क + व + हुब्ब + मई + युहिब्बु + क + व + हुब्ब + अ + मलिन + युक़रिबु + इला + हुब्बि + क + अल्लाहुम्मज + अल + हुब्ब + क + अहब्ब + इलै + य + मिन + नफ़ + सी + वमिन + अहली + वमिनल + माइल + बारिद +

اللهم إني اسئلك حبك وحب من يحبك وحب عمل يقرب الى حبك

اللهم اجعل حبك احب الى من نفسى ومن اهلى ومن الماء البارد۔

हे अल्लाह! मुझको अपना प्रेम प्रदान कीजिये और आपके जो बन्दे आप से प्रेम रखते हैं उनका प्रेम प्रदान कीजिये और जो कर्म आपके प्रेम से मुझको समीप करें उनका प्रेम प्रदान कजिये । हे मेरे अल्लाह अपना प्रेम मुझको

अपने प्राणा से और अपने बाल बच्चों से और ठन्डेजल से और समस्त वस्तुओं से अधिक प्रिय कर दीजिये ।

[२९]

अल्लाहुम्म+ग़श+शिनी+बिरह+मति+क+व+जन्निब+नी+अजाबक+

اَللّٰهُمَّ غَشِّنِيْ بِرَحْمَتِكَ وَجَنِّبْنِيْ عَذَابَكَ

हे अल्लाह ! मुझको अपनी दया से ढक लीजिये और अपने दंड से सुरक्षित रखिये ।

[३०]

अल्लाहुम्म+सब्बित+क़ + द+ मैय्य+यौ+म+तज़िल्लु+फ़ीहिल+अक़दाम+

اَللّٰهُمَّ ثَبِّتْ قَدَمَيَّ يَوْمَ تَزِلُّ فِيْهِ الْاَقْدَامُ

हे मेरे अल्लाह जिस दिन लोगो के पांव डिगने लगें उस दिन आप मुझको स्थिर रखिये ।

[३१]

अल्लाहुम्म+हासिब+नी+हिसाबंयसीरा+

اَللّٰهُمَّ حَاسِبْنِيْ حِسَابًا يَّسِيْرًا

हे अल्लाह क़ियामत (प्रलय) के दिन मेरा हिसाब सहज हो ।

[३२]

रब्बिग़+फ़िर+ली+ख़तीअती+योमद्दीन+

رَبِّ اغْفِرْلِيْ خَطِيْئَتِيْ يَوْمَ الدِّيْنِ

हे अल्लाह क़ियामत (प्रलय) के दिन मेरे पाप क्षमा कर दीजिये।

[३३]

अल्लाहुम्म+क़िनी+अज़ा+ब+क+यौ+म+तब+असु+इबा+द+क+

اَللّٰهُمَّ قِنِيْ عَذَابَكَ يَوْمَ تَبْعَثُ عِبَادَكَ

ऐ अल्लाह ! हश्र के दिन मुझे अपने दराड से बचा लीजिये

[३४]

अल्लाहुम्म+इन्न+मग़+फ़ि+ र+त+क+औ+सउ मिन+ज़ुनूबी+व+रह+म+ त+क+अर्जा+इन्दी+मिन+अ+मली

اَللّٰهُمَّ اِنَّ مَغْفِرَتَكَ اَوْسَعُ مِنْ ذُنُوْبِيْ وَرَحْمَتُكَ اَرْجٰى عِنْدِيْ مِنْ عَمَلِيْ

हे अल्लाह ! आप की क्षमा मेरे पापों से बहुत ज्यादा विस्तृत है। और आपकी दया का आसरा मुझे अपने कर्मों की अपेक्षा अधिक है।

[३५]

अल्लाहुम्म + इन्नी + अस + अलु+क+रिज़ा+क+

वल + जन्न + त + व + अऊजुबि + क + मिन + ग़ + ज़बि + क + वन्नार +

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ رِضَاكَ وَالْجَنَّةَ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ غَضَبِكَ وَالنَّارِ

हे अल्लाह! मैं आपसे आपकी रज़ामन्दी और जन्नत (स्वर्ग) मांगता हूं और आपकी नाराजी और नर्क के दण्ड से आपकी शरण का भिखारी हूं।

[३६]

अल्लाहुम्म + इन्नी + अऊजु + बिरिज़ा + क + मिन + स + ख़ति + क + व + बि, मुआफ़ाति + क + मिन + उक़ू + बति + क + व + अऊजु + बि + क + मिन + क + ला + उह + सी + सनाअन + अलै: + क + अन + त + कमा + असनै + त + अला + नफ़ + सि + क +

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُ بِرِضَاكَ مِنْ سَخَطِكَ وَبِمُعَافَاتِكَ مِنْ عُقُوْبَتِكَ
وَاَعُوْذُبِكَ مِنْكَ لَآ اُحْصِيْ ثَنَآءً عَلَيْكَ اَنْتَ كَمَا اَثْنَيْتَ عَلٰى نَفْسِكَ

हे अल्लाह! मैं आपकी अप्रसन्नता से आपकी प्रसन्नता की शरणलेता हूं और आपके दण्ड से आपकी क्षमा की शरण में आता हूं और आपकी पकड़ से आप ही की शरण पकड़ता हूं। हे प्रभु! मैं आपकी प्रशंसा का वर्णन करने में असमर्थ हूं। आप वैसे हैं जैसा आपने स्वयं अपने बारे में व्याख्या की है।

[३७]

अल्लाहुम्म+फ़िर+ली + वर + हमनी+वतुब+अलैय्या+इन्न+क+अन्तत+तौवा+बुर+रहीम+

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِيْ وَارْحَمْنِيْ وَتُبْ عَلَيَّ اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ

हे मेरे अल्लाह ! मुझे क्षमा कर दीजिये मुझ पर दया कीजिये। मुझ पर कृपा कीजिये। आप बड़े ही कृपालु और अत्यन्त दयालु हैं।

[३८]

अल्लाहुम्म+अन+तरब्बी + लाइला+ह+इल्ला+अनत+खलक़+तनी+व+अ+न+अब+दु+क+व+अ+न+अला+अह+दि+क+व+वादि+क+मस+ततातु+अऊज़ु+बि+क+मिन+शर्रि+मासनातु+अबूउ+ल+क+ बिनीमति+क+अलैय व अबूउ बिज़म्बी + फ़ग़फ़िरली जुनूबी+ इन्नहू+ला+यग़+फ़िरुज्ज़ु+नूब+इल्ला+अन+त+

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ خَلَقْتَنِيْ وَاَنَا عَبْدُكَ وَاَنَا عَلٰى عَهْدِكَ وَوَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ اَبُوْءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَيَّ وَاَبُوْءُ بِذَنْبِيْ فَاغْفِرْلِيْ فَاِنَّهٗ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ۔

हे अल्लाह ! आप ही मेरे पालनहार हैं। आपके अतिरिक्त कोई स्वामी नहीं। आप ही ने मुझको पैदा

किया और मैं आप ही का दास हूं और जहाँ तक मुझसे बन पड़ा आपके साथ प्रण और प्रतिज्ञा पर मैं स्थिर रहा। मेरे प्रभु मैं अपने बुरे करतूतों से आपकी शरण में आता हूं और मैं स्वीकार करता हूं आपकी देन का और अंगीकार हूं अपने पापों का। हे मेरे अल्लाह। मेरे पाप क्षमा कर दीजिये। पापों को क्षमा करने वाला आप के अतिरिक्त कोई नहीं।

[३९]

अल्लाहुम+ इन्नी+अऊज़ु+ बि+क+ मिन+शर्रि+सम+ई+वमिन+शर्रि+ बसरी+ वमिन+शर्रि +लिसानी वमिन+ शर्रि+क़ल+बी+ वमिन+ शर्रि+मनीयि+वअऊज़ु बि+क+ मिन+अज़ाबि+जहन्न+म +वमिन अज़ाबिल+क़ब+रि+वमिन +फ़ित+नतिल+ मसीहिद्दज्जालि+ वअऊज़ुबि +क+मिन+ फ़ित+नतिल+मह+या+वल+ममात+

اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ سَمْعِيْ وَمِنْ شَرِّ بَصَرِيْ وَمِنْ شَرِّ لِسَانِيْ وَمِنْ شَرِّ قَلْبِيْ وَمِنْ شَرِّ مَنِيِّيْ ــــ وَأَعُوْذُبِكَ مِنْ عَذَابِ جَهَنَّمَ وَمِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَمِنْ فِتْنَةِ الْمَسِيْحِ الدَّجَّالِ وَأَعُوْذُبِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ-

हे अल्लाह! मैं आप की शरण का भिखारी हूँ अपने कानों की बुराई से, अपनी दृष्टि की बुराई से अपनी ज़बान की

बुराई से, अपने हृदय की बुराई से और अपनी कामुकता की बुराई से और मैं आपकी शरण चाहता हूँ नर्क के दण्ड से और क़ब्र के दण्ड से और दज्जाल[†] के उपद्रव से और आप की शरण लेता हूँ जीवन और मत्यु के समस्त उपद्रवों से।

(४०)

अल्लाहुम्म+इन्नी+ असअलु+क+मिन+खैरि+मा स+अ+ल+क+मिनहु+नबीयु+क+मुहम्मदुन+सल्लल्लाहु+ अलैहि+व सल्लम+ वअऊज़ बि+क+मिन शर्रि+मस्तआ+ज़+मिन+हु+नबीयु+क+मुहम्मदुन सल्लल्लाहु+अलैहि+वसल्लम

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ مِنْ خَيْرِ مَا سَأَلَكَ مِنْهُ نَبِيُّكَ مُحَمَّدٌ (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم)
وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا اسْتَعَاذَ مِنْهُ نَبِيُّكَ مُحَمَّدٌ (صلی اللہ علیہ وسلم)

हे अल्लाह ! मैं आप से वह सब भलाइयां मांगता हूँ जो आप से आप के नबी मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने मांगी और मैं उन बुराइयों से आपकी शरण मांगता हूं जिनसे आपके नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने शरण मांगी।

(४१)

अल्लाहुम्म + सल्लि+ अला+ मुहम्मदिउ+ व+ अला+

[†] क़ियामत के निकट समय एक दुष्ट अत्याचारी मार्ग से बहकाने वाला प्रकट होगा वही दज्जाल होगा।

आलि+मुहम्मदिन+कमा+ सल्लै+त+अला+इबराही+म+व+अला+आलि+इबराहीम+इन्न+क+हमीदुम+मजीद

अल्लाहुम्म+ बारिक+ अला+ मुहम्मदिउ+ व+ अला+ आलि+ मुहम्मदिन +कमा+ बारक+ त+अला +इबराही + म+व+ अला +आलि +इबराही +म+ इन्न+ क+ हमीदुम मजीद+

अल्लाहुम्म+अन +ज़िल+हुल+ मक़+ अदल+ मुक़र्र+ ब+इन्न+दक+यौमल+क़िया+मति+व+ अब+लिग़+हुल+ वसी+ ल+त+वद+द+र+ज+त+वब+अस्हु+ मुक़ामम+ महमूद+निल्लज़ी वअत्तहू+वर+ ज़ुक़ना+शफ़ाअ+तहू+यौमल +क़िया+मति+इन्न+क+ला+तुख़लिफ़ुल+मी+आद+

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ۔ اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ۔ اَللّٰهُمَّ اَنْزِلْهُ الْمَقْعَدَ الْمُقَرَّبَ عِنْدَكَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَاَبْلِغْهُ الْوَسِيْلَةَ وَالدَّرَجَةَ وَابْعَثْهُ مَقَامًا مَّحْمُوْدَا الَّذِىْ وَعَدْتَّهٗ وَارْزُقْنَا شَفَاعَتَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ۔

हे अल्लाह ! हज़रत मुहम्मद पर और उनकी सन्तान पर दया वृष्टि कीजिए जैसे कि आपने इब्राहीम पर और उनकी सन्तान पर दया वृष्टि की। हे अल्लाह हज़रत मुहम्मद और उनकी सन्तान पर अपनी बरकतों की वर्षा

कीजिए जैसे कि आप ने हज़रत इब्राहीम पर और उनकी सन्तान पर बरकतों की वर्षा की, आप ही प्रशंसनीय हैं। बड़ाई वाले हैं। हे अल्लाह क़ियामत के दिन अपनी विशेष समीपता के स्थान में उनका सत्कार कीजिये और उनको "वसीलह" और "दरजह" के उच्च पदों तक पहुँचाइये और उनको वह "महमूद" स्थान प्रदान कीजिये जिसका आपने उनके लिये वचन दिया है और हमको क़ियामत के दिन उनकी "शिफ़ाअत" (सुफ़ारिश) प्रदान कीजिये। आपकी प्रतिज्ञा कभी प्रतिकूल नहीं होती।

अल्लाह के जो बन्दे

इस पुस्तक से लाभ उठायें और कभी इन मन्त्रों और प्रार्थनाओं का पाठ करें उनसे इस पापी की बड़ी विनीत प्रार्थना है कि वह अन्त में यह शब्द भी कह दिया करें कि हे अल्लाह इस पुस्तक के लेखक मुहम्मद मंजूर नोमानी और उसके माता पिता और घरवालों के लिये और उसके उपकर्त्ताओं और मित्रों के हेतु क्षमा और दया का निर्णय कर दीजिये और यह सब प्रार्थनाएँ उनके प्रति भी स्वीकार कर लीजिये। आपका इस विनीत पर यह बहुत बड़ा उपकार होगा और अल्लाह तआला आपको इस उपकार का बहुत बड़ा प्रतिफल प्रदान करेगा और यह तुच्छ भी अल्लाह तआला से आपके लिये प्रार्थना करेगा।

विनीत और पापी दास
मुहम्मद मंजूर नोमानी
रजब १३६९ हिजरी

विशेष अवसरों की विशेष प्रार्थनाएं

(मन्त्र)

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बहुत सी प्रार्थनायें (दुआऐं) विशेष अवसरों के लिये सिखाई हैं। उनमें से कुछ जो सरल और प्रति दिन की हैं यहाँ भी अंकित की जाती हैं खुदा सामर्थ्य और साहस दे तो इनको याद कर लेना चाहिये और उचित अवसर पर पढ़ने की आदत डाल लेना चाहिये।

(१) जब सुबह (भोर) हो तो कहे प्रात: काल हो तो वही

अल्लाहुम्म+बि+क+ अस+बहना+व+बि+क+अमसैना +व +बि +क+ नहया+ वबि+क+ नमूतु+व+ इलैकल+ मसीर+

اَللّٰهُمَّ بِكَ اَصْبَحْنَا وَبِكَ اَمْسَيْنَا وَبِكَ نَحْيٰى وَبِكَ نَمُوْتُ وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ

हे अल्लाह आपकी आज्ञा से हमने भोर किया और आपकी आज्ञा से सन्ध्या की और हम आपकी आज्ञा से जीवित हैं आप की आज्ञा से मरेंगे और फिर आप ही की ओर लौट कर जाना है।

(२) इसी प्रकार जब सन्ध्या हो तो कहे।

अल्लाहुम्म+बि+क+अमसैना+व+बि+क+अस+ बहना

+व+बि+क +नह्या+व+ बि+क+ नमूतु+व+ इलैकन्नु-शूर+

اَللّٰهُمَّ بِكَ اَمْسَيْنَا وَبِكَ اَصْبَحْنَا وَبِكَ نَحْيٰى وَبِكَ نَمُوْتُ وَاِلَيْكَ النُّشُوْرُ

हे अल्लाह हमने आप ही की आज्ञा से सन्ध्या की, और आप ही की आज्ञा से भोर किया और हम आप ही की आज्ञा से जीवित हैं और आप ही की आज्ञा से हम मरेंगे और फिर आप ही की ओर उठकर जाना है।

(३) जब सोने के बिचार से बिछौने पर लेट जाय तो कहे।

अल्लाहुम्म+बिस्मि+क+आमूतु+व+अह्या+

اَللّٰهُمَّ بِاسْمِكَ اَمُوْتُ وَاَحْيٰى

हे अल्लाह मैं आपके शुभ नाम के साथ जीना और मरना चाहता हूँ।

(४) जब सोकर जागे तो कहे।

अल+हम्दु+लिल्लाहिल्लज़ी+अह+ यानी+बा+द+मा+अमा+तनी+व+इलैहिन्नुशूर+

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ اَحْيَانِىْ بَعْدَ مَا اَمَاتَنِىْ وَاِلَيْهِ النُّشُوْرُ

धन्य अल्लाह को जिसने मुझे मृत्यु के पश्चात् जीवित किया और उसी की ओर उठकर जाना है।

(५) जब शौचालय जाय तो कहे।

बिस्मिल्लाहि+अल्लाहुम्म+ इन्नी+अऊज़ु+बि+क+मिनल
-ख़ुबुसि+वल+ख़बाइस।

بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْخُبُثِ وَالْخَبَائِثِ

अल्लाह के नाम से हे अल्लाह ! मैं आपकी शरण लेता हूँ दुष्ट पुरुषों और स्त्रियों से।

(६) जब शौचालय से निकले तो कहे।

अल+हम्दु+लिल्लाहिल्लज़ी+अज़्+ह+ब+अन्निल+अज़ा
+व+आफ़ानी+

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَذْهَبَ عَنِّی الْاَذٰی وَعَافَانِیْ

धन्य है उस अल्लाह को जिसने दूर कर दी मुझसे गंदगी और मुझे शान्ति दी।

(७) फिर वज़ू करे तो आरम्भ में बिसमिल्लाह पढ़े और वज़ू के बीच में दुआ यह पढ़ता रहे।

अल्लाहुम्मग़+फ़िर्ली+ज़म्बी+ववस्सि+ली+फ़ी+ दारी+
व+बारिक+ली+फ़ी+रिज़क़ी+

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ ذَنْبِیْ وَوَسِّعْ لِیْ فِیْ دَارِیْ وَبَارِكْ لِیْ فِیْ رِزْقِیْ

हे अल्लाह मेरे पाप क्षमा कर दीजिये और मेरे लिये मेरे घर में विस्तार दीजिये और मेरी रोज़ी (जीविका) में बरकत (वृद्धि) दीजिये।

(८) जब वजू पूरा हो जाय तो कहे ।

अश+हदु+अल्ला+इला+ह+ इल्लल्लाहु+वह+दहू +ला +शरी+क+ लहू+व+अश+हदु +अन्न+मुहम्मदन+ अब+ दुहू+व+रसूलुहू+अल्ला-हुम्मज+अलनी + मिनत+तौवाबी+न वज+अल+नी मिनल+मु+त+तह+हि+रीन +

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ. اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِيْ مِنَ التَّوَّابِيْنَ وَاجْعَلْنِيْ مِنَ الْمُتَطَهِّرِيْنَ

मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं वह अकेला है उसका कोई साझी नहीं और मैं गवाही देता हूं कि हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) उसके बन्दे और उसके रसूल हैं। हे अल्लाह ! मुझको कर दीजिये तौबह करने वालों में से और पवित्र रहने वालों में से ।

(९) फिर जब मस्जिद जाय तो प्रवेश करते समय दाहिना पांव अन्दर रखे और कहे ।

रब्बिग्+फ़िर+ली+वफ़+तह+ली+अब+वा+ब+ रह+मति+क+

رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَافْتَحْ لِيْ أَبْوَابَ رَحْمَتِكَ

हे मेरे पालनहार मुझे क्षमा प्रदान कीजिये और मेरे लिये अपनी दया के द्वार खोल दीजिये ।

(१०) जब मस्जिद से निकले तो बायाँ पाँव बाहर निकाले और कहे।

रब्बिग़+फ़िर+ली+वफ़+तह+ली+अब+वा+ब+फ़ज़+लिक+

رَبِّ اغْفِرْلِيْ وَافْتَحْ لِيْ اَبْوَابَ فَضْلِكَ

हे मेरे पालनहार मुझे क्षमा प्रदान कीजिये और मेरे लिये अपनी देन और दया के द्वार खोल दीजिये।

(११) जब भोजन करना आरम्भ करे तो कहे।

बिस्मिल्लाहि+व+अला+ब+र+कतिल्लाह+

بِسْمِ اللّٰهِ وَعَلٰى بَرَكَةِ اللّٰهِ

आरम्भ करता हूं अल्लाह के शुभ नाम के साथ और उसकी दया के साथ।

(१२) जब भोजन करना समाप्त कर चुके तो कहे।

अल+हम्दु+ लिल्लाहिल्लज़ी +अतअमना+व+सक़ाना+व+जअलना+मिनल+मुस्लिमीन+

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ اَطْعَمَنَا وَسَقَانَا وَجَعَلَنَا مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ

धन्य है अल्लाह के लिये जिसने हमको खिलाया और पिलाया और हमको मुसलमानों में किया।

(१३) यदि किसी के घर पर निमन्त्रण का भोजन करे तो यह भी कहे।

अल्लाहुम्म + अतइम + मन + अतअ + मनी + वस्क़ि + मन + सक़ानी +

اَللّٰھُمَّ اَطْعِمْ مَنْ اَطْعَمَنِیْ وَاسْقِ مَنْ سَقَانِیْ

हे अल्लाह जिसने मुझको खिलाया आप उसको खिलाइये और जिसने मुझको पिलाया आप उसको पिलाइये।

(१४) जब सवारी पर सवार हो तो कहे।

अल + हम्दु + लिल्लाहि + सुब + हा + नल्लज़ी + सख़ + ख़ + र + लना + हाज़ा + वमा + कुन्ना + लहू + मुक़रि + नी + न + वइन्ना + इला + रब्बिन + लमुन + क़लिबून +

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ سُبْحَانَ الَّذِیْ سَخَّرَلَنَا ھٰذَا وَمَا کُنَّا لَہٗ مُقْرِنِیْنَ
وَاِنَّا اِلٰی رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ

अल्लाह के लिये धन्य है। पवित्र है वह जिसने सवारी को हमारे वश में कर दिया और हम स्वयं उसको अपने वश में नहीं कर सकते थे और एक दिन हम लौट कर अपने पालनहार के पास जाने वाले है।

(१५) और जब यात्रा पर निकले तो अल्लाह तआला से प्रार्थना करें।

अल्लाहुम्म + हव्विन + अलैना + हाज़स + स + फ़ + र + व + अत्रा + बू + दहू + अल्लाहुम्म + अन्तस्साहिबु + फ़िस्सफ़रि + वल + ख़लीफ़तु + फ़िल + अह + लि + अल्लाहुम्म + इन्नी + अऊज़ु + बि + क + मिन + वासाइस्सफ़रि + व + का + बतिल + मंज़रि + वसूइल +

मुम+क़लाब+फ़िल+मालि+ वल+अह+लि+वल+व+ल+दि+

اَللّٰهُمَّ هَوِّنْ عَلَيْنَا هٰذَا السَّفَرَ وَاطْوِعَنَّا بُعْدَهٗ. اَللّٰهُمَّ اَنْتَ الصَّاحِبُ فِى السَّفَرِ وَالْخَلِيْفَةُ فِى الْاَهْلِ. اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ وَعْثَاءِ السَّفَرِ وَكَآبَةِ الْمَنْظَرِ وَسُوْءِ الْمُنْقَلَبِ فِى الْمَالِ وَالْاَهْلِ وَالْوَلَدِ

हे अल्लाह हमारे लिये इस यात्रा को सरल कर दीजिये। और इसकी दूरी को समेट दीजिये। हे अल्लाह यात्रा में आप ही मेरे साथी हैं और मेरे पीछे आप ही मेरे घर वालों को देखने वाले हैं, हे अल्लाह ! मैं आपकी शरण लेता हूं यात्रा के कष्ट से और बुरी दशा देखने से और वापस लौट कर बुरी दशा में पाने से धन को, घर को और बच्चों को।

(१६) और जब यात्रा से लौटे तो कहे।

आइबू+न+ताइबू+न+आबिदू+न+ लिरब्बिना+हामिदून

آئِبُوْنَ تَائِبُوْنَ عَابِدُوْنَ لِرَبِّنَا حَامِدُوْنَ

हम यात्रा से आने वाले हैं। तौबह करने वाले हैं। इबादत (पूजा) करने वाले हैं। अपने पालनहार की। हम्द (खुदा की प्रशंसा) करने वाले हैं।

(१७) जब किसी दूसरे को विदा करें तो कहे।

अस्तोदिउल्ला+ह+दी+न+क+व+ अमा+न+त+क+
व+खवाती+म+अमलिक+क+

أَسْتَوْدِعُ اللّٰهَ دِيْنَكَ وَاَمَانَتَكَ وَخَوَاتِيْمَ عَمَلِكَ

सौंपता हु और तेरी रक्षा करने
योग्य वस्तुए और तेरे कार्यों के परिणाम।

(१८) जब किसी दुख के मारे हुए को देखे तो कहे।

अल+हम्दु+लिल्लाहिल्लज़ी+ आफ़नी+मिम्मब+तला+क
बिही+व+फ़ज्ज+लनी+अला+कसीरिम+मिम्मन+ख+ल+
क़+तफ़ज़ीला

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ عَافَانِىْ مِمَّا ابْتَلَاكَ بِهٖ وَفَضَّلَنِىْ عَلٰى
كَثِيْرٍ مِّمَّنْ خَلَقَ تَفْضِيْلًا

और धन्य है उस अल्लाह के लिये जिसने मुझे शान्ति में रखा है उस कष्ट से जिसमें तुझको पीणित किया है और अपनी बहुत सी सृष्टि पर उसने मुझको श्रेष्ठता प्रदान की है। (यह सब उसी की दया है इसमें मेरी कोई बड़ाई नहीं)।

(१९) जब किसी नगर में प्रवेश करे तो कहे।

अल्लाहुम्म+बारिक+लना+फ़ीहा+

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيْهَا

हे अल्लाह हमारे लिये इस नगर मे बरकत दीजिये और इसको हमारे लिये बरकत वाला बना दीजिये।

(२०) जब किसी सभा से उठे तो कहे।

सुब+हा+ नकल्लाहुम्म + वबिहम्मिद+क+ला+इला+ह इल्ला+अन+त+अस+तग़+फ़िरु+क+व अतू बु+इले+क

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ لَا إِلٰهَ إِلَّا أَنْتَ أَسْتَغْفِرُكَ وَأَتُوبُ إِلَيْكَ

हे अल्लाह मैं आपकी पवित्रता का वर्णन करता हूं और आपकी हम्द (प्रशंसा) करता हूं। आपके अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं। मैं आपसे क्षमा चाहता हूं और तौबह करता हूं।

"एक लाभदायक बात"

बहुत लोगों को अरबी दुआएं याद करना मुश्किल होता है। ऐसे लोगों को चाहिये कि हर समय दुआका आशय याद रखें और उस विशेष अवसर पर अपने शब्दों में और अपनी भाषा में उसी विषय को अदा करें। खुदा ने चाहा इससे भी दुआ की पूरी बरकत और पूरा सवाब उनको प्राप्त होगा।

—समाप्त—